स्वामी केशवानन्द

विराट व्यक्तित्व का संक्षिप्त परिचय

लेखक

डॉ० डी० सी० सारण

प्रवक्ता भूगोल विभाग

ग्रामोत्थान विद्यापीठ स्नातकोत्तर महाविद्यालय

संगरिया-63 श्रीगंगानगर

प्रकाशक

जयपाल एजेन्सीज दहतोरा आगरा-7

प्रथम संस्करण सितम्बर 1985

प्रकाशक
किशनसिंह फौजदार जयपाल एजेन्सीज दहतोरा आगरा-7

संयोजक—राजेन्द्रसिंह ढिल्लन, रणजीत कम्पोजिंग हाउस दहतोरा आगरा-7
मुद्रक—ब्रज प्रिंटर्स लोहामण्डी आगरा

प्रातः स्मरणीय स्वामी केशवानन्द जी महाराज

जिनकी चेतना ने राह दिखाई

* परम श्रद्धेय पिता स्व० श्री० जसूराम जी सारण

एवं

* ममता की साक्षात् मूर्ति माता श्रीमती रामीदेवी
  जिनसे देह रूपी साधन पाया
* मातृ तुल्य परम पूज्या डॉ० श्रीमती लक्ष्मी शुक्ला,
  जिनसे ज्ञानदान मिला
* परम सखा प्रो० के० आर० मोटसरा
  जो दुःख सुख के सहयोगी बने
* समाज सेवी श्रीयुत किशनसिंह जी फौजदार
  जिन्होने विचारों को आकार दिया
* स्वामी जी के अनन्य भक्त, श्रद्धालु और उनके बताये
  रास्ते पर अग्रसर समाज सेवियो के सम्मान में

सादर भेंट

विषय-सूची

प्रस्तावना

भारत मे जो महापुरुष हुए हैं उनके प्रति मेरी सदैव अपार श्रद्धा रही है। उन महापुरुषो मे से ही एक स्वामी केशवानन्द जी हैं जो भारत भूमि के शिक्षा सन्त स्वामी केशवानन्द, एक महाप्राण युग प्रवर्तक, युग द्रष्टा थे। वे एक महान् कर्मयोगी थे। उनका भौतिक शरीर पचभूतो मे विलीन हो गया है परन्तु उनका यश शरीर अजर और अमर है।

'वह मरता नही जिसकी खूबी हो बाकी, वह गायब नही जिसका हो जिकर हाजिर।''

स्वामी केशवानन्द समाज सुधार, शिक्षा प्रसार दलितोद्धारक, अछूतोद्धार, रूढि उन्मूलन, नारी कल्याण एव समाजोत्थान के कार्यक्रम मे सतत् निरत रहे। उन्होने नव-जागरण का शख फूंका एव ग्रामोत्थान का आन्दोलन चलाया। समाज उनका चिरऋणी एव कृतज्ञ है उन्होने एक आदर्श तपस्वी का तपोमय, निष्कलक जीवन जीया।

उनका ध्येय था, 'कार्य वा साधयामि, शरीर वा पातयामि" । अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक वे कार्यरत रहे। जीवन मे एव मरण मे, वे कबीर का यह कथन सार्थक कर गये —

'जो चादर सुर नर मुनि ओढी, ओढ के मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जतन तें ओढी, ज्यों की त्यों धरि दीनी चदरिया ॥

हजारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पर रोती है।
बडी मुश्किल से होता है, चमन, मे दीदावर पैदा ॥

वह उस कोटि के सन्त थे जिसकी सदैव यह कामना रही है

न त्वहम् कामये राज्यम् न स्वर्गम् न पुनर्भम्।
कामये दुःख तप्तानाम्, प्राणिनामार्तिनाशनम् ॥

अर्थात् न वह राज्य चाहते थे, न स्वर्ग सुख और न पुनर्जन्म प्राप्त करने की ही उनकी इच्छा थी। वे तो दुखी लोगो के कष्टो को दूर करने के लिए ही सदैव कामना करने के लिए ही सदैव कामना करने वाले महापुरुषो मे थे।

केशव तुम्हारा चरित स्वय ही काव्य है।
कोई कवि बन जाय सहज सभाव्य है॥
लेखनी धन्य होती है—

स्वामी जी ने केवल कामना ही नही की। इसके लिए आजन्म कठोर श्रम भी किया, कभी अपने लिए कुछ नहीं चाहा—चाहा यही कि लोगों का अज्ञान दूर हो जाए, वह सच्चे देश भक्त बने, कोई रोग शोक उन्हे नही व्यापे। यह भारत की नई पीढ़ी को सच्चरित, शिक्षित और देशभक्त बनाने क कार्य मे अकेले जुटे थे।

शहीदो की चिताओ पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मिटने वालो का यही बाकी निशा होगा ॥

डॉ० डी० सी० सारण ने नये तथ्यो और खोजो के आधार पर पुस्तक लिखकर थोडे समय में एक कमी को पूरा किया है। अत वे बधायो के पात्र हैं।

—डॉ० ज्ञानप्रकाश पिलानियां I P S

लेखकीय

युग पुरुष की अमर कहानी—

वह विराट व्यक्तित्व जो हिमालय के समान उच्च, सागर के समान गहरा, गगा के समान निर्मल आकाश के समान व्यापक, धरती के समान अचल और पहाड के समान स्थिर व अबाध्य था, मेरे क्षुद्र हाथों में थमी वह सूक्ष्म लेखनी आज उस विराट का सम्पूर्ण व्यक्तित्व बांध पाने मे असमर्थता सी महसूस कर रही है—

धरती सब कागद करू, लेखनी सब बनराय।
सात समुद्र स्याही करू, केशव गुण लिख्या न जाय॥

धन्य है यह धरती मरुभूमि, एव भारत माँ जिसकी कोख से केशव जैसे लाल उत्पन्न हुए।

जिस प्रकार सूर्य कभी नही बताता कि वह कौन है ? क्या है ? सागर कभी नहीं कहता, उसमे अक्षय रत्न भण्डार हैं और हीरा कभी नही बोलता कि उसका मोल क्या है उसी प्रकार युग पुरुष स्वामी केशवानन्द जी महाराज ने अपने जीवन के सम्बन्ध में कभी नही बतलाया न अपने बारे म स्वय लिखा और न लिखने की किसी को इजाजत दी। लेकिन वे एक ऐसे प्रकाश स्तम्भ बन गये थे जिनकी ओर जमाना ताकता रहता था। प्रस्तुत पुस्तक महापुरुष का सानिध्य प्राप्त करने वाले सौभाग्यशाली लोगों की आश्चर्य मिश्रित स्मृतियो स्वामी जी की रचनाओं के अवलोकन, सामयिक प्रकाशनो एव उनके कर्म स्थलो से मिली आलौकिक अनुभूतियों के आधार पर सामर्थ्यानुसार तैयार की गयी है।

अरब सागर की गहन गहराइयों से मुक्त हो मानव सभ्यता का पालना बनी और पुन प्राकृतिक अभिशाप से वेदों की स्वप्निल भूमि मरुधरा हो गयी। मरुधर मानि धूली कणो का महासमुद्र, जहाँ नमी विहीन धूल, महासागर की बनती बिगडती लहरों के मानिंद ऊबड खाबड दिलों का एक ऐसा साम्राज्य स्थापित कर देती है, जहाँ दूर दूर पानी और हरियाली का नामोनिशान नहीं होता। जल भरी घटाओ को भी मानो प्रकृति ने चुप चाप बिना बरसे निकल जाने का आदेश दिया हो। बूंद बूंद को तरसता प्राणी मात्र इस भयावह गम मरुस्थल मे नारकीय विपदाओं से साक्षात रहता है।

प्राकृतिक विपरीतताओं से बढ़कर मानव आततायियों ने मरुस्थल निवासियों को अभावों में जकड दिया। इस विकट जीवन सघर्ष में कभी मुस्लिम आक्रांताओं, कभी अंग्रेजों तो कभी अपनों ने समय-समय पर बाधायें खड़ी की।

ऐसे घोर कष्टप्रद, दर्द भरे वातावरण में बैथलहम की भांति इस क्षेत्र को

आशीर्वाद देने एक रोशनी, मगलूणा, जिला सीकर राजस्थान मे पौष सवत 1940 (सन् 1883) मे एक ढाका जाट परिवार मे उतरी। ठाकरसी ढाका के आँख का तारा, सारादेवी की कोख का फल बीरमा मरुस्थल का बरसने वाला मेघ और 90 वर्ष तक हीरे के समान चमकने वाली रोशनी बना।

सावला रग, सिर पर श्वेत छोटे-छोटे बाल, चवर के समान डोलती दाढी उन्नत ललाट पर उभरती सात स्पष्ट रेखायें, सीधी मध्यम आकृति की खडी नासिका स्वाभाविक मोड लिए मूँछें, मुस्कराता चेहरा कसा हुआ सीना, सुडौल बाहु मासल पुट्ठे, पुष्ट टाँगें, सधी हुई देह, भगवे रग का डेढ गज खद्दर का अधोवस्त्र लपटे ठाकरसी और सारादेवी का बीरमा चिन्तन के क्षणो मे सुकरात लगता। अपने कर्म स्थलो की रचनाओ को निहारते हुए गुरुदेव रवीन्द्र के दर्शन कराता कभी कबीर की अक्खडता झलकती तो कभी तुलसी का विवेक प्रस्फुटित होता। व्यक्ति अपनी गुत्थी सुलझाये इससे पहले स्वामी दयानन्द का तर्क और स्वामी विवेकानन्द का आत्मचिन्तन उनकी वाणी मे हिलोरें लेने लगता। इन सबसे आगे बुद्ध की अहिंसा, महर्षि दधीचि का त्याग साकार हो उठता। राष्ट्र भक्ति का आभूषण दिखाई देता, गाँधी और विनोबा का ग्रामोत्थान साक्षात होता। शरीर को उबाल देने वाली गर्मी और रोम-रोम को ठण्ड से जमा देने वाली सर्दी, की जीवन भट्टी से गुजरकर बीरमा कभी का इस्पात (स्वामी केशवानन्द) बन चुका था। गमलो मे उपजा फूल नही, बल्कि वह वृक्ष बन चुका था जो तूफानो के भयानक थपेडों, गर्मी-सर्दी की बे-हयाई और मानवीय क्रूरता झेलते हुए, पाताल के पानी से हरा-भरा रहकर प्रकाश पूँज की तरह असख्य जहाजो को भटकने से बचाते रहने की परम्परा सजीये हुए था।

बीरमा जी (स्वामी केशवानन्द जी) का बचपन घोर विषमता एव क्षण-क्षण सकटापन्न परिस्थितियो मे गुजरा। महा अकाल (सवत् 1956) जिसकी याद आज भी लोगो के रोगटे खडे कर देती है, जिसकी चपेट मे आकर लाखो करोडो प्राणी मनुष्य, पशु पक्षी, जंगली जानवर भूख से जूझते हुए कालकवलित हो गये थे, माताओ ने अपने बच्चो तक को छोड दिया था। चारो ओर त्राही-त्राही मची थी। अकाल की ऐसी विभिषिका का शिकार हुआ, माता-पिता की परवरिश से वचित बालक बीरमा खेजडी वृक्ष की छाल पशुओं का चारा खाकर पेट की क्षुदा बुझा, कडाके की सर्दी मे बाजरे के चावडो (भूसे) मे घुसकर रात बिताने वाला अनाथ बालक, यतीम खाने की शरण मे आकर जीवन बिताने वाला, शिक्षा के नाम पर जिसने स्कूल का दरवाजा नही देखा क्या कोई कल्पना कर सकता है कि माता-पिता से बिछुडा, बेसहारा, अनाथ, अनपढ बीरमा उसी मरुभूमि मे भारत विख्यात स्वामी केशवानन्द बनकर ज्ञानगगा के जरिये मरुमगल कर देगा।

यह कहानी है उस अमर सन्त की जो गर्दिशों मे पला, अक्षरज्ञ होते भी लाखों की शिक्षा का साधन बना। साधु के वेश मे कर्मयोगी रहा, आजादी की राह

में पड़ी बेड़ियों की कड़ियो पर लगातार प्रहार करता रहा, माँ भारती की आत्मीय भाषा (हिन्दी) को पुष्पित पल्लवित करता रहा और एक दिन देश की सर्वोच्च जनप्रतिनिधि सभा (ससद) का सदस्य पद दो बार सुशोभित किया। समाजोत्थान और सर्वोदय की कामना लिए जिया और कर्मयोग की मुद्रा मे ही अनन्त की ओर चला गया।

सुकरात की तरह यश का दान करने दानवीर युग पुरुष केशवानन्द अपने जीते जी किसो को अपनी महिमा का गुण गान करने की इजाजत नही दी। सहयोगियो एव अनुचरों ने हर समय कोशिशें की कि स्वामी जी से उनका प्रारम्भिक अतीत पूछा जावे लेकिन बडे मुश्किल से कुछ ही भाग्यशाली लोगों को वे क्षण नसीब हुए, जब स्वामी जी किसी दृश्य को देखकर अचानक भाव विभोर हो उठते और अतीत के कुछ संस्मरण सुनाने लगते। उनके समय म कोई भी व्यवस्थित जानकारी उनके सम्बन्ध मे प्रकाशित और प्रचारित नही को जा सकी। अत कोई उन्हे हरिजन, कोई कुम्हार तो कोई जाट कहता। इस सम्बन्ध मे किसान नेता चौ० कुम्भाराम आर्य ने स्वामी केशवानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ मे लिखा है कि "मैं स्वामी जी महाराज से उनके जन्म स्थल एव अन्य जानकारियाँ प्राप्त करने में बडे प्रयत्न किये, पर यह बात मैं उनसे नहीं निकलवा सका।' लेकिन इस सम्बन्ध मे श्री ब्रज नारायण कौशिक को आंशिक सफलतायें मिली और उन्होने स्वामी जी के साथ बीते पल पल का खाका विद्वतापूर्ण लिखने से अपनी पुस्तक शिक्षा सन्त स्वामी केशवानन्द मे उतारा।

स्वामी जी की 75 वीं वर्षगांठ पर उनकी महान् सेवाओ को चिरस्थाई बनाने के उद्देश्य से श्री मोहनलाल सुखाडिया, मुख्यमन्त्री राजस्थान सरकार ने 1958 मे बनारसीदास चतुर्वेदी स्व० डा० देशराज द्वारा सपादित स्वामी केशवानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया। यह मौका था स्वामी जी के बारे मे खोजपूर्ण इतिहास लिखने का, लेकिन स्वामी जी की इच्छाओ का सम्मान करते हुए अभिनन्दन ग्रन्थ का बडा भाग क्रातिकारियों को समर्पित कर दिया गया।

स्वामी जी के महाप्रयाण के बाद, सरदार शेरसिंह जी ने स्वामी जी पर खोज परक सामग्री सग्रहीत की। "सेवा श्रम और शिक्षा का एक अध्याय स्वामी केशवानन्द' नामक पुस्तक के बाद अन्धे कवि और गीतकार रामलाल पुशदिल के *प्रशस्ति गीत, स्वामी केशवानन्द स्मारिका आदि वे प्रयास हैं जिनके जरिये इस* विराट व्यक्तित्व के दर्शन जनमानस को करवाये गये। लेकिन इनका लाभ स्वामी जी के दायरे के लोगो तक सीमित रहा।

आवश्यकता इस बात की है कि न केवल 72 करोड भारत के नरनारी बल्कि ससार के कोने-कोने मे इस कर्मयोगी, त्यागमूर्ति-विश्वकर्मा केशव की मानव सेवा की सघर्षमयी गाथा को पहुंचाया जावे। प्रस्तुत पुस्तक इस ओर एक

छोटा सा प्रयास मात्र है। लेखक को उस युग चेता सन्त के साक्षात् दर्शन करने का सुयोग तो प्राप्त नहीं हुआ, लेकिन उनकी कर्मस्थली थार रेगिस्तान के बालूरेत के टीलों पर उनके द्वारा लिखे इतिहास ने उनकी महानता का अहसास करवाया। वर्षों उनके साथ रहे मानव सेवा यज्ञ के होतागण, उन्हें देवतुल्य मानने वाले ग्रामवासियों, महा प्रयाण के बाद उनके रचनात्मक आन्दोलन को चलाये रखने वाले उनके वास्तविक अनुयायियों, उन पर खोजपूर्ण प्रकाशन करने वाले बुद्धिजीवियों एवं अन्य प्रकार के लिखित और अलिखित साधनों के सहयोग से इस पुस्तक की रचना की गई है। लेखक उन सभी को हार्दिक धन्यवाद अर्पित करता है।

श्री किशनसिंह फौजदार इस योजना के सूत्रधार रहे हैं। उनकी समाज-सेवा की ललक को, लेखक ने स्वामी केशवानन्द स्मारक ट्रस्ट के चार आधार स्तम्भों सर्वश्री राम नारायण च्यानी, श्री यशवन्तसिंह श्री दूहो डॉ० ज्ञानप्रकाश पिलानियाँ एवं सरदार शेरसिंह जी के आर्शीवाद से पूरा करने का प्रयास किया है।

श्री एस० एम० चौधरी, श्री खेमचन्द चौधरी, -श्रीमती डॉ० लक्ष्मी शुक्ला, श्री सुन्दरसिंह, श्री ख्यालीराम भोमिया का कृपापूर्ण सहयोग मेरा सम्बल रहा।

लेखन के दौरान अत्यन्त गम्भीर व्यवधान उत्पन्न हुए लेकिन स्वामी जी की चेतना से कर्मयोग की यह धारा सतत् रही मेरे अभिन्न मित्र प्रो० के० आर० मोटसरा, प्रो० वी० के० तोमर प्रो० एस० पी० सिंह, प्रो० धासी राम, प्रो० ओ० पी० जांगू, श्री गोपीचन्द तेतरवाल, श्री चेतराम पवार, श्री रणजीतसिंह सहारण, श्री अजयसिंह जी इन्जीनियर, श्री चम्पालाल जी परिहार, डॉ० विजेन्द्रसिंह नरवार के सक्रिय सहयोग के अभाव मे यह कार्य असम्भव था।

प्रस्तावना लेखक, डॉ० ज्ञानप्रकाश पिलानियाँ निदेशक की विद्वता का मैं कायल रहा हूँ, उनके दो शब्दो ने मुझे अति उत्साह प्रदान किया।

मेरी धर्मपत्नी ओमवती सारण लेखन में पल पल की साथी रही है, वहीं मेरी पुत्री सूर्या अनामिका एवं सुपुत्र रवीन्द्र प्रतापसिंह का जिज्ञासा पूर्ण सहयोग मेरा सम्बल रहा।

• स्वामी केशवानन्द जी का जीवन क्रम, व्यक्तित्व, एवं कृतित्व उपलब्ध साहित्य, एवं जनस्मृति के आधार पर लिपि बद्ध किया गया है, तथापि लेखक यह दावा नहीं करता कि उस अमर सन्त के हर आयाम को पूर्णत: से छूता है अथवा सांगोपाग वर्णन है। इस सम्बन्ध मे पाठक निर्णायक हैं। तिथि क्रम व तथ्यान्वेषण की विसंगतियो की और ध्यान दिलाना विवेकशील, विद्वान एवं जिज्ञासु पाठकों का कर्त्तव्य है।

धन्यवाद

1 जून 1985
(स्व बहादुरसिंह जी भोमिया की पुण्य तिथि पर)
चौधरी भवन
शुशीलपुरा—सोडाला
अजमेर रोड जयपुर

स्वामी केशवानन्द जी का संक्षिप्त परिचय

1883 (पौष संवत 1940) ठाकरसी एवं सारादेवी से बीरमा (स्वामी जी का बचपन का नाम) उत्पन्न हुए। यह ढाका जाट परिवार ग्राम मगलूणा, राजस्थान में रहता था।

1888 मगलूणा (जिला सीकर) छोड़ अपने पिता के साथ रतनगढ़ शहर के माली मोहल्ले मे रहने लगे।

1890 पिता की मृत्यु के कारण रतनगढ़ छोड़कर अपने गाँव मगलूणा पहुँचे जहाँ गायें चराने लगे।

1891 गायें चराते समय भेड़ियो से प्रत्यक्ष होना।

1892 मगलूणा छोड़कर अपनी माताजी की मौसी के यहाँ हसासर, डामूसर (रतनगढ़) रह कर गायें चराने लगे।

1895-96 जड़सीसर घड़सीसर (सरदार शहर) मे गोचारण

1897 कलणियां (जिला गंगानगर) चारे पानी की तलाश मे पशुओं के साथ आ गये।

1898 अन्न के अभाव मे खेजड़ी की छाल पशुओं की खस और भरूट (घास) कांटों से निकले अन्नकणो को खाकर जिन्दा रहे।

1899 एक मात्र सहारा माता सारा [illegible] निधन के बाद अनजान रास्तो पर उत्तर की ओर निकले।

1899-1903 भटकाव और फिरोजपुर अनाथालय में हिन्दी, संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान प्राप्त किया।

1904 (सं० 1961) फाजिल्का मे उदासी साधु स्वामी कुशलदास जी का संस्कृत अध्ययन हेतु शिष्यत्वग्रहण किया।
इसी वर्ष स्वामी जी ने अखबार पढ़ना प्रारम्भ किया।

1905 प्रयाग कुम्भ मेले में महात्मा हीरानन्द जी अवधूत ने बीरमा [illegible] स्वामी केशवानन्द नाम रखा।

1906 वृन्दावन-मथुरा का भ्रमण

1907 तत्कालीन उत्तर पश्चिम प्रान्त, पंजाब, मुल्तान और सिन्ध का साधु वेश मे भ्रमण क्वेटा भी पहुँचे।

1908 गुरु गद्दी की प्राप्ती और मरुस्थल का भ्रमण

1909 लाहौर गये

1910 नोहर (श्री गंगानगर) में पं. शिवनारायण शास्त्री से वेदान्त दर्शन का अध्ययन।

1911 फाजिल्का साधु आश्रम मे वेदान्त पुष्पवाटिका नाम से पुस्तकालय की स्थापना ।

1912 फाजिल्का पजाब साधु आश्रम मे संस्कृत पाठशाला आरम्भ की ।

1913-1915 भावी योजनाओ हेतु लाहौर, अमृतसर, जालन्धर, दिल्ली, आगरा, श्रीनगर आदि मे पुस्तकालयो वाचनालयो सग्रहालयो, विश्वविद्यालयों आदि शिक्षा साधनो को गम्भीर शैक्षिक अध्ययन भ्रमण ।

1916 गुरु गद्दी का त्याग ।

1017 गाँव दाने वाले मे तिलक की 'गीता रहस्य' का अध्ययन ।

1918 अबोहर मे हिन्दी प्रचार प्रसार शिक्षा हेतु वातावरण तैयार किया ।

1919 दिल्ली के कांग्रेस अधिवेशन में पडित मदन मोहन मालवीय का भाषण सुना ।

1920 मुक्तसर पजाब मे सत्याग्रह एवं अबोहर मे नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना ।

1921-22 महात्मा गाधी द्वारा प्रारम्भ असहयोग आन्दोलन में भाग लिया । और दो वर्ष की कैद ।

1923 फाजिल्का पुस्तकालय की शाखा के रूप मे पुस्तकालय की स्थापना, अबोहर मे ।

—भारतीय साधु हृदय नामक पुस्तक प्रकाशित की ।

1924 साहित्य सदन अबोहर की स्थापना ।

—तुलसी जयति का आयोजन ।

1925-26 स्वामी जी की प्रेरणा से एव सहयोग से श्री गगानगर नवयुवक सार्वजनिक पुस्तकालय, एलनाबाद हरियाणा मे साहित्य सदन एव मुक्तसर (पजाब) मे हिन्दी प्रचार मण्डल की स्थापना ।

— आर्य समाज के अनेक जलसो मे भाग लिया ।

रामेश्वरम् मे डॉ० राजेन्द्र प्रसाद से, आनन्द भवन मे मोती लाल नेहरू से, श्री सुरेन्द्रनाथ बनर्जी श्री चितरजन दास से, मैथिली शरण गुप्त के घर चिरगाव एवं गाधी जी से साबरमती मे भेंट की । केशरी कार्यालय पूना गये ।

1927 साइमन कमीशन वापस जाओ में भाग लिया ।

—युवक समिति सिरसा गठित कर पुस्तकालय की स्थापना ।

1928 राजनैतिक कैदियो के लिए हिन्दी ज्ञान हेतु पुस्तकें भेजी ।

1929 15 मई 1929 को बिजली उर्दू साप्ताहिक अखबार की एक कतरन के अनुसार, स्वामी जी ने शपथ ली की साहित्य सदन का कर्जा अदा करने से पहले अबोहर एव साहित्य सदन मे पाँव नहीं रखेंगे ।

—2 फरवरी 1929 को साहित्य सदन अबोहर का उद्घाटन उत्सव ।

1930 स्वतन्त्रता आन्दोलन मे फिरोजपुर जिले के डिक्टेटर बने। पुन कैद। ...गाधी इर्विन समझोते के तहत् कैद मुक्त।

1931 अबोहर के गाँवो के लिए चलता फिरता पुस्तकालय योजना प्रारम्भ की।

1932 जाट स्कूल संगरिया के सचालक बने।
जाट स्कूल का जीर्णोद्धार।

1933 8 जनवरी 1933 का मण्डी डबवाली मे हिन्दू हितकारिणी सभा का गठन कर साहित्य सदन की स्थापना की।
—अबोहर से प्रसिद्ध हिन्दी मासिक पत्र "दीपक" का प्रकाशन प्रारम्भ किया।

1934 24, 25, 26 सितम्बर को पजाब प्रातीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का नवा अधिवेशन अबोहर मे आयोजित किया।
—जाट स्कूल सगरिया में औषधालय की स्थापना।

1935 शारीरिक शिक्षा की तैयारी हेतु विद्यार्थियो को प्रशिक्षण के लिए बडोदा भेजा।
—जाट स्कूल हेतु धन सग्रह का भरसक प्रयास।

1936 जाट स्कूल मे सग्रहालय के प्रयास प्रारम्भ

1937 आयुर्वेद विद्यालय की स्थापना।
—बहावलपुर के चानण गाव मे हरिजन पाठशाला की स्थापना।
खेरदीन मेहतर को धर्मपाल नाम देकर अपनी शरण में रखा।

1938 हिन्दी सिख इतिहास लिखने की योजना बनाई।
—सग्रहालय की विधिवत स्थापना।

1939 जाट स्कूल मे नन्दन वन एव सग्रहालय के भरसक प्रयास।

1940 जाट स्कूल हेतु धन सग्रह के अथक प्रयास एव सग्रहालय का विकास।

1941 साहित्य सदन अबोहर मे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 30 वा अधिवेशन आयोजित किया।
—जाट स्कूल मे सभा स्थल, पशु शाला, विद्यार्थी आश्रम कुण्ड, व अध्यापक निवास बनवाये।

1942 जाट स्कूल की रजत जयन्ती मनाई।
13-14 सितम्बर सर छोटूराम एव के एम पन्नीकर पधारे। विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन।
—मृत्यु भोज विरोधी कानून बनाने का अनुरोध, जो बीकानेर सरकार ने मान लिया।
—साहित्य सम्मेलन ने स्वामी जी को साहित्य वाचस्पति की उपाधि प्रदान की।

1943 हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सभी परीक्षाओं का जाट स्कूल को केन्द्र बनवाया। 9 अगस्त 1917 मे स्थापित जाट विद्यालय को हाई स्कूल मे क्रमोन्नत करवाया।

1944 महान् मरुभूमि सेवा कार्य योजना लागू की, जिसके अन्तर्गत 100 स्कूलों की स्थापना की गई।
—संग्रहालय का नामकरण सर छोटूराम स्मारक संग्रहालय।

1945 महाराजा सादुलसिंह जी द्वारा उद्योग विभाग का उद्घाटन।
—अखिल राजपूताना वैद्य सम्मेलन।
—5 फरवरी को मास्टर तेगराम जी के साथ अपने गाँव मगलूणा गये। 24 दिसम्बर को मरुभूमि सेवा कार्य हेतु कलकत्ता गये।

1946 नोआखली के दंगाग्रस्त क्षेत्रों की यात्रा।
—13-14 अप्रैल को रतनगढ़ विद्यार्थी आश्रम की शिक्षा इमारतों का शिलान्यास।

1947 साम्प्रदायिक सद्भावना हेतु अथक प्रयास, जाट स्कूल में यह जहर नहीं घुलने दिया। अनेकों मुसलमानों को बचाया और सरक्षण दिया।
24 मई को बीकानेर छात्रावास का उद्घाटन।
—मान सरोवर यात्रा
—मेघ वश सम्मेलन बीकानेर की अध्यक्षता।
—जाट स्कूल में संगीत शिक्षा का शुभारम्भ।

1948 जाट विद्यालय का नाम ग्रामोत्थान विद्यापीठ रखा।
खिचीवाला सुजानगढ़ शिक्षा सदन की स्वामी जी द्वारा भेजे शिष्य स्वतन्त्रानन्द ने नींव डाली।
—इलाज हेतु बीकानेर गये।

1949 4 सितम्बर को भारत सरकार के पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर जनरल डॉ० वासुदेव शरण को, संग्रहालय व्यवस्थित करने हेतु बुलाया।
—ग्रामोत्थान पाठशाला योजना के तहत मरुभूमि में अनेक पाठशालाएँ खुलवाई।
—20 अगस्त 1925 मे स्थापित जाट बोर्डिंग हाउस नाम की संस्था भादरा को, स्वामी जी ने 28-3-1949 को नव जीवन प्रदान किया।

1950 नव जीवन प्रेस की ग्रामोत्थान विद्यापीठ में महिला शिक्षा का श्रीगणेश। महिला आश्रम प्राइमरी स्कूल प्रारम्भ।
—मासिक पत्रिका 'ग्रामोत्थान' का प्रकाशन प्रारम्भ।
—स्वामी जी ने पटियाला के प्रसिद्ध चित्रकार त्रिलोकसिंह से 8000 रुपये के चित्र खरीदे।

1951 छात्रावास भवन सरस्वती और नव जीवन भवन का निर्माण
— महाजन मे 500 बीघा भूमि दान में प्राप्त कर दो माह का प्रौढ़ शिक्षण शिविर आयोजन किया।

1952 राष्ट्रीय संसद के सदस्य बने। (1952 से 1964 तक)
—जीवन में पहली बार उपचार हेतु क्लोरोमाइस्टीन का प्रयोग किया।

1953 1905 से चले आ रहे चोटाला रोड (संगरिया का पूर्व नाम)
—का नाम करण संगरिया करवाया।
—आठ जनवरी को लाल बहादुर शास्त्री पधारे।
—गाँधी विद्या मन्दिर सरदार शहर की प्रबन्ध कारिणी के सदस्य बनाये गये।
—13 सितम्बर को सांसदो का दल स्वामी जी के कार्यों को देखने आया।

1954 मरुस्थल में बेसिक शिक्षा स्कूलो, समाज शिक्षा केन्द्रो की स्थापना।
—स्वामी जी द्वारा स्थापित स्कूलों की कुल संख्या 287 हुई।
—11वर्षों के अथक प्रयासो से सिख इतिहास का प्रकाशन।
—छानी बड़ी (भादरा) में स्कूल की स्थापना मे सहयोग
—महिला आश्रम प्राइमरी स्तर से मिडिल स्कूल मे क्रमोन्नत।
—समाज शिक्षा सचालकों के लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया।

1955 हाईस्कूल बहुउद्देश्यीय उच्चतर माध्यमिक स्कूल के रूप म परिवर्तित करवाया। इसी वर्ष स्कूल मे कृषि संकाय भी प्रारम्भ हुआ।
—महाजन में कस्तूरबा महिला ग्रामोत्थान विद्या पीठ का शुभारम्भ किया। उद्घाटन में डॉ० सुशीला नैय्यर पधारी।
—12 10 1955 मे सूरतगढ में ग्राम छात्रावास का शिलान्यास राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया एवं सुशिला नैयर द्वारा।

1956 शिक्षक प्रशिक्षण शाला की स्थापना।
—स्वर्ण मन्दिर (अमृतसर) के स्वर्ण पत्रो के जीर्णोद्धार समारोह के मुख्य अतिथि और उद्घाटन भाषण।
—सोवियत सांस्कृतिक दूत वारान्निकोव पधारे।

1957 महिला आश्रम् मिडिल स्कूल हाई स्कूल बना।
—पीटर, पीर, प्रताप (राजा महेन्द्र प्रताप) संगरिया पधारे।

1958 राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया द्वारा बनारसी दास चतुर्वेदी और ठाकुर देशराज द्वारा सम्पादित स्वामी केशवानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ उनकी 75 वी वर्ष गांठ पर भेंट किया गया।
—स्वामी जी की प्रेरणा से चौधरी शिवकरणसिंह जी गोदारा ने अपने पिता की स्मृति मे एक लाख रुपया श्रीगंगानगर म कन्या महाविद्यालय की स्थापना के लिए दिये।

—भूदान के प्रणेता विनोबा भावे स्वामी जी के कार्यक्रमों को देखने संगरिया पधारे।

—अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बहु-भाषाविज्ञ युगोस्लाविया के संकर टी० बोर संगरिया पधारे।

1959 पं० जवाहरलाल नेहरू प्रधान मन्त्री भारत सरकार एवं श्रीमती इन्दिरा गांधी का ग्रामोत्थान विद्यापीठ में पदार्पण।
—अमेरिकी सांस्कृतिक दूत थामस डी० ऐलन पधारे।
—स्वामी जी मोतिया बिन्द के इलाज हेतु अलीगढ़ गये।

1960 कृषि महाविद्यालय की स्थापना की योजना बनाई।

1961 जब तक कृषि महाविद्यालय चलता न देख लूं संगरिया में पांव न रखूंगा, की शपथ ली उनकी प्रतिज्ञा जल्द ही पूर्ण हुई।
—राजस्थान विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ० मोहनसिंह मेहता ने स्वयं संगरिया पधार कर कृषि महाविद्यालय को मान्यता प्रदान की।

1962 कृषि महाविद्यालय प्रारम्भ।
—भारत चीन युद्ध में 4100 रुपये चन्दा करएवं 501 रुपये स्वयं के मद से राष्ट्रीय रक्षा कोष मे भिजवाये।

1963 17 अप्रेल को रामसुमनसिंह जी से कीर्ति स्तम्भ का उद्घाटन करवाया।
—15 जनवरी को महाराजा करणीसिंह पधारे।
—ग्रामोत्थान विद्यापीठ के लिए ईंट भट्टे की स्थापना।

1964 सर छोटूराम स्मारक संग्रहालय मे क्रांतिकारी मन्मथनाथ गुप्त से शहीद कक्ष (लाला हरदयाल कक्ष) का उद्घाटन करवाया।

1965 शिक्षा महाविद्यालय की स्थापना।
—भारत दर्शन उपशिक्षा मन्त्री भारत सरकार ने उद्घाटन किया। डॉ० सतप्रकाश पुरातत्व विभागाध्यक्ष राजस्थान सरकार के साथ कालीबंगा का निरीक्षण।
अध्यापक ही वैद्य वैद्य ही अध्यापक नामक मौलिक योजना प्रस्तुत की।

1966 मथुरा अखिल भारतीय कृषक सम्मेलन के सभापति।
—कन्याओं के लिए सावित्रीदेवी छात्रावास का उद्घाटन बृज सुन्दर शर्मा, शिक्षामन्त्री राजस्थान सरकार द्वारा करवाया।

1967 ज़िला सर्वोदय एवं नशाबन्दी समिति के अध्यक्ष। खोथावाला में हरिजन विद्यालय की स्थापना।
—नशाबन्दी, गांधी एवं हिन्दी प्रदर्शनी का आयोजन।
—नवम्बर मे, प्राकृतिक चिकित्सा हेतु जयपुर में।

1668 कृषि महाविद्यालय में कला एव विज्ञान सकाय प्रारम्भ 9 मार्च को खाद्य-मंत्री जगजीवन राम जी एव राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया पधारे।

— शिक्षा सन्त स्वामी केशवानन्द नामक पुस्तक का प्रकाशन आचार्य वृज-नारायण कौशिक द्वारा।

1969 अगस्त में टिबी के इलाज हेतु चण्डीगढ पोस्ट ग्रेज्युएट मेडीकल इन्सटयूट में भर्ती हुए। चौधरी बशीलाल एव चौधरी देवीलाल रक्त दान को तैयार हुए। वृजनारायण कौशिक का खून स्वामी जी को दिया गया। —

—प्र० शेरसिंह जी की सहायता से टिबी सम्पनान्न रोहतक मे रहे।

— युग पुरुष गांधी, युवको के आदर्श नेता जी बोस, सिख गुरु और उनकी वाणियां, जम्भेश्वर महाराज का चरित्र और वाणी, सर्व-खाप पचायत और गांव स्वराज्य नामक पुस्तकायें छपवाकर वितरीत करवाई।

1970 सर्वखाप पचायत का अधिवेशन एव शराब तम्बाकू के प्रचार हेतु 100 पुस्तकालय खोलने का विचार।

1971 ग्रामोत्थान विद्यापीठ का संशोधित सविधान छपवाया।

—पूर्व सस्था अबोहर एव नव स्थापित सस्था कस्तुरबा महिला ग्रामोत्थान विद्यापीठ महाजन की ओर ध्यान आकृष्ट।

1972 9750 रुपये का महास से धन सग्रह कस्तूरबा महिला ग्रामोत्थान विद्या-पीठ महाजन मे बडे पैमाने पर वृक्षारोपण।

—कन्या महाविद्यालय को हायर सैकेन्डरी स्कूल का रूप प्रदान किया।

युग पुरुष का महा प्रयाण

13 सितम्बर 1972 के दिन 2 व 3 बजे के मध्य दिल्ली के लाल कटोरा चौराह के पूट पाथ पर चिर निद्रा मे लीन।

स्वामी जी की चेतना से उनकी स्मृति मे—

— ग्रामोत्थान कन्या महाविद्यालय (गृह विज्ञान महाविद्यालय के सन् 1980 के रूप म)

— स्वामी केशवानन्द स्मारक निधि अबोहर की स्थापना जो स्वामी जी के नाम से हरियाणा पजाब एव राजस्थान के विश्व विद्यालयो मे प्रथम स्थान प्राप्त विद्यार्थियो को पुरस्कार देता है।

स्वामी केशवानन्द प्रशस्ती गीत एव ऐसे थे स्वामी नामक पुस्तिकाओ का प्रकाशन।

सगरिया म केशवानन्द पार्क एव उनकी आदमकद मूर्ति का चौ० चरणसिंह जी द्वारा अनावरण।

—स्वामी केशवानन्द स्मारक ट्रस्ट की संगरिया में स्थापना
जो स्वामी जी के सोच और कार्यों को आगे बढ़ाने हेतु उनके सभी कार्यों मरता, नवीन प्रवृत्तियों का शुभारम्भ।

—प्रतियोगी परीक्षाओं के विशेष पर ग्रामीण प्रतिभाओं हेतु ट्रस्ट द्वारा स्थाई प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना।

—शिक्षा समाज कल्याण, हिन्दी प्रचार आदि से सम्बन्धित क्षेत्रों में श्रेष्ठ कार्यकर्ताओं को सम्मानित करना।

—स्वामी जी का शताब्दी समारोह एवं स्वामी केशवानन्द स्मारिका का प्रकाशन सफलता पूर्वक करने के बाद अब विद्यापीठ का इतिहास लेखन प्रारम्भ।

—ग्राम मानकसर तहसील संगरिया में राष्ट्रीय सेवा योजना कृषि महाविद्यालय स्वामी केशवानन्द स्मारक पुस्तकालय की स्थापना।

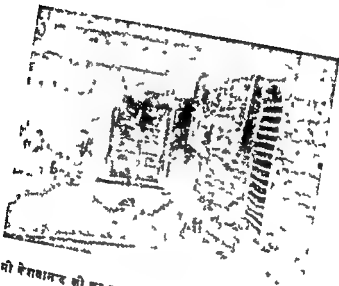
—स्वामी केशवानन्द कॉलोनी संगरिया

—स्वामी केशवानन्द मार्ग संगरिया

—गंगानगर में नगर निगम की ओर से चौराहे पर स्वामी जी की आदम कद प्रतिमा एवं मुख्य सड़क का नाम स्वामी जी पर रखने का प्रस्ताव विचाराधीन।

—और अब देव पुरुष महर्षि शिक्षा सन्त स्वामी केशवानन्द महाराज का प्रेरणादायक जीवन एवं उनके कृत्य नामक यह पुस्तक आपके हाथों में है।

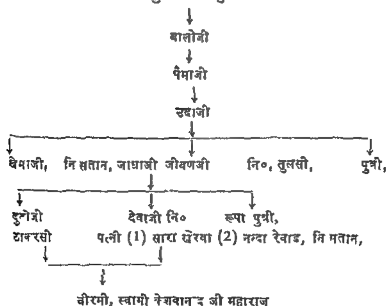
—लेखक एवं अन्य श्रद्धालुओं द्वारा स्वामी जी के मिशन को आगे बढ़ाने की सदिच्छा से 'केशव मार्ग' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन 13 सितम्बर 1985 से प्रारम्भ है।



स्वामी केशवानन्द जी का मगलूणा (सीकर) स्थित जन्मस्थल
(खिड़की वाली कोठरी)

1
बाल्यकाल

महात्मा गांधी से 14 वर्ष छोटे स्वामी केशवानन्द जी का जन्म शेखावाटी की सीमा पर सालासर कस्बे से दक्षिण में स्थित मगलूणा नामक गाँव में पौष संवत् 1940 (सन् 1883) में एक निर्धन ढाका जाट परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम ठाकरसी एवं माता का नाम सारा था।[1] ग्राम मगलूणा संवत् 1451 बैसाख सुदी पंचमी मंगलवार को पत्तेखाँ नवाब फतेहपुर के क्षेत्र में मालुजी ढाका द्वारा बसाया गया था। ठाकरसी मालुजी ढाका की 12वीं पीढ़ी की संतान थे। एवं सारा



1 उपरोक्त नामों का सर्वप्रथम उल्लेख श्री ब्रजनारायण कौशिक एवं तत्पश्चात् इसकी पुष्टि सरदार शेरसिंह जी ने की।

सरस्वती घेरवी। (घेरवा जाट) गोत्र से सम्बन्धित थी। उपरोक्त जानकारी का स्रोत ग्राम लोरडी (डून्द के निकट मोजमाबाद जिला जयपुर, राजस्थान) के भाट राजा थी वासूसिंह जी हैं।[2] उनकी बही मे उपरोक्त विवरण भी पाया गया।

स्वामी जी की वंशावली के साथ ही स्वामी जी का जन्म वर्ष भी भ्रान्ति है। भाट राजा ओनाडजी ने स्वामी जी का जन्म सवत 1945 अकित किया है, लेकिन स्वामी जी की स्मरण शक्ति द्वारा अनेक घटनाओ के उल्लेख के आधार पर सवत् 1940 अधिक सत्यप्रतीत होता है। महाकाल सवत् 1956 के समय स्वामी जी 16 वर्ष के थे। निश्चय ही गृहत्याग के समय तक परम्परागत जानकारियो के माध्यम से स्वामी जी को अपनी सही आयु का पता लग गया होगा। वैसे उस समय तक स्वामी जी की माता जी भी जीवित थी।

आयु एव पारिवारिक उल्लेख के अलावा स्वामी जी के बाल्यकाल के सम्बन्ध मे विशेषकर गृहत्याग। सवत् 1956 सन् 1899 से पहले का कोई लिखित या अन्य प्रकार का प्रमाण प्राप्त नही है, एव स्वामी जी के निकट का कोई रिश्तेदार भी यह सब बताने की स्थिति मे नही है।

स्वामी जी के बाल्यकाल की कहानी उन्हीं की जबानी

स्वामी केशवानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ एव व्रज नारायण कौशिक के साथ साक्षात्कार मे उल्लेखित है। "मेरा जन्म शेखावाटी या बीकानेर की सीमा पर सालासर से दक्षिण दिशा मे मगलुणा नाम के गाँव मे हुआ था। समस्त उत्तरी राजस्थान मे जल या तो खारा है अथवा बहुत ही गहरा है पर इन गाँवो का जल गहरा भी नहीं, और खारा नही है, अमूमन लोग कुआ पर जौ, गेहूँ की सिंचाई करते हैं। गाजर, मूली, तम्बाकू आदि की भी पैदावार करते है, आबादी घनी है, भूमि की कमी है, पशुओ का पालन पोषण जाटी, खेजडी से करते हैं, जिसे वर्ष भर मे शायद दो बार भी काटते-छाटते हैं। गाँव मगलुणा मे ब्राह्मण, वैश्य, जाट, राजपूत, कुम्हार, हरिजन आदि सभी जातियो की आबादी है। इसी गाँव मे जाट जाति मे मेरा जन्म हुआ मेरे पिता को बाबत सुना गया है कि वे धार्मिक विचारो के व्यक्ति थे उन दिनों रेल का जाल नही बिछा था, फिर भी पैदल गगास्नान के लिए हरिद्वार पितरोद्धार के लिए गया और लोहागर तो लगभग नजदीक होने से प्रति वर्ष जाते ही रहते थे। अन्तिम समय जब उन्होने मगलुणा छोडने का विचार किया उस समय असाढी की फसल जो बडी फसल मानी जाती है, काटने के बाद इकट्ठी कर एक दिन सवेरे सब गाँव की गायो को इकट्ठा कर खाले-खलियान, मे छोड दिया और उस यज्ञ मे चारा, फूँस, अन्न आदि सभी चरा दिया उसके पहले ही वे रतनगढ शहर (जिला चूरू राजस्थान,) के मालियो के बास मे एक माली चौधरी से पगडी बदल कर धर्म भाई-बदन बन अपना घर बार यहाँ ले आये थे। उस समय का शहरी जीवन

---

1 सरदार शेरसिंह जी को दिये गये साक्षात्कार पर आधारित।

स्वतन्त्र जीवन होता था। किसी सेठ साहूकार को दूर नजदीक अपने रिश्ते-नाते मे अथवा दूर के व्यापारी को रेलवे स्टेशन तक या तीर्थ यात्रा के लिए ऊँट द्वारा ले जाने ले आने के धन्धे मे ही उन्होंने अपने को लगा रखा था।

रतनगढ क परिवार मे मेरे माता पिता और एक मात्र मेरे बुआ के फुफेरे भाई ही थे जिनके माँ बाप एक साथ ही बचपन में गुजर गये थे और जिसका पालन पोषण मेरे पिता के द्वारा ही हुआ था। उस समय उसकी आयु लगभग 12-14 वर्ष की होगी। एक दिन प्रात जब ऊँट को बाहर पास ही सरकारी जगल मे छोड़ने गये और छोड़ने से पहले जब उसके पाँवों मे दावणा (पग बन्धन) बाँधने लगे तो उसी समय उसकी पुन्छी पकड़े ही बैठे रह गये। उनका मृत सस्कार किया गया। भाई साहब का कहना था कि मेरे पिता कुछ साधारण हिसाब-किताब अपने धोपनिये डायरी मे लिखा करते थे। मेरी उम्र उस समय केवल दो-ढाई वर्ष की थी। कुछ ही दिनो बाद मेरी माता मुझे तथा मेरे भाई को फिर उसी मगलुणा गाव मे जहाँ बिरादरी के एक सगे चाचा ताऊ रहते थे वहाँ ले गई पर वहाँ उसके पैर न जमे और लौट कर अपनी सगी मौसी के पास जो कि एक सम्पन्न घर की मालकिन थी, एक झोपडा अलग डालकर, एक गाय बाँधकर उसी के सहारे अपना जीवन यापन करने लगी इतने मे मैं भी कुछ बड़ा हो गया और छोटे-छोटे बछड़ा-बछिया चराने गाँव के बाहर पहले खेतों मे फिर बाहर दूसरो के साथ और फिर अकेला जाने लगा इस प्रकार एक ग्वाल-बाल बन गया। एक दिन मे गाय बछडे चरा कर लौट ही रहा था कि क्या देखता हूँ कि उसी रास्ते एक बड़ा भेड़िया आ रहा है। सबसे आगे जो छोटा बछडा है, उसे सिवाय अपनी माँ के दूध के कुछ नहीं दिख रहा है, अत तेज रफ्तार से चला जा रहा है मुझे चिन्ता हुई कि अब किया जाय तो क्या ? कि इतने ही म उस बेचारे के उत्तर की बजाय पैर पश्चिम की तरफ हो लिये कि मेरा साँस मे साँस आ गया। मैं साधारणतया चाहे छोटा था पर भेडिये की और हरकतो से परिचित था और कुछ लोगो के साथ उन भेडिये वीरो के दर्शन 3 4 की टोली मे कर चुका था।

अभी मेरा बचपन नहीं गया था तो भी मैं अपना वर्तमान कर्तव्य पालन भली प्रकार समझने लगा था कि कहाँ से जाने से गायें अच्छा खा पी सकती हैं। गायो को और खेतो को कैसे खतरा पैदा हो सकता है, और खासकर उनकी भेड़ियो से रक्षा कैसे की जाती है। ये भारी जिम्मेदारियाँ हम गायो को चराने वाले भली प्रकार जानते और समझते थे। यों भेडियो की रोज चर्चा चलती रहती थी कि अमुक गाय व साढ को झुण्ड से अलग हो जाने से भेडिये खा गये। एक दिन हम दो ग्वाल-बाल गायें चराने गये और पिछले पहर का समय था श्रावण भादो जैसा मौसम था पर वर्षा का अभाव था खेती छोटी और सूख रही थी हम अपने झुण्ड को छोड़कर एक लम्बे टीले की ढोल (शृखला) के पार खेत मे बूँदा-बादी के समय

व चले गये । कुछ समय हुआ होगा कि नीचे गायों की तरफ से उनकी नासिका की ऊँची-ऊँची फूंकार सुनाई देने लगी और हम डोल पर पहुँचे । देखते क्या हैं कि जंगल के तालाब के एक तरफ गायों का झुण्ड एक गोलाकार दायरे में इकट्ठा हो रहा है बड़ी-बड़ी गायें जिनके सींग बड़े थे, तो बाहर की तरफ मुँह सींग किये खड़ी हैं और कमजोर तथा छोटी उमर की बीच में । दो भेड़िये अपनी पूँछो को ऊपर किये हुये चारों तरफ छलांगें मार-मार कर आक्रमण कर रहे हैं । वे उस मोर्चे को भेदन करने जिधर ही जाते हैं उनके मुकाबले के लिए उधर से ही बड़ी-गायों के सींग और नासिका की फूँकार तैयार खड़ी है । इस अवस्था में उन्हें देखकर हम दोनों ग्वाल-बालों ने ललकार दी तो वे दोनों वीर अपनी पूँछ टांगों के बीच देकर चलते बने । एक दफा का जिक्र है कि मैं अपने साथी के बीमार हो जाने पर उसकी और अपनी गायों की देख-भाल पर अकेला ही था कि अचानक एक लाल बैंडी जो कि सदैव अपनी जवानी की उमंग में आगे ही रहा करती थी चमकी कि मैं ऊँची जगह से क्या देखता हूँ कि सात भेड़िये चले आ रहे हैं । मैंने लाठी ऊपर की तथा ऊँची आवाज से उन्हें ललकारा और वे नौ दो ग्यारह हो गये । पशु चराने वालों में गरीब-अमीर-जात-पात का कोई भेद-भाव नहीं होता था । हम लोग प्रातः काल उठते सर्दियों में अपने कपड़ों से निकलते और तपते चूल्हे के आगे बैठ गये । रात की बाजरी की रोटी और साथ दही दोनों मिलाकर खा लिया । चाहे बूँदा-बादी हो, बादल के साथ हड्डियों के पीसने वाली कैसी भी ठण्डी हवा क्यों न हो पर हमारे सब के बदन पर तो वही एक सूत और ऊँट की बनी जट (ऊन का चोटिया ओढने का कपड़ा) है, बन सका तो ऊन का हो सकता है । बचपन की तागड़ी साथ-साथ आठ वर्ष बाद दो अगुल की लीर (कपड़े की पट्टी की एक लंगोटी) है । लड़का कितना ही बड़ा क्यों न हो जाये विवाह के पहले शायद ही धोती बनती है । किसी का यदि विवाह हो जाता तो छोटी उमर के कारण फिर आसानी के लिए लंगोटी आ जाती थी । चौदह-पन्द्रह वर्ष तक की आयु के लिए लंगोटी का रहना साधारण बात थी । जंगल के ग्वालों के लिए तो यह बड़ा ही वरदान था, क्योंकि भुरट घास के कांटों की मार से लोग बच जाते थे । उस युग की बात है, जबकि हम जंगल के जानवरों के लिए कुरते अंगरखी कहाँ थी, जमाना तो ऐसा था कि किसी बड़े या बुढे या सम्पन्न चौधरी के घर खद्दर की एक अंगरखी थी जो तिबारे में बाहर खूँटी पर सदैव लटकती रहती यदि किसी को विवाह मुकलावे जैसे खास काम पर जाना, होता तो उसे पहनकर चला जाता । और आते ही उसी खूँटी पर उसे सजा दिया जाता, सिहराना, गदेला रजाई आदि रुई का कोई सामान उस जमाने के गाँव में नहीं रहता था, उनकी कम्बल, तिहरी और एक दूरे कम्बलिये जरूर होते थे, जो बैठने पर साथ प्रातः ओढ लिये जाते थे । और काम करने पर एक धोती ही होती थी । तब फिर जंगल में घिरने वाले इन बाल-गोपालों को कौन कुरते-धोती

और अगरखी पहनाता था। वैसा उस जमाने मे कोई चीज ही नही थी, कोई घी बेच आया तो कपड़ा, गुड, शक्कर, नमक, मसाला इत्यादि ले आया। मुझे याद है कि मेरी तागडी पर एक हाथ का सिला हुआ छोटा-सा बटुआ कोई वर्ष दो वर्ष बंधा रहा था, एक ताम्बे का ढब्बू पैसा था जो कभी किसी काम मे न आया। और अन्त मे यो ही कहीं बटुए के साथ चला गया। चोरी का सवाल ही पैदा नहीं होता था। उसे कोई क्यों ले जबकि गाँव में पैसे की कोई चीज ही नही मिलती थी? उस युग मे दूध पूत बेचना पाप समझा जाता था। अलबत्ता घी जरूर बिकता था। सर्दियों में कड़कती सर्दी में सूर्योदय से सूर्यास्त तक हमारा समय बीतता था। इसी प्रकार गर्मियों की अवस्था भी। गर्मीयो की वर्षा के बिना प्रथम घास की कमी होती है, अत उन दिनो गायो को बहुत बहुत दूर-दूर चार-चार पाँच-पाँच मील तक जाना होता था। उन दिनों गाँव के बाहर पानी का मिलना तो असम्भव ही होता है और भयंकर गर्मी के कारण प्यास बार-बार लगना साधारण बात है। हरिजन बालक भी हमारे साथ गाय चराने जाते थे। पर हम लोग उनका पानी नही पी सकते थे। प्रतिदिन हमारे प्राणो की नौबत आती है कि अब गये अब गये। मन में आता की प्राण जा रहे हैं उनका पानी पी लें पर "छोडो न तुम धरम को चाहे जान तन से निकले' यह एक भावना थी जो कि प्रतिदिन प्राण जाते-जाते भी पानी पीने से रोकती थी।

दिन भर ग्वाले बनके गायो की रखवानी करना, रात को बड़े बूढो से कहानियाँ सुनना और सोना, यही उस समय का हमारा एक मात्र कार्यक्रम था। बाद में बहुत कुछ दुनियाँ में देखा दिखाया पर वह सब भूल गया, परन्तु बालपन के वे दिन कदाचित जन्म जन्मान्तर में भी न भूले, क्योकि उनका अंकन जीवन में कठोर दिनो के रूप में प्रत्यक्ष हुआ है। भाग्य का ऐसा झोका आया कि सूखे पत्ते की तरह उड़कर संवत 1961 (सन् 1904) फाजिल्का पजाब में जाकर पाँव रुके।"

स्वामी जी ने अपने स्मृति पटल पर सजोये बचपन के अनुभव तारीखों मे बाधने या प्रयास न करते हुए तत्कालीन समाज और जीवन यापन के लिए किये जाने वाले संघर्ष की कहानी कह दी। मानो वे अपनी कहानी नेपथ्य मे रखना चाह रहे हो, अपने बहान अपने तत्कालीन पर्यावरण और रेगिस्तान की परम्परागत अर्थ-व्यवस्था का ताना-बाना बुन रहे हो।

पाँच छ वर्ष का बीरमा अपने परिवार के साथ मगलूण से तीस-पैंतीस मील दूर स्थित रतनगड शहर मे आ गया। बीरमा के अलावा परिवार मे उनके पिता ठाकरसी माता सारा एव रिश्ते के भाई रामलाल थे। ठाकरसी अपने पगड़ी बदल भाई माली के सहयोग से मालियो के बास मे झोपड़ा बाधकर ऊँट के सहारे अपना जीवन यापन करने लगे। ये सन् 1889 के आस-पास की बात है जब दिल्ली से

पहले कच्ची सड़क और रेलवे लाइन नहीं हुआ करती थीं। सेठ लोग अपने व्यापारिक हितों के लिए बड़े शहरों विशेषकर कलकत्ता, बम्बई आदि जाया करते थे। यात्रा का एक मात्र साधन था ऊँट। ठाकरसी ने भी अपने ऊँट को अन्य ऊँटों के काफिले में शामिल कर परिवार के भरण-पोषण का साधन बनाया। रतनगढ़ से दिल्ली के लिए कई कई दिन लगते थे, रास्ते मे अनेक कठिनाइयां झेलकर जब वापिस रतनगढ़ आते तो जोखिम भरे कार्यों के लिए उन्हें एक या डेढ़ रुपया बतौर मेहनताना दिया जाता था। लेकिन विधाता को यह भी मन्जूर नहीं था, रतनगढ़ आये मात्र डेढ़ वर्ष ही हुआ था कि ठाकरसी अपने ऊँट को सरकारी बीहड़ में चरने के लिए छोड़ते समय उसका पगबन्धन कर रहे थे कि उनके प्राण पखेरू उड़ गये। सारा देवी जो सेठों के यहाँ आटा पीसने से लेकर बर्तन साफ करने एवं सफाई का कार्य कर परिवार के लिए कुछ खाने पीने की व्यवस्था किया करती थी, पति की मृत्यु के कारण ज्यादा दिन तक रतनगढ़ मे न रह सकी। और फिर अपनों के बीच मगलूणा अपने दोनों बच्चों एवं परिवार का थोड़ा बहुत सामान ऊँट पर लादकर संवत 1948 मे वापिस आ गई। विपदायें सदा शृंखला में आती हैं। मानो ईश्वर राजा हरिश्चन्द्र की तरह इन्सान की सहनशीलता की परीक्षा लेता है। विधवा सारा देवी के मगलूणा वापिसी पर किसी को खुशी न हुई और न ही किसी ने इस बेसहारा परिवार पर किसी प्रकार की दया दिखायी और सहायता दी। अतः सारा देवी ने जीवन पथ का यह पड़ाव भी छोड़ दिया। अब एक आशा की किरण बची, हुसासर हामूसर मे रहने वाली सगी मौसी। मौसी घर एवं दिल दोनों से सम्पन्न थी अतः अपने सामर्थ्य भर उसने अपनी भान्जी सारा के लिए रहने का प्रबन्ध किया। बीरमा एवं रामलाल गायें चराते एवं सारा ने गाँव मे पीसना पीसा। जैसे-तैसे हामूसर मे उनका समय कट रहा था। लेकिन धीरे-धीरे कठिनाइयाँ बढ़ने लगी। अकाल की काली छाया क्षितिज पर धीरे-धीरे उभर रही थी। सारा क्षेत्र वर्षा की बूंद बूंद को तरस गया। हरियाली सपने की वस्तु बनती जा रही थी। गायें मीलों तक घूमती पर सिवाय भटकने के उन्हें कुछ नहीं मिलता। इस क्रम में अनेक बार बीरमा एवं रामलाल को अड़सीसर, घड़सीसर तक गायों के लिए चारे की तलाश मे जाना पड़ता लेकिन फिर भी गायें भूखी ही रहती। अब पानी का संकट भी गहराता जा रहा था। जीवन आधार कुए भी सूख रहे थे। तीन सौ फुट गहरा पानी वह भी खारा जहर के समान गर्मी मे आकर गायें पीलें तो मृत्यु को प्राप्त हो, आदमी पीलें तो उल्टी-दस्त प्रारम्भ हो जाये ऐसे मे सारा देवी ने अपना पड़ाव फिर बदला। घुमक्कड़ जीवन के कष्ट दर दर की ठोकरें खाते खाते बेसहारा, भूख की सम्भावित पीड़ा से डरते-डरते यह काफिला उत्तर की ओर बढ़ने लगा। संवत 1955 मे ये तीनों प्राणी अपनी गायों सहित केलियाणा गाँव पहुँचे। यहाँ पहुँचते-पहुँचते कई गऊयें कम हो गयी। और भाई रामलाल जी अब समझदार हो चुका था अपने पुस्तैनी गाँव की ओर चला गया। रह गये माता-पुत्र और कुछ गायें।

स्वामी जी के स्मृति पटल पर गाँव बेलणिया मे बीते समय की याद एक दिन अचानक उद्घाटित हो गयी। ब्रज-नारायण कौशिक ने उस अमूल्य समय का सजीव अंकन किया—

"हरद्वार शहर से समरिया जाते वक्त बेलणियाँ रास्ते मे आया। स्वामी जी जीप से उतरकर इधर-उधर तेजी से घूमने लगे एका-एक रुके और कहने लगे—' शायद यह गाँव आगे सरक गया है, यह वह जहाँ 'मैंने बचपन मे गायें चराई थी।''' यहाँ हमारा एक झोपड़ा था। वे चुप हो गये''''

स्वामी जी की आँखो में एक विशेष प्रकार की चमक देखी। उनकी स्वास की गति मे एक अवरोध एक क्षण अनुभव हुआ। 'हमारा झोपडा था' अब नहीं है मानो उसे ही श्रद्धांजलि दे रहे हों अचानक गाँव का एक बूढा आता है—'यह कौन लोग हैं'। उसके सामने एक प्रश्न वाचक चिन्ह है? वह धीरे-धीरे पहचानने लगता है—'केशवानन्द है के।'

" आज पूरे 56 वर्ष बाद पुन इस स्थान को देख रहा हूँ। बहुत परिवर्तन आ गया है।'''' मौन'''' मैं उन दिनो 10 वर्ष का था बात सन् 1893 के आस-पास की होगी जब हम आये। मेरे पास कपडे नही थे, हम नगे फिरते थे, मुझे ठीक याद है एक वर्ष बाद चार आगुल कोपीन कपडे की पट्टी बाँधने को मिली। गर्मी-सर्दी सभी ऐसे ही घूमते रहते।''' यह तुम्हारा तेल साबुन तो होता नही था वर्षा में ही नहाना होता था। औरतो के जुँए पडना स्वाभाविक था पर लडको के नही पडते थे। न हम लोग कपडे पनहते, न सिर पर बाल। बेचारी कहाँ रहे। फिर रेत वगैरह जमा हो जाता था उसका हमारे पास बड़ा अच्छा इलाज था। जब कोई बछड़ती पेशाब करती हम दौडकर उसके नीचे सिर कर देते और खूब रगडकर सिर धो लेते इससे खोरा सिर में कभी नही पडा। गौ मूत्र एक वर्ष तक की बछिया का सर्वोत्तम होता है। हमारा विश्वास है निगा कर गोरी बछडी बिना ब्यायी, का मूत्र एक वर्ष दिन मे तीन बार पिया जाये तो कैसा भी दम क्यो न हो, रह नही सकता''''मौन' हम सभी आश्चर्य-चकित थे। जिस स्थान पर एक आदमी 56 वर्ष बाद पहुँचे उसकी क्या मनोदशा हो सकती है, कहीं स्वामी जी आनन्दोल्लास मे अपनी स्मृति न खो दें। भावातिरेक में कहीं रक्तचाप ही न बढ जाये या आनंदविह्वल हो रोना ही शुरू न कर दें। परन्तु ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। सब कुछ स्थित प्रज्ञ स्थान घटनायें और स्वामी केशवानन्द। यह मेरा अपना अकेले का अनुभव नही था। हम समस्त साथियों का यही अनुभव रहा। जिस समय स्वामी जी अपनी बाल्यावस्था का वर्णन कर रहे थे हम सभी सम्मोहन के पास मे बँध चुके थे।''[1]

1 भाषा शैली एव शब्द स्वामी जी के हैं अत

पहले कही सडक और रेलवे लाइन नही हुआ करती थीं। सेठ लोग अपने व्यापारिक हितो के लिए बडे शहरो विशेषकर कलकत्ता, बम्बई आदि जाया करते थे। यात्रा का एक मात्र साधन था ऊँट। ठाकरसी ने भी अपने ऊँट को अन्य ऊँटो के काफिले मे शामिल कर परिवार के भरण-पोषण का साधन बनाया। रतनगढ से दिल्ली के लिए कई-कई दिन लगते थे, रास्ते मे अनेक कठिनाइया झेलकर जब वापिस रतनगढ आते तो जोखिम भरे कार्यों के लिए उन्हे एक या डेढ रुपया बतौर महनताना दिया जाता था। लेकिन विधाता को यह भी मन्जूर नही था, रतनगढ आये मात्र डेढ वर्ष ही हुआ था कि ठाकरसी अपने ऊँट को सरकारी बीहड मे चरने के लिए छोडते समय उसका पगबन्धन कर रहे थे कि उनके प्राण पखेरू उड गये। सारा देवी जो सेठो के यहाँ आटा पीसने से लेकर बर्तन साफ करने एव सफाई का कार्य कर परिवार के लिए कुछ खाने पीने की व्यवस्था किया करती थी, पति की मृत्यु के कारण ज्यादा दिन तक रतनगढ मे न रह सकी। और फिर अपनो के बीच मगलूणा अपने दोनों बच्चो एव परिवार का थोडा बहुत सामान ऊँट पर लादकर संवत 1948 मे वापिस आ गई। विपदायें सदा श्रृखला में आती हैं। मानो ईश्वर राजा हरिश्चन्द्र की तरह इन्सान की सहनशीलता की परीक्षा लेता है। विधवा सारा देवी के मगलूणा वापिसी पर किसी को खुशी न हुई और न ही किसी ने इस बेसाहरा परिवार पर किसी प्रकार की दया दिखायी और सहायता दी। अत सारा देवी ने जीवन पथ का यह पडाव भी छोड दिया। अब एक आशा की किरण बची, हसासर हामूसर मे रहने वाली सगी मौसी। मौसी धन एव दिल दोनो से सम्पन्न थी अतः अपने सामर्थ्य भर उसने अपनी भाण्जी सारा के लिए रहने का प्रबन्ध किया। बीरमा एव रामलाल गायें चराते एव सारा ने गाँव मे पीसना पीसा। जैसे-तैसे हामूसर मे उनका समय कट रहा था। लेकिन धीरे-धीरे कठिनाइयाँ बढने लगी। अकाल की काली छाया क्षितिज पर धीरे-धीरे उबर रही थी। सारा क्षेत्र वर्षा की बूँद-बूँद को तरस गया। हरियाली सपने की वस्तु बनती जा रही थी। गायें मीलो तक घूमती पर सिवाय भटकने के उन्हें कुछ नही मिलता। इस क्रम मे अनेक बार बीरमा एव रामलाल को अडसीसर, घडसीसर तक गायों के लिए चारे की तलाश मे जाना पडता लेकिन फिर भी गायें भूखी ही रहती। अब पानी का सकट भी गहराता जा रहा था। जीवन आधार कुए भी सूख रहे थे। तीन सौ फुट गहरा पानी वह भी खारा जहर के समान गर्मी मे आकर गायें पीलें तो मृत्यु को प्राप्त हो, आदमी पीलें तो उल्टी-दस्त प्रारम्भ हो जाये, ऐसे मे सारा देवी ने अपना पडाव फिर बदला। घुमक्कड जीवन के कष्ट दर-दर को ठोकरें खाते खाते बेसहारा, भूख की सम्भावित पीडा से डरते-डरते यह काफिला उत्तर की ओर बढने लगा। सवत 1955 मे ये तीनो प्राणी अपनी गायो सहित केलियाणा गाँव पहुँचे। यहाँ पहुँचते-पहुँचते कई गऊयें कम हो गयी। और भाई रामलाल जी अब समझदार हो चुका था अपने पुस्तेनी गाँव की ओर चला गया। रह गये माता-पुत्र और कुछ गायें।

स्वामी जी के स्मृति पटल पर गाँव केलणिया मे बीते समय की याद एक दिन अचानक उद्घाटित हो गयी। व्रज नारायण कौशिक ने उस अमूल्य समय का सजीव अंकन किया—

"सरदार शहर से सगरिया जाते वक्त केलणियाँ रास्ते मे आया। स्वामी जी जीप से उतरकर इधर उधर तेजी से घूमने लगे एका-एक रुके और कहने लगे—'शायद यह गाँव आगे सरक गया है यह वह जहाँ 'मैंने बचपन मे गायें चराई थी। यहाँ हमारा एक झोंपडा था। व चुप हो गये"'

स्वामी जी की आँखो मे एक विशेष प्रकार की चमक देखी। उनकी स्वास की गति मे एक अवरोध एक क्षण अनुभव हुआ। 'हमारा झोंपडा था' अब नही है मानो उसे ही श्रद्धांजलि दे रहे हों अचानक गाँव का एक बूढ़ा आता है—'यह कौन लोग है'। उसके सामने एक प्रश्न वाचक चिन्ह है? वह धीरे धीरे पहचानने लगता है—केशवानन्द है के।'

आज पूरे 56 वर्ष बाद पुन इस स्थान को देख रहा हूँ। बहुत परिवर्तन आ गया है।' मौन' मैं उन दिनो 10 वर्ष का था बात सन् 1893 के आस-पास की होगी जब हम आये। मेरे पास कपडे नही थे, हम नगे फिरते थे मुझे ठीक याद है एक वर्ष बाद चार आगुल कोपीन कपडे की पट्टी बाँधने को मिली। गर्मी-सर्दी सभी ऐसे ही घूमते रहते। यह तुम्हारा तेल साबुन तो होता नही था वर्षा मे ही नहाना होता था। औरतो के जुँए पडना स्वाभाविक था पर लडको के नही पडते थे। न हम लोग कपडे पनहते, न सिर पर बाल। बेचारी कहाँ रह। फिर रेत वगैरह जमा हो जाता था उसका हमारे पास बडा अच्छा इलाज था। जब कोई बछडती पेशाब करती हम दोडकर उसके नीचे सिर कर देते और खूब रगडकर सिर धो लेते इससे खोरा सिर में कभी नही पडा। गो मूत्र एक वर्ष तक की बछिया का सर्वोत्तम होता है। हमारा विश्वास है निगा कर गोरी बछडी बिना ब्यायी का मूत्र एक वर्ष दिन मे तीन बार पिया जाये तो कैसा भी दम क्यो न हो, रह नही सकता' मौन हम सभी आश्चर्य चकित थे। जिस स्थान पर एक आदमी 56 वर्ष बाद पहुंचे उसकी क्या मनोदशा हो सकती है यहीं स्वामी जी आनन्दोल्लास म अपनी स्मृति न खो दें। भावातिरेक में कहीं रक्तचाप ही न बढ जाये या आनन्दविल हो रोना ही शुरू न कर दें। परन्तु ऐसा कुछ भी नही हुआ। सब कुछ स्थित प्रज्ञ स्थान घटनायें और स्वामी केशवानन्द। यह मेरा अपना अकेले का अनुभव नही था। हम समस्त साथियों का यही अनुभव रहा। जिस समय स्वामी जी अपनी बाल्यावस्था का वर्णन कर रहे थ हम सभी सम्मोहन के पाश मे बँध चुके थे।'[1]

---

1 भाषा शैली एव शब्द स्वामी जी के हैं व्रत

स्वामी जी द्वारा वर्णित उक्त ग्राम मेलणियाँ भी सवत 1956 के भयकर अकाल से बच न सका। अकाल की कालीमा गहराती गयी। एक एक कर प्राणी काल कलवित होते गये। वनस्पति का तरल द्रव्य और जीवों की रगो मे बहने वाला रक्त धीरे-धीरे सूखता गया। क्षुधा शात करने की ऐसी भगदड मची कि सामाजिक रिश्ते एक बीती बात बन गये। माताओ ने अपने बच्चो को छोड दिया और भूख प्यास से तडपते मरामरिचिका के भ्रम मे जहाँ जिसे सूझा आसरा लिया ग्वार की सूखी फलियाँ विलास की वस्तु बन गयी। वृक्षो की छाल और घास के कांटो मे मिलने वाला अनाज कण खाने को मजबूर हुए। शासनतन्त्र नाम की कोई चीज नही थी। मानव शरीरो के खून का अन्तिम कतरा तक हजम करने की गिद्ध दृष्टि वाले शासक इस घोर अकाल की स्थिति मे सहयोग की बजाय भूख से तडपते लोगो से कोसो दूर जश्न मनाते रहे।

प्राकृतिक और मानवीय विपदाओ से पहले से टूट चुका यह ढाका परिवार सन् 1899 के अकाल की मार को न सह सका। सारा देवी और पडाव न बदल सकी। और मेलणियाँ मे सारजगत को छोड अनन्त की ओर चल दी। सारा की कोख का फल अपनी जननी के अन्तिम सहारे को खोकर भटके हुए जहाज के मानिद अनिश्चित राहो पर बढ गया।

स्वामी जी के बचपन की इस घटना को उनके परम भक्त श्री खूबचन्द बाटिया ने अपनी सजीव कविता मे क्या खूब बाधा है—

> स्वामी केशवानन्द की यश गाथा कोई क्यो कहेगा जुबानी।
> वह मगलुणा का बाल अकिंचन, था अनकही एक कहानी।।
> मरुधरा का वह अनगढ हीरा नस्ल न जिसकी पहचानी।
> काल पृष्ठ पर छोड दी जिसने, अपनी अमिट निशानी।।
> थी ललक बहुत पढने की मनमे, किन्तु रोटी बनी पहली।
> बिन साधन शिक्षा मिल न सकी, रह गयी अबूझ पहेली।।
> मनकी कुठा से उपजी दृढ निश्चय की अजब कहानी।
> अबोध बालक घर छोड चला, बढ गया रहा अनजानी।।

अनेक श्रद्धालुओ ने इस घटना को स्वामी जी का गृह त्याग बताया है, क्योकि स्वामी तो प्रारम्भ से ही परीव्राजक रहे हैं इन्होने जीवन पथ पर आने वाले पडावो को कभी अपना स्थायी घर माना ही नही या प्रकृति ने सदा आगे बढाकर नरोत्तो न नारियो के कल्याणार्थ उन ऊँचाईयो तक पहुँचने के लिए प्रवृत्त किया। अत गृह त्याग का प्रश्न ही नही उठता।

2

चरवाहे से महापुरुष

महात्मा बुद्ध ने शवयात्रा का दृश्य देखकर सन्यास ले लिया था। कुछ इसी तरह की घटना घटी जब गाँव केलणिया मे गाय चराते बीरमा को रास्ता दिखाने के लिए एक साधु वेशधारी पवित्र आत्मा उत्तरदिशा की ओर गुजरी थी। घोर अंधविश्वासो से जकड़ा बीरमा का ऊपरी मन उस दृश्य को देखकर डर गया। क्योंकि किंवदंतियाँ थी, कि साधु लोग अपनी झोली मे डालकर बच्चो को ले जाते हैं। लेकिन शायद बीरमा के शरीर पर जमी अन्धविश्वासो की परत के परे आत्मीय चेतना ने उस दृश्य का अर्थ समझ लिया था, और विधाता के लेखानुसार अपना निर्धारित रास्ता चुन लिया। माता सारा के न रहने से केलणियाँ में स्वामी जी का कोई लगाव न रहा। सवत् 1956 (सन् 1899) की बात है कि स्वामी जी केलणियाँ से प्रस्थान के दिन म ज्यादा स्पष्ट तो नही पर नोहर, सिरसा भटिण्डा गिदड़बाहा, मलोट, अबोहर, पजकोशी और आखिर मे डूमियांवाली गाँव (पजाब) मे जाकर ठहरे, यह वह समय था कि मरुस्थल के अकाल पीड़ित क्षेत्रो स बीरमा की तरह स अनेक अकाल के मारे जवान और बालक पजाब की ओर रोटी पानी की तलाश मे आ रहे थे। धर्म प्रचारकों के लिए यह स्वर्णिम मौका था। इन्सान की भूख का फायदा उठाकर चाहे उसे हिन्दू से मुसलमान और हिन्दू स ईसाई बनालो या उसका धर्म छीनलो उसके लिए रोटी ही उसकी अवस्था म धम होता है ऐसे मोके मे ईसाई मिशनरीज एव मुल्ला मौलिवियो ने ऐसे रोटी के जरूरतमन्द बालको को अपने मजहब में रखने के भरसक प्रयास किये। आर्य समाज न पजाब मे अनेक आंधियाँ झेली हैं, इस मौके पर भी हजारों लाखों बच्चों के धर्म की रक्षा आर्य समाजियो ने की। बीरमा का *डूमियांवाली के चौधरी टेकूरामजी वैद्य* ने प० गगाराम जी के सहारे आर्य समाज द्वारा फिरोजपुर मे सचालित अनाथालय भिजवा दिया। अनाथालय मे रोटी के साथ पढ़ाई के भी सर्व प्रथम दर्शन बीरमा को हुए। ज्ञान की ललक ने बीरमा को और आगे बढ़ने के लिए प्रवृत किया और चार वष बाद ही बीरमा न अनाथालय छोड अपनी मजिल की राह पकड़ी। पैदल कष्ट साध्य सफर करते हुए भटिण्डा, अबोहर होते हुए फाजिल्का पहुच गये। गुरु ग्रन्थ साहब के पाठी एक सिख सज्जन और भगत

अब वे उसके विद्याध्ययन में हर सम्भव सहयोग करने लगे। हरिद्वार उन दिनो सस्कृत शिक्षा का बडा केन्द्र हुआ करता था। विद्याग्रहण हेतु हरिद्वार प्रवास के दौरान स्वामी जी के जीवन मे एक अविस्मरणीय घटना घटी जिसे गगा मैया का जीवन वरदान हम कह सकते हैं। स्वामी जी के ही शब्दो मे"----

"जब मैं हरिद्वार मे पढता था, उस समय के नियम के अनुसार गुरु आश्रम हेतु जगल से लकडियाँ लाते थे। हम लोग ऊँचाई की ओर चले जाते वहाँ जंगल म कोई मोटा वृक्ष काटकर गगा मे डाल देते एवं उसके सहारे पीछे तैरते आते और उसे बहाव में रखते। यदि ऐसा न किया जाये तो वृक्ष किसी किनारे पर रुक सकता है, एक दिन दोपहर मैंने एक बडा पेड हरिद्वार से दस मील दूर काफी ऊँचाई पर गगा में डाला, सर्दी का मौसम था गगा का बहाव भी तेज था, मैं भी गगा मे कूद गया। पेड को मैंने बहाव के रुख कर दिया परन्तु दो मील जाने पर वह मेरे से बेकाबू हो गया। हमारा एक साथी बडा होशियार था, वह बहते पेड पर बैठकर भी चला आता था। हम मे आगे निकल गया। पेड धार मे ऐसा फँसा कि कभी इस किनारे तो कभी दूसरे किनारे। दिन छिप गया। गुरु आश्रम पर प्रतीक्षा होने लगी मैंने अपने धैर्य को नही छोडा और न पेड को ही। पेड को छोडने का अर्थ था जान से हाथ धोना आखिर पेड धारा मे आ गया भगवान जाने मुझमे कितनी शक्ति आ गयी, आखिरी पहर रात गये मे गुरु आश्रम पहुँचा। कितने खुश हुए, मुझे जीवित देखकर उस दिन पहली बार मैंने चाय पी। फिर कुछ देर बाद कहने लगे धैर्य और उत्साह का टूट जाना ही मौत थी परन्तु पाँच घन्टे इस सघर्ष मे यह ख्याल ही नही आया कि मैं मर सकता हूँ।

कपा देने वाला पानी हिमालय से उतरती तीव्र ढलानो पर गरजती गगा की धारा, लठा पकडे बीरमा मानो साक्षात काल के गाल की ओर बढ रहा हो। मौत से बेखबर अपनी मजिल पर आँखें टिकाए बीरमा को गगा की भीषण लहरें और भँवर भी लील न सके। वह बीरमा जो पानी की बूँद-बूँद को तलाशता गगा मैया की पाक गोद मे आया था, भला मर कैसे सकता था। गगा मैया की अग्नि परीक्षा और उसका आशीर्वाद स्वामी जी को जीवन भर खतरनाक मोडो पर मजिल की ओर इशारा करता रहा।

परिव्राजक केशवानन्द जी के लिए पूरा विश्व ही घर था। अत वे घर के किसी विशेष कोने के होकर न रहे। एक डेढ वर्ष बाद हरिद्वार मे सस्कृत अध्ययन के बाद स्वामी जी फिर अपने गुरु के चरणों मे फजिल्का आ गये स्वामी जी अपने साधु जीवन मे कठोर साधना, ज्ञानार्जन और दुनियाँ को देख परखकर एक कर्मयोगी का रूप धारण कर चुके थे। उनके व्यक्तित्व मे सत्य मानव कल्याण और सज्जनता की झलक दिखाई देने लगी थी।

अभिमान सुरापान गौरव घोर कौरवम्।
प्रतिष्ठा सूकरी विष्ठा त्रय त्यक्त्वा सुखी भवत्॥

अर्थात "घमण्ड करना शराब पीने की तरह है, दुनिया की इज्जत घोर नरक के बराबर है। और प्रतिष्ठा सूअर के पाखाने के समान। इन तीनों को छोड़ कर मनुष्य सुखी हो। किसी कवि का यह उद्धरण स्वामी जी को समझने का सूत्र बन चुका था।

हरिद्वार से लौटकर कुछ दिन ठहरे थे कि इस अनथक यात्री के मन में दुनियाँ को देखकर अपने अनुभवों से मानव कल्याणार्थ अपना जीवन लगा देने की भावना प्रबल हो उठी। अब स्वामी जी अखबार पढने लगे थे। यह वह जमाना था जब उदारवादी स्वतन्त्रता संग्राम की जंग से हट चुके थे और बंगाल विभाजन के बाद देश में उग्रवाद की हवा ने सम्पूर्ण वातावरण को गर्मा दिया था। आश्रम से हरि के पतन होते हुए अमृतसर पहुँचे वहां मौका मिला लघुकौमुदी पढने का अमृतसर से सिंध होते हुए क्वेटा, जेकोबाबाद चमन और सक्खर होते हुए फाजिल्का पहुँचे। स्वामी जी की यह यात्रा साधु वेश में उस क्षेत्र की एक-एक रचना, जन जीवन, रहन-सहन परम्पराओं को सक्षम दृष्टि से परखने वाले राष्ट्र उद्धारक के रूप में थी।

इस यात्रा का वर्णन भी प्रसंग वश स्वामी जी ने एक बार किया था 'मैं करांची से जघशाई दो दिन में पैदल पहुँचा घूमते घुमाते सिंध, जकोबाबाद, सक्खर और चमन तक चला गया। वहाँ मुझे द्वारका जाने वाले एक जटा जूट सन्त मिल गये। बड़ी रेल की पटरी के नीचे के लोह के स्लीपर का एक टुकड़ा हमे मिल गया। लाल चावल के आटे की रोटी किसी प्रकार इंजन के द्वारा छोड़े हुए कोयलों पर या घास फूंस जलाकर जैसे भी कच्ची पक्की रहती खा लेते। यह इलाका कुछ अच्छा नहीं था।

सक्खर में एक बार बड़ी विचित्र घटना घटी मैंने एक गृहस्थी के दरवाजे पर भिक्षा के लिए आवाज लगाई। गृहणी उस समय रसोई में बैठी मांस काट रही थी। उसने मुझे दो ठण्डी रोटी लाकर दी। मैंने उसके आंगन में बंधे पशुओं को देखकर कहा —"माई। छाछ हो तो दे दो।" वह बरतन में छाछ ले आई कहने लगी "बरतन करो" मैंने कहा—"माई बरतन तो मेरे पास नहीं है तुम अपने बरतन दे दो, वापिस दे दूँगा। इस पर उसने कहा "बाबा तुम्हारी जाति क्या है।" 'मैंने कहा—"माई तुम्हारी रसोई में यह जो मुर्दा मांस पड़ा है उससे तो मेरी जाती अच्छी है।"

निश्चय ही उस समय स्वामी जी के मन में साधु की जाति पूछने का प्रतिवाद उभरा था। संकीर्णता का दायरा लांघ कर अब स्वामी जी सच्चे साधु और मानव बन चुके थे। अकाल रूपी कंस की काठरी से मुक्त होकर, स्वामी कुशलदास के पावन चरणों में आशीर्वाद लेकर गंगा मैया की अमृतधारा के आलाढन से गुजर कर, ज्ञान की प्रतीक मां सरस्वती को हृदयंगमकर वे दुनियाँ देखने चले थे, जबकि गृहणी खून सने हाथों से उस तपस्वी से उसकी जाति पूछ रही थी। भला हो उस

अज्ञात अज्ञानी गृहणी का जिसके घोर अन्धकार को इस क्षेत्र का घोर अन्धकार समझकर स्वामी जी ने अपना जीवन लाखो करोड़ो लोगो के तम को दूर करने के लिए होम कर दिया।

स्वामी जी सिन्ध और मुल्तान की यात्रा से लौटकर फिर अपने प्रकाश स्तम्भ फाजिल्का आ गये। यह सन् 1908 की बात है। इस वर्ष सम्पूर्ण उत्तरी भारत मे मरुभूमि सहित भारी वर्षा हुई। मरुस्थल में पानी जीवन दायी और खुशियों का एक मात्र कारण समझा जाता है। रेतिल टीलो मे पानी के आगमन से पूरा वातावरण चित्रित सा हो जाता है। कठोरताओं के मध्य कोमल घास उभरती है। असख्य प्रकार के पक्षीयो का कलरव शास्त्रीय सगीत की ध्वनी देता है। पशु मस्ती मे आकर अपनी खुशी हुँकार के माध्यम से जाहिर करते हैं। ग्वालों की किलकारियाँ आवाज और पशुओं के गले मे बधे टोकरें, साज बनकर पूरे मरुस्थल का एक रगमंच का रूप दे देते हैं। जिस व्यक्ति ने अत्यन्त कठोरताओं के बीच ऐसे दृश्य देखें हैं, उसके लिए वह स्वर्ग का आनन्द है। स्वामी जी को अपनी जन्मस्थली थार की याद आते ही उस तरफ खिंचे चले गये। नोहर से लेकर रतनगढ और बीकानेर तक बालू रेत के पहाड़ो और उन पर हरियाली की लगतार चादर उसके साथ अठखेलियाँ करता आनन्दमयी जन जीवन का दृश्य अपने महाकाल के बाद वे प्रथम बार देख रहे थे। उन्होने इस भ्रमण के दौरान थार अमृतफल मतीरे का स्वाद चख कर जीवन भर के लिए अपनी जीभ को मीठा कर लिया था। इसके बाद विलासिता की प्रतीक मिठाईयाँ उनको फीकी लगने लगी थी, लोगों के घरो में बचा हुआ भोजन लिए चरणामृत होता था।

फाजिल्का मे गुरु चरणों मे बैठकर जो प्रकाश स्वामी को मिला था, वह चुम्बकीय शक्ति के मानिंद उन्हें हर बार वहाँ खींचता रहा। मरुधरा की यात्रा से लौटकर छप्पन की कालिमा पर प्रकृति द्वारा कैनवास पर की गई पेन्टिग को देख देख कर प्रफुल्लित हुआ मन फाजिल्का आते ही सत कुशलदास जी के महा प्रयाण के कारण दारुण दुख से घिर गया। लेकिन स्वामी जी ने गीता का पाठ किया था, व अब दुख सुख को धूप छाव का खेल समझते थे, अत गुरु आश्रम जो सतलज की बाढ ने अस्थाई रूप से क्षत-विक्षत कर दिया था, को सजाने सँवारने लग गये। सत कुशलदास जी अपने शिष्य केशवानन्द का अपनी परम्परा का सच्चा साधु जानकर अपनी सारी जिम्मेदार्रियाँ और गुरु गद्दी उनके नाम विधिवत कर गए थे। उस जमाने मे भी गुरु गद्दी प्राप्त करने के लिए आश्रमों मे खिचतान चलती थी, गुरु गद्दी प्राप्त करने वालो को, समाज मे इज्जत के अलावा लाखो की सम्पति भी मिलती थी। लेकिन स्वामी केशवानन्द जी वह सब उनकी निष्ठा सच्ची साधु परम्परा और विश्वास के कारण अनायास हो गयी। साथ ही अपने गुरु भाईयो को इस उत्तराधिकार के कारण ईर्ष्या के बजाय खुशी हुई, क्योंकि स्वामी जी अपने गुरु की भाँति गुरु भाईयो से भी सच्चाई का रिश्ता रखते थे।

अब स्वामी जी को आभास हो गया था कि उन पर बड़ी जिम्मेवारियां आ गयी है, अब वे बेसहारा और अनाथ न रह कर बेसहारों के लिए सहारा और अनाथों के नाथ बनने की स्थिति में थे। और यहीं से शुरू होता है वह अध्याय, वह करिश्मा जो स्वामी जी को उनके द्वारा सम्पादित कार्यों के कारण इतिहास की अमर धरोहर बना देता है। वे चाहते तो फाजिल्का आश्रम उनके लिए भौतिक साधनों का भरपूर खजाना था वे अपनी तपस्या को भूलकर कष्टों से बदले अपना जीवन आम साधुओं की तरह गांजा-भांग पीकर, चेले-चपाटियों से मालिश करवाकर, ऐशो आराम का जीवन जी सकते थे लेकिन उन्होंने मानव के कष्ट आंखों से ही नहीं देखे बल्कि स्वयं अनुभव किये थे। उनके मन में दर्द था, उस कराहती हुई मानवीयता के लिए जो प्रकृति के अभिशाप को झेलने के साथ साथ शासनशाही के सहयोग से सात समुद्रपार लोगों के हाथों अकथनीय कष्ट झेल रही थी। स्वामी जी को सब कष्टों के निवारण एक ही उपाय सूझ रहा था।

"तमसोमा ज्योतिर्गमय" और इसके लिए उन्होंने भगवा वेश का लाभ उठाते हुए, अपने स्वप्न साकार करने प्रारम्भ किये। (सन् 1911) मानव इतिहास की वह तारीख है, जब अंग्रेज हुकूमत अपने पांव स्थाई तौर पर कलकत्ता से दिल्ली में जमा चुकी थी, दूसरी ओर एक गेरूवें वस्त्रधारी उनके पांवों से मिट्टी खिसकाने हेतु एक बहुद्देशीय संघर्ष का आयोजन कर रहा था। यह अकेला सिपाही रूढ़ीवादिता परतंत्रता, अशिक्षा रूपी दानवों को परास्त करने हेतु समाजसुधार साम्प्रदायिक सौहार्द, स्वतन्त्रता और शिक्षा रूपी अमोघ शास्त्रों को तराश रहा था।



3
स्वतन्त्रता सेनानी

गुरु गद्दी स्वामी जी को बन्धन महसूस होने लगी थी, अत सन् 1916 मे गुरु गद्दी अपने गुरु भाई श्यामदास को सौंपकर राष्ट्रोत्थान एव समाजोत्थान के कार्यों मे लग गये। राष्ट्रीय कांग्रेस के समन्वयकारी दृष्टिकोण के फलस्वरूप कांग्रेस मुस्लिम लीग एक जुट होकर अंग्रेजी हकूमत के खिलाफ लड़ने की तैयारी कर रही थी। बगभग के बाद लगातार माहोल गर्माता रहा, आजादी के दीवानो मे नित नया जोश बढ रहा था, ऐसे मे जलियावाला काण्ड भी हुआ जिसकी गर्मी स्वामी जी तक भी पहुँची। इस बीच स्वामी जी आर्य समाज के जलसो मे प्रबल राष्ट्रीय भावना से साक्षात हो चुके थे कांग्रेस के जलसों मे भी स्वामी जी ने जाना प्रारम्भ कर दिया था। स्वामी जी के ही शब्दो म कोई ऐसा जलसा या जुलूस नही होता था, जिसमे हम शामिल न हो किस तरह हममें उत्साह था हमने अपने विदेशी कपडे पजामे विदेशी साधन सामग्री की होली जलाई। मैंने लालाजी (पजाब केसरी लाला लाजपत राय) क भाषण सुने हैं क्या शेर की तरह गरजता था।

अहमदाबाद अधिवेशन कांग्रेस मे मेरी खान अब्दुल गफ्फार खाँ से भेंट हुई थी। वह हिन्दुस्तानी बोल लेते थ। इस लम्बे चौडे राष्ट्रवादी आदमी का मुस्कारता चेहरा जनता पर बडा प्रभाव डालता था। हम लोग खुद ही गाधी क आदमी कहलाते थे और खुद ही भाषण देते व प्रचार करते। लोग हमे दरवाजो की ओट से देखते, शाम को हमारे भाषण दूर से खडे खडे सुनते हमारी मण्डली मे ब्राह्मणो का एक लडका राजेन्द्र भी था। ओह ! क्या शरीर था उसका, क्या गर्ज थी। एक बार चारो ओर पुलिस घेरे खडी थी भाषण हो रहा था कि अचानक न जाने राजेन्द्र को क्या सूझा खडे होकर बडी गर्ज से भारत माता की जय का नारा लगाया। औरतों की गोद से बच्चे गिर गए, सिपाहियो के हाथो से बन्दूकें गिर गईं जिस धर्मशाला मे भी हम ठहरते पुलिस वाले धर्मशाला के मालिक की किस प्रकार की बेइज्जती करते हमने अपनी आँखो से देखा। एक बार एक धर्मशाला मे ठहराने की भूल के लिए धर्मशाला के मालिक ने पुलिस से माँफी माँगी। उसने हमे हटाना चाहा हमने साफ कह दिया हम यही रहेंगे और फिर धर्मशाला खाली करदी। कई दिन हम वृक्षो के नीचे सोये। आस-पास के गाँव से राजेन्द्र रोटी ले आता था। पुलिस ने हमे भाषण

नही करने दिया। हम लोग पूरी शान्ती से काम कर रहे थे, परन्तु पुलिस के कारण लोग तंग आ चुके थे। अन्त में पुलिस ने कहा आप भाषण करके यहाँ से चले जायें। हमारे वहाँ धुंआंधार भाषण हुए। स्वराज्य के इतिहास का एक दिन का इतिहास भी इतना बड़ा है कि दुनियाँ के कागज समाप्त हो जायें वह समाप्त होने वाला नही। हम स्वराज्य की किताबें, हैण्डबिल, पर्चे बाँटते, दो-दो-तीन-तीन गाँव एक-एक दिन में चले जाते कभी थकने का नाम नही – क्या मस्ती से गाते थे "चकने फिरंगियों डेरा आए। राज नही हो रहणा तेरा।"[1]

राजनीति मे स्वामी जी पर महामना पंडित मालवीय जी का गहरा प्रभाव पड़ा। सन् 191· मे कांग्रेस के दिल्ली अधिवेशन मे जो मालवीय जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ था स्वामी जी को शामिल होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। स्वामी जी ने अधिवेशन के बारे मे बताया था –"कि मुझे अच्छी तरह याद है दिल्ली मे पंडित मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता मे कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। रालेट एक्ट उन दिनो मुख्य मुद्दा था। पण्डित मदन मोहन मालवीय कितने गजब का विद्वान था, आश्चर्य होता है कितना निर्भीक सिंह की तरह गरजा था""अपने आपको सबसे बड़ा भिखारी कहने वाला, उजले चिट्टे कपड़े, सिर पर साफा, माथे पर चन्दन की गोल टीकी लगाने वाला मालवीय बड़ा देश भक्त था"।

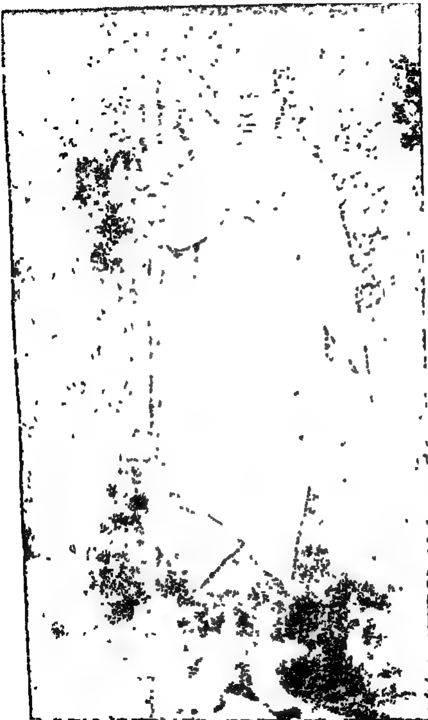
दिल्ली अधिवेशन ने स्वामी जी को स्थायी कांग्रेसी कार्यकर्ता बना दिया था, लेकिन कभी भी वे कांग्रेस के विधिवत सदस्य नही बने लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन के हर आह्वान पर वे अगुआ रहे। महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन के सिलसिले मे उन्हें फिरोजपुर जेल मे बन्दी बना लिया गया लेकिन इनके खिलाफ कोई गवाही नही होने के कारण सजा देने मे परेशानी हो रही थी। गवाह बनी इन्ही की डायरी जिसमे अंकित था।

"जन्मकोटि सो रगर हमारी।
बा हूँ शम्भु न तु रहूँ कुमारी॥"

सहायक मजिस्ट्रेट को इस दोहे का अर्थ खुफिया पुलिस के स्टीफन नामक अंग्रेज ने बताया कि यह साधु कहता है—चाहे मुझे कितने ही जन्म लेने पड़े मैं अंग्रेजो को भारत से निकाल कर ही छोड़ूंगा। मजिस्ट्रेट ने स्वामी से डायरी के बारे मे पूछा और साथ ही माफी माँग लेने पर रिहाई का लालच दिया लेकिन इस तपस्वी देश भक्त के लिए यह प्रलोभन तुच्छ बात थी। स्वामी जी ने अहमभाव मे कहा—यह डायरी मेरी है उसमे लिखा दोहा मेरी भावना का प्रतीक है और अगर मुझे रिहा कर दिया गया तो मैं फिर उसी आन्दोलन मे शरीक हो जाऊँगा। मजिस्ट्रेट ने इस जवाब के जवाब मे 2 वर्ष की कड़ी सजा सुनाई।

---

1. फिरंगी तेरा डेरा भारत से उठाले, तेरा राज्य नही रहना है।



स्वामी केशवानन्द जी सन् 1923 मे प्रथम बार जेल से छूटने के पश्चात्

नही करने दिया। हम लोग पूरी शान्ती से काम कर रहे थे, परन्तु पुलिस के कारण लोग तग आ चुके थे। अन्त मे पुलिस ने कहा आप भाषण करके यहाँ से चले जायें। हमारे वहाँ धुंआंधार भाषण हुए। स्वराज्य के इतिहास का एक दिन का इतिहास भी इतना बडा है कि दुनियां के कागज समाप्त हो जायें वह समाप्त होने वाला नही। हम स्वराज्य की किताबें, हैण्डबिल, पर्चे बाँटते, दो-दो-तीन-तीन गाँव एक-एक दिन मे चले जाते कभी थकने का नाम नहीं – क्या मस्ती से गाते थे "चक्से फिरंगियां डेरा चाए। राज नही हो रहणा तेरा।"[1]

राजनीति मे स्वामी जी पर महामना पंडित मालवीय जी का गहरा प्रभाव पड़ा। सन् 191 मे कांग्रेस के दिल्ली अधिवेशन मे जो मालवीय जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ था स्वामी जी को शामिल होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। स्वामी जी ने अधिवेशन के बारे मे बताया था —"कि मुझे अच्छी तरह याद है दिल्ली मे पंडित मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता मे कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। रालेट एक्ट उन दिनो मुख्य मुद्दा था। पण्डित मदन मोहन मालवीय कितने गजब का विद्वान था, आश्चर्य होता है कितना निर्भीक सिंह की तरह गरजा था""अपने आपको सबसे बडा भिखारी कहने वाला, उजले चिट्टे कपडे, सिर पर साफा, माथे पर चन्दन की गोल टीकी लगाने वाला मालवीय बडा देश भक्त था"।

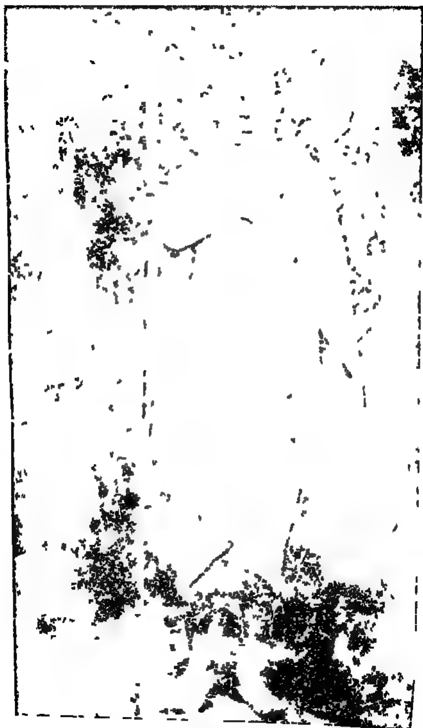
दिल्ली अधिवेशन ने स्वामी जी को स्थायी कांग्रेसी कार्यकर्त्ता बना दिया था, लेकिन कभी भी वे कांग्रेस के विधिवत सदस्य नही बने लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन के हर आह्वान पर वे अगुआ रहे। महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन के सिलसिले मे उन्हें फिरोजपुर जेल मे बन्दी बना लिया गया लेकिन इनके खिलाफ कोई गवाही नही होने के कारण सजा देने मे परेशानी हो रही थी। गवाह बनी इन्हीं की डायरी जिसमे अंकित था।

"जन्मकोटि लो रगर हमारी।
बा हूं शम्भु न तु रह हूँ कुमारी॥"

सहायक मजिस्ट्रेट को इस दोहे का अर्थ खुफिया पुलिस के स्टीवन नामक अग्रेज ने बताया कि यह साधु कहता है—चाहे मुझे कितने ही जन्म लेने पड़े मैं अग्रेजो को भारत से निकाल कर ही छोड़ूंगा। मजिस्ट्रेट ने स्वामी से डायरी के बारे मे पूछा और साथ ही माफी माँग लेने पर रिहाई का लालच दिया लेकिन इस तपस्वी देश भक्त के लिए यह प्रलोभन तुच्छ बात थी। स्वामी जी ने अहमभाव मे कहा — यह डायरी मेरी है उसमें लिखा दोहा मेरी भावना का प्रतीक है और अगर मुझे रिहा कर दिया गया तो मैं फिर उसी आन्दोलन मे शरीक हो जाऊंगा। मजिस्ट्रेट ने इस जबाब के जबाब मे 2 वर्ष की कड़ी सजा सुनाई।

---

1. फिरगे तेरा डेरा भारत से उठाले, तेरा राज्य नहीं रहना है।



स्वामी केशवान द जी सन् 1923 म प्रथम बार जेल से छूटने के पश्चात

झोली फैला रखी थी और वे एक ही रट लगाये जा रहे थे—"साईं रहम साईं रहम"। मैंने उनसे कहा कि मैं कुछ नहीं कहता और जो उसे मारने को तुले हुए हैं उनसे भी मना कर दूंगा। प्रात काल जेलर के पास रिपोर्ट पहुँची। उसने मुझे बुलाकर बातें पूछीं। मैंने सच सच बतला दिया। जेलर को बड़ा क्रोध आया। उसने उस पठान को बुलवा लिया और सिपाहियों को कहा कि इसकी वर्दी उतरवा लो। वर्दी उतरवाने का अर्थ बड़ी सजा देना होता है। मैंने जेलर से कहा कि उसे कोई सजा न दी जावे। जेलर ने कहा कि इस अपराध की सजा मिलनी ही चाहिए और उसकी वर्दी उतरवाली। वह बेचारा थर-थर कांपने लगा। तब मैंने जेलर से फिर कहा कि यदि आप इसे सजा देते हैं तो मैं भूख हड़ताल कर दूंगा। तब कहीं जाकर उस पठान का पीछा छूटा।

"...... जेल की कोठरियां इतनी छोटी होती थी, कि आदमी उसमें सीधा लेट भी नहीं सकता था। आस-पास भारी गदगी रहती थी। उनके पास से एक गन्दी नाली जिसमें कैदी पेशाब करते रहते थे। कई बार बदबू से तग आकर मैं उसे हाथ से साफ करने लगता था लोग इसे बुरा मानते थे, मुझे जवाब देना पड़ता कि पेशाब को नाक से सूघते रहने से तो हाथ से साफ कर देना अच्छा है।"

"...... बदमाश लागरी रोटियां कोठरी में फेंक जाते थे। गर्म दाल इस बुरी तरह रोटी पर डालते कि हाथ जल जाते। हमारे साथ ही कुछ राजनैतिक कैदी सिख थे। ज्ञानी शेरसिंह पहले उदासी साधु था, फिर सिख हो गया था वह अग्रणी था। वह भी हमारे साथ राजनैतिक कैदी था। वह 8-10 नारे लगाने वालों का मुखिया था, कोई अधिकारी आ जाता, कोई आवाज होती, कोई पानी पीने का बर्तन गिर जाता तो वे पूरे जोर से जो बोले सो निहाल, 'सत्य श्री अकाल, इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा लगा देते थे। किसी अधिकारी के आने पर वे तब तक नारे लगाते जब तक कि अधिकारी लौट न जाये। जेलर ने तग आकर उन्हें सबसे रद्दी क्लास में भेज दिया। मैंने भी जेलर के पास जाकर कहा कि मुझे भी उन्हीं के साथ भेज दो उसने कहा स्वामी जी आप जैसा कैदी मैंने नहीं देखा आप जेल के सारे कानून कायदे मानते हैं फिर ऐसा क्यों कहते हैं। हम सब एक साथ काम करते हैं और एक साथ ही जेल आये हैं। हम उनके साथ रहेंगे नहीं तो वे सोचेंगे स्वामी डरता है। जेलर चकराया और हम अपना बिस्तर समेट कर उन लोगों के साथ चले गये।......"

मिर्चों की बोरियाँ पहन कर, सड़ांध वाली कोठरियों में बिना सोये कई-कई दिन रात बिता कर, अपमान और सजा सहकर भी स्वतन्त्रता सेनानी स्वामी केशवानन्द कभी अपने मार्ग से हटे नहीं। पठान की मार खाकर भी उस पर रहम कर दी। शायद स्वामी जी दो मोर्चों पर एक साथ लड़ने के इच्छुक नहीं थे, उनका लक्ष्य था आजादी उसको छीनने वाले अंग्रेज से लड़ने का वक्त था वह, दो गुलामों का आपस में लड़ना क्या उस वक्त शोभा देता ?

जेल यात्राओं से स्वामी जी की यह धारणा पक्की हो गयी थी कि केवल अंग्रेजों से छुटकारा पाकर ही सच्ची आजादी नहीं मिल सकती। बल्कि अज्ञानता और घोर अन्धविश्वास से छुटकारा पाना होगा। ये प्रयास कैदियों को हिंदी अक्षर ज्ञान सिखाना प्रारम्भ कर उन्होंने अपनी मुहिम शुरू करदी थी।

स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं शहीदों से स्वामी जी का आत्मीय लगाव रहा, वे अपने आपको शहीदों का पुजारी कहा करते थे। अपने लेखों, अपने प्रकाशनों एवं वाणी मे वे शहीदों को शत् शत् प्रणाम किया करते थे। आगे चलकर जब सर छोटूराम स्मारक संग्रहालय बनाया गया, तो उसके प्रवेश द्वार पर झाँसी की महा रानी लक्ष्मीबाई का उसी आकार की घोड़े सहित लकड़ी की मूर्ति बनवा कर लग- वाई। संग्रहालय मे एक विशेष स्वतन्त्रता सेनानी कक्ष बनवाया जिसमे आज भी शहीदों के दुर्लभ चित्र उनके साहसिक कारनामो को साक्षात कराते हैं। तत्पश्चात् स्वामी जी की 75 वी वर्ष गाँठ पर, उनकी सेवाओं को चिर स्थाई रखने हेतु राजस्थान के तत्कालीन मुख्य मंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने प० बनारसी दास चतुर्वेदी एवं डा० देवराज द्वारा सम्पादित एवं चौधरी कुम्भाराम आर्य के द्वारा प्रकाशित स्वामी केशवानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया था।

स्वामी जी ने इस ग्रंथ की अनुमति तब दी थी जब उन्हें यह आश्वासन दिया गया कि ग्रंथ का अधिकांश भाग भारत के महान् क्रान्तिकारियो पर होगा। स्वामीजी ने क्रान्तिकारियो की याद की अभिलाषा से खुशी जाहिर की थी। ग्रंथ मे भारत के ज्ञात शहीदो की छाया चित्र एवं उनका जीवन कृत्य प्रकाशित किए गये।

जला अस्थियाँ अपनी सारी
छिटकाई जिनकी चिनकारी
जो चढ गये पुण्य वेदी पर
लिए बिना गदन का मोल
कलम आज उनकी जय बोल
अधा चकाचौंध का मारा
क्या समझे इतिहास बिचारा।
साक्षी है उनकी महिमा के
सूर्य चन्द्र, भूगोल खगोल।
कलम आज उनकी जय बोल।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के किसी पन्ने पर स्वामी केशवानन्द का नाम नहीं आया। प्रचार प्रसार से दूर यह साधारण सा किन्तु गाँधी का सच्चा सेवक रचनात्मक ढंग से निश्चित वैचारिक भूमिका से सोच समझ कर स्वतन्त्रता आन्दोलन मे कूदा था। इनका कार्य क्षेत्र ग्रामीण अंचल था और इतिहासकारो की प्रथम दृष्टि नीर

[ग्रामीण अचल] के बजाय कँगूरों [शहर] पर पड़ती है, इसलिए भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के साखी केशवानन्द जो रास्ते बना गये राष्ट्रीय स्तर पर कम याद किये गये। लेकिन भारत का चप्पा-चप्पा कण-कण जीव मात्र उस वीर सेनानी को सदियों तक अपने मे सजोये रखेगा। तभी तो अन्धे कवि खुशदील गा उठे थ—

देखा न कोई देवता, केशवानन्द महान सा,
लाखों सही मुसीबतें, सोचा भला जहान का।
पहले तो कुछ गुजार दी जेलों मे अपनी जिन्दगी,
किस्सा मैं क्या सुना सकूँ योगी की ऊँची शान का।

4

राष्ट्र भाषा हिन्दी सेवी स्वामी जी

गुरु गद्दी के साथ ही स्वामी जी को आश्रम का अर्थ साधन भी प्राप्त हुआ था। स्वामी जी ने उस धन से 1911 ई० मे आश्रम मे ही वेदान्त पुष्पवाटिका नामक पुस्तकालय की स्थापना कर घोर अन्धकार में ज्ञान दीप जलाया। सन् 1912 मे वही पर एक सस्कृत पाठशाला का भी शुभारम्भ किया। इससे पूर्व वे भारत के शैक्षिक सस्थानो को अपनी पैनी दृष्टि से देख चुके थे, और अपने मन मे वैसा ही स्वप्न इस क्षेत्र के लिए सजोये हुए थे। इस अवधि मे उन्हे यह आभास हो गया था कि हिन्दी का स्थान सर्वोपरि है और यही एक ऐसा माध्यम बन सकती है जिसके जरिये भारत माता की आवाज की लय में लय देकर भारत भूमि को विदेशी जुए और अज्ञान अन्धविश्वास रूपी दानवो से मुक्त करवाया जा सकता है स्वामीजी ने तत्कालीन हिन्दी सेवी सस्थाओ "हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग और नागरी प्रचारिणी सभा काशी" से सम्पर्क साध लिया था।

स्वामीजी 1916 ई० मे आश्रम का भार अपने गुरु भाई को सौंपकर अपने को पूरी तरह हिन्दी सेवा मे लगा चुके थे। वे केवल आश्रम द्वारा सचालित पुस्तकालय एव वाचनालय का भार सम्भाल लिया करते थे। साथ ही फाजिल्का पुस्तकालय से हिन्दी की पुस्तकें लेकर गाँव गाँव मे लोगो को हिन्दी सिखाने एव सीखने के लिए प्रेरित करते थे। इस दौरान सन् 1917 मे पजाब के गाँव दानेवाले मे बैठकर तिलक की गीता रहस्य का गम्भीर अध्ययन भी किया और उसके कर्मयोग का जीवन में प्रयोग करने का निश्चय किया।

सन् 1918 मे अबोहर क्षेत्र मे हिन्दी प्रचार प्रसार के लिए मंच बनाया। सन् 1920 मे अबोहर मे उस महान् सस्था नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की जो भारतवर्ष मे हिन्दी सेवा के क्षेत्र में एक महान स्तम्भ बनी। इस सस्था की स्थापना मे स्वामीजी को श्री हनुमानदास जी पिलनी वाला, श्री जवाहरलाल जी टाटिया, श्री सूरजमल बजाज एव सेवा समिति के उत्साही युवको ने तन-मन, धन से सहयोग दिया। नागरी प्रचारिणी सभा अपने अनेक रचनात्मक कार्यों के द्वारा हिन्दी सेवा मे रत रही। इसी बीच स्वामी जी स्वतत्रता सग्राम मे कैद कर लिए गये। सन् 1923 मे जब जेल स छूट कर आये तो उनका पौधा नागरी प्रचारिणी सभा मुरझा

जा चुका था जिसका स्वामी जी को हार्दिक दुख हुआ। कर्मयोगी संत ऐसी असफलताओं से निराश न हुआ, और इस बार जन सहयोग से इस पौधे की जड़ें जमीन मे गहराई तक फैला दी। सभा का सीधा सम्बन्ध हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से कर दिया और सभा की सारी जमीन जायदाद की रजिस्ट्री भी हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के नाम करा दी एव नया नामकरण किया— साहित्य सदन अबोहर।

साहित्य सदन का शानदार भवन, बाग, जलाशय चारदीवारी मिलकर टैगोर की शान्तिनिकेतन का रूप धारण कर गये। सदन का प्रकाश अन्यत्र फैलने लगा और प्रोत्साहित होकर श्री गंगा नगर, एलनाबाद, मुक्तसर आदि स्थानों पर साहित्य सदन की शाखाएँ खोल दी गयी। साहित्य सदन के उद्घाटन (2 फरवरी 1929) के अवसर पर स्वामी जी ने हिन्दी भाषा का महत्व नामक पुस्तक प्रकाशित कर वितरित करवायी थी जिसमे उन्होंने लिखा था—"हमारे देश को एकता के सूत्र मे बांधने के लिए और इसमे जातीयता का भाव भरने के लिए एक राष्ट्रभाषा की आवश्यकता है और वह राष्ट्र भाषा हिन्दी ही हो सकती है। भारतवर्ष पर यह कलक की ही बात है कि वह वर्तमान काल मे अपनी भारतीय जाति की एक भारतीय भाषा नही बना सका।"""" हिन्दी प्रादेशिक भाषाओ का स्थान नही ले सकती। उसे समस्त देश और अन्तर्प्रान्तीय कार्यों मे ही प्रयोग किया जाना चाहिए हिन्दी की उन्नति और प्रचार के लिए उत्तमोत्तम ग्रन्थो का सग्रह करके पुस्तकालय और वाचनालय स्थापित किये जावें" """"सभी अपने-अपने दफ्तरो और घरेलू कामों मे हिन्दी का ही व्यवहार करें। विश्व विद्यालयो और विद्यापीठो पर हिन्दी साहित्य को उन्नत और प्रशस्त बनाने का भार होना चाहिए। "पजाब मे हिन्दी की दुर्दशा देखकर, यही पर मेरे मन मे हिन्दी प्रचार की उद्भावना हुई"""" हमारा दृढ विश्वास है कि बहुत शीघ्र ही हिन्दी का अविराम घोष यहा सर्वत्र प्रतिध्वनित होगा।"

वेदान्त पुष्प वाटिका की स्थापना से हिन्दी सेवा का ध्वज फहराने वाले इस सन्त ने जीवन पर्यन्त वह ध्वज उठाये रखा।

"यदि स्वतन्त्र सरकार इस सत की बात पर ध्यान देती तो शायद भाषा की खूनी लड़ाईयाँ जारी न रहती और अग्रेजी के मोह पास से छूटकर भारतीय आत्मा अपने उदगार अधिक मुखरित होकर प्रकट करती।"

साहित्य सदन अबोहर की गतिविधियों मे कुछ शिथिलता स्वामी जी के दूसरे जेल प्रवास के दौरान आयी लेकिन अब जनता सदन का महत्व समझ चुकी थी। संस्था ने अबोहर के निकट 15 गाँवों मे हिन्दी पाठशालाओ की स्थापना की। सदन मे आये दिन शैक्षिक आयोजन होने लगे। 2 फरवरी 1929 के उद्घाटन समारोह के बाद 24, 25, 26 सितम्बर 1933 मे जब महात्मा हंसराज जी के सभापतित्व में पंजाब प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन किया तो संस्था की

परिपक्वता सामने आयी। इसी अवसर पर पुस्तकालय सम्मेलन, कवि सम्मेलन, अध्यापक सम्मेलन, सम्पादक सम्मेलनो एवं हिन्दी प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। महात्मा हसराज जी के अलावा तत्कालीन हिन्दी विद्वानो डॉ० लक्ष्मण स्वरूप, श्री चन्द्र गुप्त विद्यालंकार, आचार्य विश्व बन्धु, श्री सन्तरामजी आदि ने स्वामी जी द्वारा मातृभाषा की सेवा मे किये जाने वाले कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

स्वामी जी की हिन्दी सेवा अब जगजाहिर हो चुकी थी। और लोग अत्यन्त रुची से स्वामी जी के कार्यक्रमो पर ध्यान देने लगे थे। साहित्य सदन की गतिविधियो और अपने मिशन की आवश्यकता के लिए स्वामी जी ने सन् 1933 मे 'दीपक' प्रेस लगाया और हिन्दी मासिक पत्रिका "दीपक" का प्रकाशन प्रारम्भ किया। अन्धेरे मे जलाया यह दीपक सालो तक स्वामी जी एव अन्य विद्वानो की सृजनात्मक भावनाओ एव उस क्षेत्र का मुख-पत्र बना रहा। हिन्दी के प्रचार हेतु दीपक प्रेस द्वारा पन्द्रह हजार वर्णमाला चार्ट गुरमुखी हिन्दी शिक्षक उर्दू, हिन्दी शिक्षक पुस्तिकायें छपवाकर ग्रामीण अचल मे बाँटी गयी। ग्राम सुधार नाटिकाएँ, विश्वग्राम, ईसप नीतिनिकुंज, बाल गोपाल, शैतान की लकडी (शराव) आदि अनेक प्रेरणा दायक सरल और उपयोगी पुस्तकें बडी सख्या मे अति अल्प कीमत पर बाँटी गयी। सम्पूर्ण उत्तर भारत के लिए साहित्य सदन अबोहर हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का परीक्षा केन्द्र भी बनाया गया। सम्मेलन स्वामी जी के नाम पर परीक्षाओ मे वरीयता प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो को रजत पदक भी देता था। यह व्यवस्था सन् 1947 तक निरतर रही। 1942 मे तो स्वामी जी को सम्मेलन ने साहित्य वाचस्पति की उपाधि प्रदान की।

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आयोजन

एक दिन जब स्वामीजी अपने कार्यों मे रतनगढ में व्यस्त थे उनके एक सहयोगी ने अखबार में छपी एक खबर की ओर स्वामीजी का ध्यान खीचा। जिसमे अबोहर मे स्वामी जी के सानिध्य मे अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आयोजन का समाचार था। स्वामी जी से बिना सलाह मशविरा किए राष्ट्र की अग्रणी हिन्दी सेवी सस्था और हिन्दी सेवियो को स्वामी जी द्वारा सस्थापित साहित्य सदन ही भारत की तत्कालीन परिस्थितियो म एक मात्र स्थान दिखाई दिया जहाँ इसका आयोजन किया जा सकता था। देश मे अग्रजो का दमन चक्र जोरो पर था और भारतीय स्वतत्रता सग्राम भी अपनी परिपक्व स्थिति में था, करो मरो और अग्रजो भारत छोडो की पृष्ठभूमि तैयार हो रही थी। हिन्दी सेवा को राष्ट्र भक्ति का माप-दण्ड समझा जाता था। स्वामी जी को यह सुयोग सयोग से ही प्राप्त नहीं हुआ बल्कि यह उनकी हिन्दी सेवा का राष्ट्रीय सम्मान था। पूना सम्मेलन के अवसर पर हैदराबाद मे हिन्दी सम्मेलन होना तय हुआ था, लेकिन निजाम हैदराबाद ने ठीक दो माह पहले अपनी असमर्थता प्रकट कर दी। ऐसी स्थिति मे एक मात्र साहसी आयोजन कर्ता और

संगठनात्मक क्षमता वाले एक मात्र व्यक्ति स्वामी केशवानन्द जी ही सम्मेलन के लिए सहारा बने।

स्वामी जी अखबार के समाचार को अपने लिए राष्ट्रीय कर्त्तव्य और आदेश मानकर सम्मेलन की तैयारी में जुट गये। यद्यपि इन दिनों वे अपना कार्य क्षेत्र बदल कर संगरिया में एक महान् संस्था के संचालक बन चुके थे, और उन पर अत्यधिक जिम्मेदारियाँ थीं, लेकिन उन्होंने सम्मेलन को शानदार तरीके से आयोजित किया। स्वामी जी की बदौलत अबोहर का साहित्य सदन एक साहित्यिक तीर्थ बन गया।

सम्मेलन दिसम्बर 1941 में आयोजित किया गया जिसके विशाल पांडाल उस क्षेत्र में पहली बार और बड़े मनोहारी दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। हिन्दी के आदर्श वाक्य उसकी शोभा बढ़ा रहे थे। लगभग ढाई हजार लोगों के लिए 7 लंगरों में भोजन की व्यवस्था की गई प्रतिनिधियों के ठहरने स्नान आदि के लिए अति उत्तम व्यवस्था की गई। विशेष बात यह थी कि इस व्यवस्था से सब लोग सन्तुष्ट होकर गये।

एक प्रदर्शनी लगाई गई जिसमें अनेक नवीन एवं प्राचीन हिन्दी कृतियाँ रखी गयीं, अनेक हस्तलिखित ग्रंथों को भी प्रदर्शनी में रखा गया। प्रदर्शनी में रखी गई हस्ताक्षर पुस्तिका में 7-8 हजार लोगों की उपस्थिति प्रति दिन पायी जाती थी।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साथ दर्शन परिषद, विज्ञान परिषद, समाज शास्त्र परिषद, साहित्य परिषद और महिला सम्मेलन का भी आयोजन किया गया।

सम्मेलन की अध्यक्षता उच्चकोटि के विद्वान पं० अमरनाथ झा ने की। इनके अलावा डॉ० भीखन लाल आत्रेय डी० लिट्, प्राध्यापक काशी हिन्दू विश्व विद्यालय, पुरुषोत्तम दास टण्डन, डा० सम्पूर्णानन्द, पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', डॉ० रामनारायण बी० एस० सी० कृषि कालेज लायलपुर, श्री भगवानदास केला वृन्दावन, श्री पं० नरदेवजी शास्त्री, पं० विद्याधरजी साहित्याचार्य, पं० नेकीराम, पं०फकीरचन्द भगवती प्रसाद जी वाजपेयी, पं० ठाकुर दत्त शर्मा, सत्य देवजी विद्यालंकार, जैसे मूर्धन्यविद्वान पधारे थे जिन्होंने अपने विद्वतापूर्ण भाषणों से राष्ट्र भाषा की महिमा का गुण गान किया एवं उसकी उपयोगिता और श्रेष्ठता का औचित्य बताया।

पं० झा ने कहा कि 'हमारा साहित्य उच्चकोटि के साहित्यों की बराबरी कर सकता है जहाँ सूर की भाव पूर्ण कविता हो, कबीर के गूढ़ और सादी भाषा के पद हों, तुलसी के ग्रन्थ रत्न हों, जहाँ केशव और पद्माकर का लालित्य और पद विन्यास हो, जहाँ बिहारी का रस और साहित्य का किसे गौरव नहीं होगा"।

अबोहर का साहित्य सम्मेलन सफल रहा। उसकी सफलता से भारत के कोने-कोने से पधारे प्रतिनिधि एवं अनेक महापुरुष प्रभावित हुए। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने साहित्य सदन के बारे में लिखा था कि "यह एक रमणीक स्थान है इसको देखकर चित्त बहुत प्रसन्न होता है कोई भी व्यक्ति एक संस्था के पीछे अपना चित्त लगाकर प्रयास करते हुए क्या कर सकता है। यह इस संस्था को देखकर के मालूम होता है। सदन का लाभ आस पास के लोग अच्छी तरह से पा रहे हैं।"

श्री मोती चन्द भार्गव, बाबा राघव दास, कृष्णकांत मालवीय, राजगुरु धीरेन्द्र शास्त्री, प० हरिभाऊ उपाध्याय ने भी साहित्य सदन को देख मुक्त कंठ से प्रशंसा की। पंजाब के दैनिक "ट्रिब्यून" ने इसे 'रेगिस्तान का नन्दन वन" लिखा था। राणा जंग बहादुर सिंह ने संस्था के सम्बन्ध में लिखा 'मैं इसे देख कर मुग्ध हो गया हूँ। जी करता है वहीं रह जाऊँ। मैंने यहाँ इस ज्ञान गंगा के तट पर अनेक जिज्ञासुओं को प्यास बुझाने के लिए आते देखा है वास्तव में तो यह संस्था ऐसी है, जिसके लिए कहा जा सकता है कि "अवश्य देखिय देखन जोगू"।

साहित्य सदन अबोहर दिसम्बर 1941 के सम्मेलन से पहले अपने बहु आयामी कार्यक्रमों के जरिये देश भर में ख्याति प्राप्त कर चुका था। सम्मेलन के आयोजन ने संस्था में देश का विश्वास व्यक्त कर दिया था। साहित्य सदन के सम्बन्ध में श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार द्वारा किया गया वर्णन सदन की सजीव कल्पना करा देता है। साथ ही उस महान् पुरुष की प्रयोगशाला जिसका सदन मात्र नियमण कक्ष था, का तत्कालीन समाज में क्या स्थान था उसकी क्या उपादेयकता थी के सम्बन्ध में सांगोपांग प्रकाश डालता है 'साहित्य सदन का मुझे परिचय तो था। वहाँ एक बड़ा पुस्तकालय है। यह भी जानता था। वहाँ के कार्यकर्ताओं के त्याग तपस्या और लगन की कहानियाँ भी मैंने सुन रखी थी, लेकिन उसके व्यापक स्वरूप का परिचय मुझे वहाँ जाने पर ही मिला। जितनी विशाल उसकी इमारत है और जितना सुन्दर उसके भीतर का दृश्य है ठीक उतनी विशाल और सुन्दर उसका वह स्वरूप है जो वहाँ जाने पर भी आँखों में शीघ्र नहीं पड़ता लेकिन सहज ही समझ में आ जाता है। साहित्य सदन एक पुस्तकालय या संग्रहालय ही नहीं है। वह एक जीती जागती प्रगतिशील संस्था है जिसने न सिर्फ अबोहर शहर में बल्कि आस-पास के पचासों गाँवों और शहर के चारों ओर के इलाके, यहाँ तक की साथ लगी हुई बीकानेर, पटियाला एवं बहावलपुर की रियासतों तक में जीता जागता और प्रगति का प्रवाह निरन्तर बहता रहता है। पंजाब हिन्दी के लिए मरुभूमि कहा जाता है। वह सारा प्रदेश इस दृष्टि के अलावा प्राकृतिक दृष्टि से भी मरुभूमि में यह सदन सचमुच एक शोभा है और तीर्थ स्थान है।

मैं जो भाषण लिख ले गया था, उसमें मैंने बहुत संकोच के साथ उसमें दो चार पंक्तियाँ सदन के लिए लिखी थी वहाँ जाकर मैंने अनुभव किया कि वे बहुत कम

यों। उसे साहित्य का हरा-भरा पौधा कहना, पंजाब प्रान्त के लिए उसे हिन्दी व साहित्य का दीपक बताना और उसके मासिक पत्र "दीपक" को वहां के कार्यकर्ताओं के श्रद्धा, विश्वास एवं सचाई के साथ किये जाने वाले त्याग, तपस्या एवं साधन का प्रतीक समझाया, संस्था का पूर्ण वर्णन नहीं है हिन्दी प्रेमियों के लिए उसे तीर्थ कह कर हिन्दी एवं साहित्य की आराधना में लगे हुए तपस्वियों की उसे तपोभूमि कहना भी पूर्ण वर्णन नहीं है, उसकी चारों ओर दूर तक हुई व्यापक प्रशंसियों का पता लगने पर कुछ ऐसा अनुभव होने लगता है, जैसे उसका यथार्थ और पूर्ण वर्णन शब्दों में हो ही नहीं सकता।

गुरुकुल कांगड़ी को तीन लोक से न्यारा कहा जाता है। 14 वर्ष इसमें बिताने एवं महात्मा गांधी के आश्रम में भी कुछ ठहरने का अवसर मिला। सात्विकता, उदारता, स्वच्छता, पवित्रता और आत्मीयता की दृष्टि से सदन का वातावरण उसके शहर से बहुत दूर न होने पर भी इन संस्थाओं से किसी भी दर्जे में कम नहीं, उसके संस्थापक श्री केशवानन्द जी में त्याग, तपस्या, बलिदान, कष्टसहन, लगन, धुन और मेहनत आदि के सारे ही गुण न मालूम कहाँ से और कैसे आकर इकट्ठे हो गए हैं। सादगी-सरलता, मिलनसारिता और नम्रता आदि उनके स्वभाव में दूध पानी की तरह एक हो गये हैं। उनके व्यक्तित्व का प्रभाव सारी संस्था में वैसे ही व्यापी या समाया हुआ है, जैसे स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुरुकुल में और गांधीजी का सत्याग्रह आश्रम में या गुरुदेव का "शान्ति निकेतन में है।"

यह साहित्य का संगम उस स्वामी की कृति है जिसे स्वयं कभी पढ़ने का मौका नहीं मिला। उस कर्मयोगी ने हजारों हस्तलिखित प्रतियों को लोगों के हाथों में पहुँचाया बड़े बड़े आयोजन किये, हिन्दी सेवियों को सम्मानित करवाया और हिन्दी की उपयोगिता जन-जन को बताई विशेष कर उस प्रदेश में जो हिन्दी की दृष्टि से बंजर और रेगिस्तान था। वे जीवन पर्यन्त हिन्दी के लिए सजग रहे। महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में कहा कि "सब देश अपनी भाषाओं को उन्नत कर रहे हैं। पर हमारी दशा दूसरी है। हम आपस में एक दूसरे को पत्र लिखते हैं तो गलतियों से भरी हुई अँग्रेजी में। हमारी कांग्रेस की कार्यवाही अँग्रेजी में होती है। हमारे सब अच्छे अखबार अँग्रेजी में निकलते हैं। मेरा तो दृढ़ विश्वास है कि यह ढर्रा कुछ अधिक दिन चलता रहा तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें कोसेंगी। अँग्रेजी शिक्षा से ढोंग ढकोसला, अत्याचार आदि बढ़े हैं। अंग्रेजी पढ़े लिखे भारतीयों ने साधारण लोगों को ठगने और ठगाने में कोई कसर नहीं रखी है''' । यह क्या कुछ थोड़ा जुल्म है कि अपने देश में काम पाने के लिए भी हमें अँग्रेजी का सहारा लेना पड़ता है।"

महात्माजी की दुखी नब्ज को पहचानने वाले विरले हिन्दी सेवियों की शृंखला में आने वाले स्वामी केशवानन्द जी, जीवन पर्यन्त मातृभाषा

हिन्दी के प्रचार प्रसार की वकालत करते रहे। इस सम्बन्ध मे राज्य सभा के अध्यक्ष को उनके द्वारा दिया गया पत्र एव नेहरू जी की नाराजगी के क्षण उद्धृत किये जा सकते हैं। "मैं अंग्रेजी में लिखे कागजो की जगह रद्दी की टोकरी मे समझता हू। हम हिन्दी मे बात नहीं कर सकते। हम यहां काम करने आये हैं। बातों से घर पूरा नहीं होता।' सन् 1952 मे स्वामी जी ने ये शब्द नेहरू जी की मौजूदगी में कहे जिसके परिणामस्वरूप नेहरूजी क्रोधित हो उठे लेकिन पुरुषोत्तम दास टण्डन ने स्वामी जी के कार्यों एव व्यक्तित्व का बखान किया तो नेहरू जी शात हो गये।

राष्ट्रभाषा हिन्दी को सवैधानिक रूप मे स्वीकार करने के बाद भी उसका व्यावहारिक उपयोग न करने के सम्बन्ध मे स्वामी जी ने राज्य सभा के अध्यक्ष को अपना एक पत्र लिखा, जो स्वामी जी की निर्भीक हिन्दी सेवा का प्रतीक है पत्र स्वामी जी के शब्दो मे—

माननीय अध्यक्ष महोदय।

राज्य सभा भारतीय ससद—नई दिल्ली

सेवा में सविनय निवेदन है कि—

हमारा देश आजाद हो गया। हमारे देश का अपना सविधान भी बन गया। और बालिग मताधिकार के आधार पर सारे देश मे विशाल निर्वाचन भी सम्पन्न हुआ। फलस्वरूप हम सब स्वतन्त्र भारत की प्रथम निर्वाचित ससद मे सदस्य चुनकर आये। वफादारी की शपथ ली। इस प्रकार हमारे देश मे शासन की प्रजातन्त्रीय पद्धति का भी नये सिरे से श्री गणेश हुआ। मेरी हार्दिक शुभकामना है हमारे देश मे यह पद्धति सफल हो, सामान्य हो। पर बड़े खेद के साथ यह निवेदन करना पड रहा है कि—राज्य सभा का अधिवेशन शुरू हुए आज कई दिन बीत चुके, पर मुझे एक दिन भी ऐसा अनुभव नही हो सकता कि वास्तव मे मैं अपने देश की स्वदेशी ससद मे बैठा हुआ हूं। लगता है मानो हमारा स्वदेशीपन विदेशीपन के बोझ से बिल्कुल दबा हो, दबा जा रहा हो। हर तरफ अंग्रेजी और अंग्रेज्यित का बोलबाला।

सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य से मैंने अंग्रेजी नही पढी। भारत की सविधान स्वीकृत राज्य भाषा हिन्दी के प्रचार और प्रसार मे मेरा जीवन बीता है, बीत रहा है इसी भाषा के माध्यम से अपने कार्यों द्वारा जनता के निकट पहुँच सका, उनके दिलों मे स्थान पा सका और यह उसी का परिणाम है कि आज राज्य सभा का सदस्य बन सका हूं।

पर सदस्य बन जाना ही तो साध्य नहीं, यह तो महज एक साधन मात्र है यदि मैं जनता के अभाव अभियोगो को, यदि उनके दिलो की आवाज को, यहां तक पहुचा नहीं सकता तो क्या फायदा मेरी इस सदस्यता का? क्या यह कम विडम्बना है कि कान और आवाज के पूरी तरह दुरस्त रहते भी मैं परिषद् मे गूंगा और बहरा बना रहता हूं? बीकानेर का इलाका मेरा कार्यक्षेत्र है पर इससे बढकर मेरे लिए और क्या दुख की बात होगी कि बीकानेर पलाना के बीच रेल दुर्घटना का शोक प्रस्ताव

तो परिषद् में पास हो जाय, और मुझे उसका ज्ञान दूसरे दिन सवेरे हिन्दी अखबार पढ़कर हो।

मुझे उन सभी साथी सदस्यों से पूरी सहानुभूति है जो हिन्दी नहीं जानते अथवा नही समझते उनकी सुविधा के लिए अंग्रेजी मे जो कार्यवाही की जाती है वह ठीक है, उचित है। पर यह कहाँ का न्याय है कि भारत की संविधान स्वीकृत राज्य भाषा हिन्दी की इस प्रकार उपेक्षा की जाय।

स्वतन्त्र भारत की आन के नाम पर, राज्य भाषा हिन्दी के सम्मान के नाम पर और सबसे अधिक अंग्रेजी न जानने वाले मुझ जैसे सदस्यों की असुविधाओं और परेशानियों के नाम पर मैं उनसे पुन निवेदन करता हूँ कि परिषद् की सारी कार्यवाही के सारे कागज सारे आदेश-पत्र, सूचना-परिपत्र इत्यादि जिस प्रकार अंग्रेजी मे प्रकाशित किये जा रहे हैं उसी प्रकार हिन्दी मे भी प्रकाशित किये जायें। और राज्य सभा मे अधिक से अधिक प्रयोग को प्रोत्साहित किया जाय ताकि वे सदस्य भी राज्य सभा की कार्यवाही मे पूरी पूरी दिलचस्पी ले सकें जो अंग्रेजी नहीं जानते।

आशा है इस प्रार्थना पर विचार कर अनुगृहीत करें।

ता० 23-5-52　　　　　　　　　　विनीत
35-बी, नार्थ एवेन्यू　　　　　　　　केशवानन्द
नई दिल्ली　　　　　　　　　　　सदस्य राज्य सभा
　　　　　　　　　　　　　　　डिवीजन न० 1-77

नेहरूजी के जमाने मे कांग्रेस पार्टी का अनुशासन अनुकरणीय था, उस जमाने मे एक निश्चित नीति के खिलाफ आवाज बुलन्द करना सामान्य बात नही थी। लेकिन स्वामी जी के पत्र की भाषा मुखर, साहसिक एवं स्वय के सोच का प्रतीक है। स्वामी जी ने लिखा है कि "सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य से मैंने अंग्रेजी नही पढी" स्वामी जी अगर इसे अपना दुर्भाग्य समझते थे तो यह उनकी शालीनता थी। नही तो यह देश का सौभाग्य ही था कि वे अंग्रेजी से अछूते रहे। तभी तो उसकी मौलिकता सुरक्षित रही, तभी तो देश की साधारण जनता से उनका आत्मीय सम्पर्क बना, तभी तो सच्चे अर्थों में भारतीय बने। यह हमारा गौरव है कि स्वामी दयानन्द की तरह स्वामी केशवानन्द जी अंग्रेजी के मोह पाश से अलग रहकर पनप सके हैं। उनकी आवाज वास्तव मे जनता की आवाज थी।

उपरोक्त पंक्तियो का आशय अंग्रेजी भाषा का विरोध नही था बल्कि वे तो अंग्रेजी भाषा के भारत में सार्वजनिक उपयोग के आलोचक थे। वे केवल आलोचना नही कथनानुसार हिन्दी प्रचार प्रसार के लिए कार्य भी करते थे। उन्होंने अनेक हिन्दी ग्रंथो की रचना करवायी एवं अनेक भाषाओ के महत्वपूर्ण ग्रंथो का हिन्दी मे रूपांतरण करवाया [परिशिष्ठ प्रथम मे ग्रंथो की सूची संलग्न है] इस ओर हिन्दी भाषा का महत्व नामक उनकी पुस्तक महत्वपूर्ण है जो सन् 1924 मे प्रकाशित करवाई गई थी।

स्वामी जी पुस्तक में लिखते हैं—"अंग्रेजी समाचार-पत्र 'स्टेटस मैन" के सम्पादक ने लिपियों की प्रतिस्पर्धा नामक लेख में यह स्वीकार किया है कि संसार की प्रचलित लिपियों में सबसे अच्छी, सबसे सरल और सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि देवनागरी ही है।

× × × ×

भारत में भाषा प्रचार का लक्ष्य बिन्दु यदि 100 मील दूर है तो उसमें हिन्दी 66 मील यात्रा समाप्त कर चुकी है। जबकि पृथक-पृथक अन्य भाषायें अभी अधिक से अधिक केवल 12 मील ही चल पायी हैं।

× × × ×

केवल राष्ट्रीय नाते से ही नहीं, बल्कि हिन्दू धर्म के नाते से भी हिन्दी ही हिन्दुओं की पारस्परिक व्यवहार की एक भाषा है। हिन्दू सभ्यता का केन्द्र प्राचीन काल में वही प्रांत रहा है जिसकी भाषा हिन्दी है। यहीं से सूरदास, तुलसीदास, कबीरदास आदि श्रेष्ठ कवियों का प्रभाव भारत के अन्य प्रांतों पर पड़ा है। "वैष्णव सम्प्रदाय के ग्रंथ प्रायः हिन्दी में ही लिखे गये थे और उन्हीं का प्रभाव बंगाल, महाराष्ट्र गुजरात तथा अन्य प्रांतों पर पड़ा है। शिवाजी का प्रसिद्ध कवि "भूषण" हिन्दी कवि था सिखों का आदि ग्रंथ साहब, सूरजमल के कवि सूदन ने वीर रस की कविता हिन्दी में ही की। श्री गुरुनानक आदि गुरुओं ने हिन्दी में लिखा था।

× × × ×

हिन्दी पढ़ने वाले बालक बचपन में ही हिन्दू देवी, देवताओं और भारतवर्ष के प्राचीन ऋषि मुनियों के नामों तथा हिन्दू आचार-विचार से परिचित हो जाते हैं। पंजाब के जो बालक बचपन से उर्दू पढ़ते हैं, उन्हें जब किसी के अधिक धन की उपमा देनी होती है तो कारू का खजाना याद आता है। कुबेर या नंद का स्मरण नहीं होता। और जब किसी का बल वर्णन करना हो तो रुस्तम का नाम मुँह से निकलता है, भीम का ध्यान नहीं आता बसंत ऋतु का वर्णन करना हो तो उन्हें बुलबुल और लालाजार की याद आयेगी, कोयल या आम की ओर नहीं सूझती। फारसी लिपि इतनी अधूरी है कि उसमें हमारे महापुरुषों के नाम ठीक-ठीक लिखे भी नहीं जा सकते। उर्दू में रामायण और महाभारत पढ़ने वाले पंजाबी हिन्दू लव कुश को लो कुस और ध्रुव को दरू कहते हैं। इससे भली प्रकार सिद्ध है कि हिन्दी न पढ़कर अपने बच्चों को हिन्दू धर्म से विमुख कर रहे हैं और हिन्दू सभ्यता के आदर्शों के स्थान पर विदेशी आदर्श अपने चित्त पर जमाकर देश और जाति के साथ घोर अत्याचार कर रहे हैं।

अंग्रेजी कैसी दोषपूर्ण भाषा है जिसमें लिखा कुछ, बोला कुछ जाता है

K-N-O-W-L-E-D-G-E इसको अंग्रेजी वाले "नालिज" कहते हैं, पर असल में वह "कनोलेद्ज" है एवं T-H-O U-G-H-T को थॉट पढ़ा जाता

है असल मे यह घोषट है। इसके विपरीत हिन्दी में जो लिखा जाता है वही पढा जाता है।

× × × ×

स्वामी जी ने अपनी पुस्तक मे अनेक योरोपियन विद्वानो की हिन्दी के सम्बन्ध मे सम्मितियाँ उद्धरित की हैं—टोमस डेविस के अनुसार "मातृभाषा हीन जाति नही कही जा सकती। मातृभाषा देश की सीमा की रक्षा से भी अधिक आवश्यक है क्योंकि वह पर्वत और नदी से अधिक बलवती है।"

स्वामी जी हिन्दी भाषा के पल्लवन पोषण मे जीवन पर्यन्त लगे रहे वे एक ऐसे चमकते हुए प्रकाश स्तम्भ थे जिनके ओज से हिन्दी भाषा का प्रकाश देश भर मे फैला, वे विनोबा, पटेल, निराला, बनारसीदास चतुर्वेदी, पुरुषोत्तमदास टण्डन, डॉ० सम्पूर्णानन्द, नरदेव शास्त्री, प्रो० हरीभाऊ, उपाध्याय एवं श्री सत्यदेव विद्यालकार जैसी हस्तियो के प्रिय हिन्दी सेवी सन्त थे। इतना नही वे हिन्दी के माध्यम से जन-जन की आत्मा के निकट आकर उनकी सच्ची वाणी देश की प्रतिनिधि सभा ससद मे बने। देश का कण कण उस युग पुरुष को सदियो तक अपने पलकों पर रखेगा।

5

जाट स्कूल संगरिया की नींव पर ग्रामोत्थान विद्यापीठ

स्वामीजी अपने दूसरे जेल जीवन के बाद गाँधीजी द्वारा दिये गये रचनात्मक कार्यों में व्यस्त हो गये थे। जन-जन तक शिक्षा का सन्देश पहुँचाना, अपना प्रमुख ध्येय बना लिया था। जो उनकी दृष्टि में सच्ची देश भक्ति थी। शिक्षा के बिना आजादी की कल्पना नहीं की जा सकती। घोर अन्धेरे में विचरते जन मानस पर अग्रेज न होते, तो कोई और राज करता। स्वामीजी तम को दूर कर उन सभी चौधरी, बिचौलियों और जुल्म ढहाने वालों को अनावृतकर देना चाहते थे। साहित्य सदन के आयोजनों एवं निकटवर्ती ग्रामों की स्कूलों के कार्यक्रमों से स्वामीजी इलाके में ही नहीं, उसकी हद को लांघकर, देश के शैक्षिक वातावरण के लिए महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गये थे।

ऐसे में रेगिस्तान में मुरझाते हुए एक शैक्षिक पौधे की पुकार स्वामी जी तक पहुँची। सन् 1932 में एक संकटग्रस्त संस्था के संस्थापकों ने स्वामी जी को एक सभा में बुलाया। जाट मिडिल स्कूल के संचालक अब प्राकृतिक प्रतिकूलताओं, सामन्ती प्रतियोगिता एवं आर्थिक परेशानियों के वशीभूत होकर उस शिक्षा रूपी प्रकाश स्तम्भ को पूरी तरह बुझाने का निर्णय लेने के लिए मजबूर हुए थे। लेकिन स्वामी केशवानन्द जी की आँखों के सामने ऐसा पाप कैसे सम्भव था। स्वामी जी ने जाट मिडिल स्कूल को छू कर, अबोहर की पुष्पवाटिका को साहित्य सदन बनाने की तरह इसे ग्रामोत्थान विद्यापीठ का रूप प्रदान किया जो उत्तरी भारत का दूसरा तक्षशिला कहलाया।

(A) ग्रामोत्थान की नींव

ग्रामोत्थान विद्यापीठ जो स्वामी जी की रचना थी, की नींव को समझने के लिए जाट एग्लो वैदिक संस्कृत विद्यालय की स्थापना से स्वामी जी के आगमन सन् 1932 तक का संक्षिप्त विवरण प्रासंगिक होगा।

"वेदों की स्वप्निल भूमि जो कालांतर में प्राकृतिक अभिशाप क्षेत्र बन गया, भारत का उत्तर-पश्चिम भाग, जहाँ कभी नदियाँ हरियाली और खुशहाली का साम्राज्य

14 बीघा 2 बिस्वा जमीन का महादान दिया। जिस पर अगस्त 1918 में स्कूल का भवन बनना प्रारम्भ हुआ। इस दौरान पं० रामशिव शर्मा एवं स्वामी मनसानाथ उनके हर पल सहयोगी रहे।

राय बहादुर लाल चन्द रोहतक ने प्रारम्भ के दिनों में 22-2-1920 को अपनी सम्मति संस्थान के सम्बन्ध में देते हुए लिखा कि "मैं स्कूल में दो दिन रहा यद्यपि छात्रों की संख्या कम है। मैंने जो कुछ यहाँ देखा, उससे इस छोटी-सी संस्था का भविष्य बहुत आशाप्रद दीख पड़ता है। मुझे आशा है कि राज्य इसे सब प्रकार से आवश्यक सहायता देगा। मैं संस्था की हर प्रकार से सफलता चाहता हूँ"।

श्री जाट एंग्लो संस्कृत मिडिल स्कूल के प्रारम्भिक प्रयासों, आय-व्यय ब्यौरों एवं कठिनाइयों का संक्षिप्त विवरण जानने के लिए अक्टूम्बर सन् 1925 में छपी एक रिपोर्ट का हवाला देना भी प्रासंगिक होगा। जो मूल रूप में उद्धरित है।

प्रस्तावना

समस्त उत्तरीय भारत में विशेष कर राजपूताना का कौन ऐसा शिक्षित हिन्दू होगा, जिसने जाट एंग्लो संस्कृत मिडिल, संगरिया मंडी का नाम न सुना हो, परन्तु'''''''बहुत से ऐसे व्यक्ति हैं जो जाट स्कूल के उद्देश्य, कार्य-प्रणाली तथा उसके बृहत प्रचार''' यह स्कूल केवल एक शिक्षणालय ही नहीं है प्रत्युत हिन्दू जाति''''और जाट जाति राजपूताना की विशेष जीवन में एक संचालना है। चौधरी बहादुर सिंह भोबिया इसकी शक्ति और सम्पत्ति का मुख्य श्रोत है। यह स्कूल 9 अगस्त सन् 1917 में स्वामी मनसानाथ जी व सरदार बहादुर सिंह जी के परिश्रम से हनुमान गढ़ में स्थापित किया गया था। परन्तु 21 दिसम्बर 1917 को हनुमान गढ़ से संगरिया में लाया गया। चूँकि पिछला स्थान जिला हिसार फिरोजपुर और राज्य बीकानेर की सीमा पर है। हनुमान गढ़ की अपेक्षा इसकी वायु बहुत शुद्ध और निरोग्य है।

आरम्भ में दो व्यक्तियों ने, प्रथम सेठ बजरंग दास जी सग्रया ने अपनी धर्मशाला शिक्षा ग्रहण करने के लिए देकर और दूसरे ठाकुर गोपाल सिंह जी रईस पन्नी वाले राज्य बीकानेर ने चौदह बीघे तीन बिस्वे अराजी पुख्ता स्कूल को दान में देकर बहुत सहायता दी। ये दोनों व्यक्ति विशेष कर ठाकुर गोपाल सिंह जी जिन्होंने प्रत्येक समय स्कूल की सेवा करना ही अपना परम कर्तव्य मान लिया है। 30 और 31 दिसम्बर 1917 ई० को स्कूल की आधार शिला रक्खी गई और स्कूल के स्थापित होने के पश्चात् विद्यार्थियों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती गयी।

यदि यह स्कूल पंजाब के किसी शहर में होता तो आज यह एक हाई स्कूल की आकृति में दृष्टिगोचर होता, परन्तु इस स्कूल के सामने बहुत सी ऐसी कठिनाइयाँ

उपस्थित हैं कि जिनका दूर होना बहुत कठिन है इस कारण इसकी उन्नति शनैः-शनैः होती है क्योंकि —

प्रथम, इस प्रान्त का पानी साधारणतया खारा है। द्वितीय इस प्रान्त की बस्ती भी अधिक नहीं है। तृतीय, इस प्रान्त का ग्रामीण जीवन पंजाब प्रान्त की अपेक्षा शिक्षा के हिसाब से 50 वर्ष पीछे है। यानि 50 वर्ष के अन्दर इस प्रान्त में देहातों में शिक्षा की यह प्रणाली होगी जो आजकल पंजाब के ग्रामों में जारी है। चतुर्थ, वैदिक शिक्षा से यानी सन्ध्या हवन से यहाँ के लोग घबराते हैं और ज्यूँही स्थानीय सेठों को यह मालूम होता है कि उनके बच्चों को गायत्री मन्त्र और सन्ध्या मन्त्र सिखाये जाते हैं, तो उस समय अपने लड़कों को उठवा लेते हैं, यद्यपि यहाँ पर प्रत्येक, पूर्णतया धर्म के बारे में जो जो जिसके विचार हों वे वैसे विचार रखने में स्वतन्त्र हैं और स्कूल इसकी धर्म की स्वतन्त्रता में कोई बाधा नहीं डालता है।

उपरोक्त बातें हैं जिनके कारण स्कूल में लड़कों की संख्या अधिक नहीं होती है। परन्तु महात्मा स्कूल के जन्मदाता चौधरी बहादुर सिंह कहा करते थे कि कूँआ वहाँ खोदना चाहिए जहाँ पानी न हो यदि नहर के किनारे कुआ खोदा जावे तो उससे अधिक लाभ न होगा। जिस प्रकार यदि चौधरी बहादुर सिंह जी जिला फिरोजपुर में यह स्कूल खोलते जहाँ के मनुष्य "" व्याकुल नहीं हैं तो राजपूताना के अन्दर से विद्या का प्रचार खास ""कस भी दिखाई नहीं देता और 100 में से एक भी पुस्तक पढ़ने वाला नहीं मिलता। आप देख लीजिये कि राज्य श्री बीकानेर में जितने भी बड़े-बड़े शहर हैं प्रत्येक में मिडिल स्कूल है, परन्तु उनमें एक भी जमींदारी का लड़का मिडिल व प्राइमरी श्रेणियों में नहीं मिलेगा। शाबाश। धन्य-धन्य चौधरी बहादुर सिंह आपने राज्य बीकानेर में विद्या की प्याऊ लगाई और ऐसी प्याऊ लगाई जिसके पानी को पीकर रियासत में जाट भी शिक्षित दिखाई देता है।

इस स्कूल की शाखायें शीघ्र ही ग्रामों में खुलनी आरम्भ हो गई जिनमें गोलूवाला, मटीली मण्डी और धमूड़वाली अति प्रसिद्ध हैं। और इनमें इस अनुमानतः 120 विद्यार्थी पढ़ते हैं। जिन उद्देश्यों को लेकर यह स्कूल खोला गया है उन में बड़े-बड़े उद्देश्य निम्न लिखित हैं —

1 जाति में विद्या फैलाना, इसके लिए उचित साधन काम में लाना।

2 जाट जाति की शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक, आर्थिक और मानसिक आदि दशा की उन्नति करना।

3 जाट जाति से बुरी प्रथा दूर करना।

4 वेद और संस्कृत साहित्य का प्रचार करना।

5 हिन्दी साहित्य की उन्नति और प्रचार करना।

6 राज्य के लिए सच्चे राज भक्त पैदा करना।

7 जाति मे परस्पर प्रेम और एकता उत्पन्न करना।

राज्य भर मे यही एक ऐसी संस्था है जहाँ ग्रामीण विद्यार्थियों के रहन-सहन का भली भाँति प्रबन्ध किया जाता है, देहातों मे केवल हिन्दी भाषा और गणित सिखाया जाता है, परन्तु अंग्रेजी कहीं नही पढाई जाती है। देहान्त के विद्यार्थियो के इस कष्ट को दूर करने के लिए जूनियर और सीनियर श्रेणियाँ खोली हुई हैं। यदि कोई विद्यार्थी हिन्दी की चौथी श्रेणी उत्तीर्ण करके किसी एंग्लो वरनाक्यूलर स्कूल मे जावे तो उसके लिए पढ़ाई और रहने के उद्देश्य से कोई प्रबन्ध नही है।

स्कूल खुले हुए इस समय 7 साल हो चुके हैं। परन्तु इसको बहुत सी कठिनाइयों में से गुजरना पड़ा है। यदि स्वर्गवासी चौधरी बहादुर सिंह जी इस स्कूल रूपी नौका का मल्लाह न होते तो यह स्कूल आपको आज के दिन दृष्टिगोचर न होता। एक समय स्कूल में कोई पैसा न रहा तो उस समय जाति के वीर मल्लाह ने शपथ खाई कि "जब तक 10,000 रुपये एकत्रित न कर लूँगा तब तक स्कूल में कदम न रखूँगा। और प्राण त्याग दूँगा" आदि की कृपा से हमारे वीर का प्रण पूरा हुआ। और उस दिन के पश्चात स्कूल की उन्नति होती चली गई है।

इस स्कूल के जन्मदाता और संचालक चौधरी बहादुर सिंह जी भोबिया बिडगखेडा निवासी जिला फिरोजपुर हुए हैं। आपने कौम के अन्दर यह मिसाल उत्पन्न कर दी है कि साधारण 4 या 5 जमातें पढ़कर भी एक मनुष्य जाति का प्रथम श्रेणी का नेता बन सकता है। आपने जाति पर तनवारा, मनवारा और धनवारा, सर्वस्ववारा आपने जो यह यज्ञ तैयार किया है इसकी सुगन्धी समस्त उत्तरीय भारत मे साधारणतया और जाट जाति मे विशेषकर फैल गई है।

परन्तु 1 जून सन् 1924 हमारी जाति के लिए, मनहूस दिन आया हमारे वीर मल्लाह रणधीर नेता, कुर्बानी की तस्वीर, स्कूल रूपी नौका को जाति पर छोड़कर स्वर्ग सिधारे। स्कूल के अन्दर जो रुपया अभी तक है वह हमारे वीर की ही अमानत है और आप यह सब कुछ हिसाब-किताब से जो आपके हाथ मे है देख सकते हैं। हमारे वीर जो रुपया छोड़कर स्वर्गवासी हुए हैं वह रुपया घटता ही चला गया और एक पाई भी नही बढ़ी इसके पीछे स्कूल रूपी यज्ञ मे आहुति देने के लिए चार मनुष्य यानी श्रीयुक्त चौधरी हरीशचन्द्र जो वकील रामनगर (वर्तमान गंगा नगर), चौधरी जीवन राम जी कड़वासरा दीनगढ चौधरी हरजी रामजी रईस मलोट और चौधरी सरदारा राम जी सहारण रईस चोटाला आये। ... डेढ वर्ष तक आहुति दी परन्तु जाति ने कुछ भी इनका उत्साह नहीं बढ़ाया और इस समय इस यज्ञ का हाल अच्छी दशा मे प्रतीत नही होता। यज्ञ के लिए धन रूपी घी व सामग्री की आवश्यकता है और सबसे बड़ी आवश्यकता

इस बात की है कि जाति स्कूल को नाजुक हालत होने पर अपनी जिम्मेदारी समझें और हमारी जाति के बड़े बड़े नेताओं से यह प्रार्थना है कि जब कभी उत्सव सम्बन्धी कार्य हों तो कार्य को शोभित करने के लिए जाति को कृतार्थ किया करें।

संगरिया में पानी का जैसा कष्ट है इसको वही लोग अनुभव कर सकते हैं जिन्होंने गर्मियों के दिनों में एक लोटा पानी के लिए हनुमान गढ़ से आयी हुई रेलवे की टंकी पर पन्द्रो टकटकी लगाये पचासों प्राणियों को देखा है। इस दुख को दूर करने के लिए जाति में यदि कोई हो सकता था तो वे दानवीर चौधरी छज्जूराम जी अलखपुरा निवासी (वर्तमान हरियाणा) और कलकत्ता प्रवासी जिन्होंने 10000/ रुपये की लागत से एक ऐसा कुण्ड बनवा दिया कि जिसमें विद्यार्थियों के लिए पानी का कष्ट हमेशा के लिए दूर हो गया इसके लिए जाति श्रीमान् जी की परम कृतज्ञ है। जाति की ओर से स्कूल संचालक स्वामी मनसानाथ जी को बार-बार धन्यवाद दिया जाता है आपने अपने विचारों को और अमूल्य समय को स्कूल के लिए न्योछावर कर दिया है।

यह बात भी विशेष ध्यान में रखनी चाहिए कि कर्मचारियों की सहानुभूति स्कूल के साथ आरम्भ से ही है और विशेष कर मिस्टर बी० डी० रवकिन रेवन्यु मिनिस्टर को हम जाति की ओर से धन्यवाद देते हैं कि जिन्होंने स्कूल के अलावा बच्चों का 8/ रुपया मासिक वजीफा देकर और अपनी जेब से भी 429/ रुपये दान देकर यश प्राप्त किया और श्री जी साहिब बहादुर नरेन्द्र शिरोमणि की चिरायु के लिए हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि जिनकी छत्र छाया में हम दिन दूनी रात चौगनी उन्नति कर रहे हैं।

ओ३म् शांति। शांति॥ शांति॥।

मैनेजिंग कमेटी की आज्ञा से छपवाया गया।

हरिश्चन्द्र मन्त्री

× × × ×

बीकानेरीय जागृति के अग्रदूत भू० पू० एम० एल० ए० बीकानेर रियासत चौधरी हरिश्चन्द्र नेण के हस्ताक्षरों से जारी रिपोर्ट उस जमाने की परिस्थितियों पर प्रकाश डालती है। चौधरी हरिश्चन्द्र जी नेण एवं बहादुरसिंह जी की मुलाकात 26 जनवरी 1918 ई० में मिरजावाली में हुई थी। जहाँ चौधरी हरिश्चन्द्र जी वकालत किया करते थे। उस घटना को चौधरी साहब ने अपनी डायरी में वर्णित करते हुए लिखा— चौधरी बहादुरसिंह जी धुन के पक्के और कठोर परिश्रमी थे। आकर्षण शक्ति उनकी विलक्षण थी। वह देश की वर्तमान दशा को जान चुके थे। बहुत सी ठोकरें खाने के बाद अब उन्हें यह सुधि आई थी कि उन्नति का मुख्य साधन शिक्षा है। शिक्षा के बिना कोई जाति अथवा देश उन्नत नहीं हुए। वह देहात के लोगों को

नाड़ी टटोलते फिरते थे। मैं एक कौने में पड़ा अपने हाल में मस्त था। उस जादूगर ने अपना मन्त्र मुझ पर भी चला दिया। उन्होंने अपना तनमन देश को शिक्षित बनाने के लिए दृढ़ व्रत में होम दिया और मेरे कान में भी फूँक मार दी कि बिना शिक्षा के देश के उद्धार की कल्पना स्वप्न मात्र है। तपस्या में विचित्र शक्ति है। उस तपस्वी ने मेरी सुप्त भावनाओं को जगा दिया और मेरी रगों में बिजली जैसा संचार कर दिया। मैं उनके साथ हो लिया।"

बहादुरसिंह जी के सम्पर्क के बाद जीवन पर्यन्त चौधरी हरिश्चन्द्र जी जाट स्कूल और तत्पश्चात् ग्रामोत्थान विद्यापीठ के आधार स्तम्भ बने रहे। सन् 1925 से 1932 का समय तो जाट स्कूल का चौधरी हरिश्चन्द्र नैण युग कहलाता है। जब वह अनेकों तूफानों को सहन कर भी जाट स्कूल की नाव खेते रहे। ठाकुर देशराज ने अपने ग्रंथ में उद्धरित किया है कि—"बीकानेर हाईकोर्ट के चीफ जज शेख मोहम्मद इब्राहीम ने कहा था—"हरिश्चन्द्र एक होशियार वकील है मगर वह कम्बख्त एक बुरी बीमारी में फँस गया है। वकालत और सेवा साथ-साथ नहीं चलती है।" लेकिन चौ० हरिश्चन्द्र ने दोनों को साथ-साथ चलाया। चौ० बहादुरसिंह जी की तरह कौम की तरक्की का नशा उन्हें भी चढ़ा था उस नशे से निश्चय ही न केवल जाटों का अपितु सभी लोगों का कल्याण हुआ।" अपने बजट भाषण पर बोलते हुए चौधरी हरिश्चन्द्र नैण ने वे शिक्षक बीकानेर दरबार में कहा था "पिछले सालों की भांति इस वर्ष भी मैं बजट की मदों पर कोई टीका टिप्पणी नहीं करूँगा। हां बजट में विद्याविहीन कृषक वर्ग की जो उपेक्षा की गई है उसके लिए अवश्य कहूँगा। विद्या प्रसार मेरे जीवन का लक्ष्य है और किसानों में विद्या की बड़ी कमी है।" देहाती इलाकों में 11 हजार रुपये की छोटी रकम ही इस वर्ष और दी है, मैं तो यह चाहता हूं कि शत-प्रतिशत् लोग पढ़ जावें आज असेम्बली में मैंने 56 सवाल किये हैं, जिसमें अधिकांश शिक्षा बढ़ाने के उद्देश्य से ही है।। विधायक रहते उससे पहले व बाद में भी वह बहादुरसिंह जी द्वारा कान में मारी गई फूंक से हर क्षण सेवा का नशा रखे रहे। प्रारम्भिक कठिनाइयों में उस समय की मनोदशा एवं रियासती सरकार का विरोध था, सभी जातियों का एक साथ मिल बैठकर समानता के आधार पर ज्ञान अर्जन करना लोगों के नहीं जमा और कथित उच्च जातियों ने इस संस्था को ढेढियों (चमारों) की स्कूल और उसके संचालकों को अधार्मिक कहा इतना ही नहीं कथित राज्य भक्तों ने इसकी शिकायत बीकानेर के राजा को की—फलस्वरूप रियासती प्रशासन ने ईर्ष्या वश स्कूल के बराबर राज स्कूल की स्थापना की और यह प्रचारित करवाया कि इस में पढ़ने वालों को छात्रवृतियां एवं नौकरीयां मिलेंगी।

संस्था के भवनों को देख महाराजा के एक कारकून ने कहा था कि यहाँ रियासत को डसने वाले सांपों को दूध पिलाया जाता है। लेकिन वह जाट स्कूल एक दिन ग्रामोत्थान विद्यापीठ का रूप धारण कर सर्वोदय का कारण बनेगा, शायद यह कल्पना उनके संकीर्ण दिमाग में नहीं थी।

मार्च 1921 का वार्षिक उत्सव बहादुरसिंह जी के रहते हो गया था। जिसमे हरियाणा के प्रसिद्ध किसान नेता चौ० सर छोटूराम एवं दानवीर सेठ छाजूराम, चौ० लालचन्द, चौ० श्रीचन्द, चौ० हरीराम, टीकाराम एवं चौ० मादी राम ने संस्था की नींव मजबूत कर दी थी। बहादुरसिंह जी के महाप्रयाण के बाद सचालको विशेषकर चौ० हरीशचन्द्र जी के प्रयासों से सस्था की दशा बिगड़ी नही अपितु विकास की ओर अग्रसर रही। सन् 1927 मे बीकानेर रियासत के कोलोना-इजेशन कमिश्नर मिस्टर जी. डी रूडकीन जो चौ० हरिश्चन्द्र जी से विशेष प्रभावित थे, संगरिया पधारे। धन्य हो वह अंग्रेज जो सात समुद्र पार आकर भी सामन्तो से अधिक दयावान निकला। जनाब जी डी रूडकीन साहब ने खुले तौर पर यह घोषणा की कि जाट स्कूल के विद्यार्थियो को भी नौकरी और छात्रवृत्तियाँ मिलेगी। रूडकीन सस्था के एक परम हितैषी के रूप मे रहे उन्होने कभी भी राजा साहब की नाराजगी की परवाह न की। शायद वे भली भांति समझते थे कि बीकानेर रियासत आखिर उनकी मातहत थी।

स्वामी केशवानन्द जी ग्रन्थ के विकास खण्ड मे बहादुरसिंह जी के स्वर्गवासी होने के बाद की सस्थान की दशा का वर्णन करते हुए स्व० बनारसीदास चतुर्वेदी एव ठाकुर देशराज लिखते हैं—"सात वर्षों तक चौ० हरिश्चन्द्र जी और उनके साथियो ने पाठशालायें बढाई सस्था का काम भी चलाया, किन्तु इस सत्य को स्वीकारना ही पड़ेगा कि हाथ पैर फूल चुके थे, और वे यह अनुभव करने लगे थे कि शीघ्र ही किसी विशिष्ट व्यक्तित्व को यह भार नही सौंपा गया तो सस्था बैठ जायेगी क्योंकि आर्य कुमार आश्रम कच्ची ईंटो से बनाया गया था। बरसात मे उसकी छत से पानी आता था। शीत धूप का बचाव उससे पूर्णतया नही हो पा रहा था। इमारत जीर्णशीर्ण हो रही थी। उसे नया रूप देने के लिए जितने धन की आवश्यकता थी, वह उन्हें इकट्ठा होता दिखाई नही दे रहा था स्वामी मनसानाथ जी कभी का साथ छोडकर परिव्राजक हो चुके थे। उन दिनो स्वामी केशवानन्द जी अपने अबोहर के कार्यों की वजह से सूर्य की भांति चमक रहे थे।"

(B) स्वामी जी का जाट स्कूल मे आगमन

स्वामी जी के विद्यापीठ आगमन के समय को सयोगवश सन् 1949 में ब्रज-नारायण कौशिक ने स्वामी के मुख से यो 'लिपि बद्ध किया—' जाट विद्यालय संगरिया के प्रारम्भिक जन्मदाता और पोषक एक-एक करके स्वर्गवासी हुए या थककर निराश हो स्कूल छोड गये। ऐसे समय निराश अध्यापको, फाजिल्का के चौटाला, राम-नगर (पुरानी आबादी मगलसर) तथा सीलवाह के प्रमुख लोगों ने 18.12 1932 को एक सभा बुलाई। मुझे भी बुलाया गया मैने वहा भले आदमियो किसी विद्यालय को खोलने के अवसर पर तो बुलाया होता है। परन्तु आप लोगो ने मुझे ऐसे अवसर पर बुलाया है जबकि इस विद्यालय को बन्द करने के लिए बात चल रही है। विद्यालय को बन्द करने के लिए एक साधु को बुलाने की आवश्यकता है। मुझे ऐसो

कोई वात दिखाई नहीं देती कि यह स्कूल न चले। स्कूल बन्द करने का पाप एक साधु के सिर पर क्यों डालते हो।" हम देखेंगे 'तब से लगातार मैं यहाँ पर हूँ'। जब मैं यहाँ आया तो (आर्यकुमार आश्रम की ओर संकेत करते हुए कहा) यहाँ दो कच्चे कमरे थे। उस समय की संस्था की दशा को देखा किसी को भी भारी निराशा हो सकती थी। हमने तो बँधी हुई अर्थी खुलवायी।" (मौन)

× × × ×

अगले दिन मैं प्रात मुँह अँधेरे (बहुत जल्दी) उठा, चारों तरफ अँधेरा था। पूर्व की ओर हमे एक आलीशान इमारत का भ्रम हुआ। यह भवन रात-रात मे कहाँ से आया। रेल लाईन के पीछे की ओर देखा वहाँ बड़े-बड़े भवन दिखाई पड़े, दक्षिण मे भवन, उत्तर में भवन सैकड़ो विद्यार्थी, हम हैरान रह गये यह सब कुछ क्या है ?—

जब कुदरत ही हमसे यह सब करवाने पर तुली हुई है "तो हमे यह यश ले लेने चाहिए। आज आप देखिए कितने भवन हैं संस्था की रूपरेखा आपके सामने है आने वाले समय मे कितना विस्तार होगा आप अनुमान लगालें। हमारा देश स्वतन्त्र हो चुका है।"

रेत के ढेर पर बने कच्चे कोठे गिरने को हुए थे, कि स्वामी केशवानन्द जी के रूप मे एक सुदृढ स्तम्भ ने न केवल उन्हे गिरने से बचाया, बल्कि उसे समुद्र की विशालता और एवरेस्ट सी ऊँचाव बख्शी। 1932 मे जाट स्कूल के सचालक बनकर मानो स्वामी जी ने नखलिस्तान और शैक्षिक स्वर्ग उतार दिया हो। यदि सौभाग्य से लेखक उस बैठक मे होता जिसमे स्वामी जी ने जाट स्कूल के सचालक का दायित्व स्वीकार किया था तो उनके सम्मान में अपनी भावना यो प्रकट करता—

थार केशरी स्वामी केशवानन्द जी को सत्सत् प्रणाम

ओ ! शक्ति सरलता के सजीव चित्र,
ओ ! पतित जनो के परम मित्र।
ओ ! सेवा के सागर विशाल,
ओ ! जन-जन के लाडले लाल।
आओ मन मन्दिर मे आओ,
हैं खुले पड़े सब हृदय द्वार॥
अति आनन्दित है आज अचल,
लहरें लेता है मचल मचल।
थार केशरी को विलोक,
हैं मिटते जाते सभी शोक।

उर में भी आज उठ रहे हैं,
कैसे कैसे उत्तम विचार ।।
था दुखी मरू महान्,
सब अँधेरा ढो रहे थे किसान ।
लख उन पर अत्याचार अतुल,
था बजा दिया शिक्षा संग्राम विपुल ।
यह कहा सत्य था किया युद्ध,
जिसमें तमको हुई हार ।।
हैं शुष्क देश में, कहाँ फूल,
हैं केवल काले कठोर शूल ।
है काल देव का कर कराल,
कैसे गूंथ पाती फूल माल ।
'डाल' यों अर्पित करता हूँ प्रभुवर,
टूटा फूटा यह हृदय हार ।।

× × × ×

13 सितम्बर 1984 के केशवानन्द शताब्दी समारोह की स्मारिका में लेखक ने इसी घटना को लक्ष्य बनाकर लिखा था ।—

ऐ महामानव स्वामी केशवानन्द

ए बालु रेत पर लिखने वाले इतिहासकार ।
तेरे सभी मन्सूबे पाक थे ।
तेरे इरादों के आगे सब नतमस्तक थे ।
ऐ अज्ञान को धराशाही करने वाले ज्ञान दीप ।
अशिक्षा के घुप अँधेरे में शिक्षा की ज्योति जलाई ।
एक अकेले फकीर ने यह कैसी तिलस्म दिखायी ।
ऐ ग्रामोत्थान के अग्रदूत, परिश्रम के पुजारी ।
स्वयं के शरीर को साधन मान मंजिलें तय करने वाले ।
सादगी, स्वच्छता, हमदर्दी शील, सदाचार का पैगाम देने वाले ।
ऐ प्रेरणा के स्रोत, समाज के रहबर ।
तेरी हर रचना, तेरा हर काम महान था,
तेरी जुबां से निकला हर लब्ज एक पैगाम था,
तूने बेनूरों को नूर बख्शी,
तंगहाली को खुशहाली बख्शी,
रेत के समन्दर में नखलिस्तान बनाया ।
मायूसी में आकर तूने जिन्दगी का तराना बजाया ।।

× × × ×

(C) 1932 मे स्वामी जी का सगरिया आगमन एवं जाट स्कूल का चतुर्दिक विकास

मरुभूमि के सरस्वती पुत्र स्वामी केशवानन्द जी महाराज का फाजिल्का, फिर अबोहर और 1■ दिसम्बर सन् 1932को यह तीसरा शैक्षिक पड़ाव था। स्वामी जी की शैक्षिक यात्रा अनवरत चलती रही, ये कांटे भरे रास्ता तय करने वाला सन्त एक हाड़-मांस का पुतला नही मानो अथाह शक्ति सम्पन्न एक शैक्षिक देवदूत था। जिसके कृत्यों को युगो-युगो तक आश्चर्य मिश्रित भाव से जांचा परखा और लिया जाता रहेगा।

स्वामी जी ने सर्व सस्था के टूटे फूटे भवन के जिर्णोद्धार का कार्य हाथ मे लिया। स्वामी जी को जनता की नब्ज पता चल चुकी थी वे अपने हर इरादे मे सफल रहे थे। अत उन्हे पूर्ण विश्वास और ज्ञान था, जनता ■ सहयोग लेने का। सरकारी अनुदान के बिना सस्थायें जन सहयोग से ही चलती हैं। (यद्यपि जाट स्कूल को सन् 1929 से मामूली सरकारी अनुदान मिलने लगा गया था (अत स्वामी जी ने जाट विद्यालय की काया का काया पलट नामक यह ऐतिहासिक अपील निकाली, जिसमे इलाका निवासियो से 20,000 रुपये का दान विद्यालय के भवनो एव कार्यक्रमो के सचालन हेतु परम आवश्यक बताया। अपील पर हस्ताक्षर भी स्वामी जी को करने पड़े क्योकि सस्था श्री हरिश्चन्द नैण श्री जीवणराम कड़वासरा श्री सरदारराम सहारण और श्री शिवचरण सिह जी गोदारा शायद काफी निराश हो चुके थे, चदा मागने का उनका अनुभव काफी कडवा था। लेकिन लेखक के मतानुसार विज्ञप्ति पर हस्ताक्षर न करने की उनकी मशा शायद यह रही होगी कि स्वामी जी इस क्षेत्र मे अत्यधिक अनुभव और नाम रखते है और फिर वे सन्यासी भी हैं अत वे सज्जन केवल अपने नाम को शैक्षिक पौधो की सहायता मे बाधा नही बनने देना चाहते थे। यदि वे टूट चुके होते तो आगे सस्था की ओर ध्यान नही करते। जबकि उपरोक्त सभी सज्जन आगे भी सस्था के कार्यो मे तन मन धन से व्यस्त रहे। चौधरी हरिश्चन्द्र नैण जीवन पर्यन्त एव श्री शिवचरण सिह गोदारा आज भी सस्था के अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं।

लोगो ने स्वामी जी की अपील का जोश खरोश से स्वागत किया धन सग्रह का शुभारम्भ चौधरी घेरुराम जी ज्याणी (कटड़ा पज ब) से हुआ जिन्होने आरोग्य मन्दिर का सारा खर्चा उठाया, सहयोग देन वाला का ताता लग गया। चौधरी काना रामजी ढाका ने साहित्य मन्दिर बनवाया तो चौधरी पोखरराम जी ठेकेदार ने हाल का कमरा बनवाया। *20,000 (बीसहजार)* रुपय की अपील के बदले 1935 तक 1,00,000 रुपये हो गये थे जिर्णोद्धार आय कुमार आश्रम साहित्य मन्दिर व्यायामशाला दो पक्की डिग्गियाँ, स्नानगर, रसोई घर, विद्यालय का साज सामान खरीदा गया। एव दो बीघा 11 विस्वा जमीन भी खरीदी गई इस अवधि मे फौजी जवानों का चन्दा विशेष सम्बल रहा। रुपया आया साथ ही सस्था का दूर दूर प्रचार हुआ।

मैं अकेला ही चला था जानिबे मन्जिल,
मगर हम सफर मिलते गए और कारवां बढ़ता गया।

संस्था के बुरे दिन शायद टल गये और नये नये सेवा के दूत स्वामी जी के तेज से प्रकाशित होते संस्था के निकट आने लगे। यों तो समस्त सहायकों की सूची बनाना इन क्षुद्र हाथों को नसीब नहीं है लेकिन लिखित और सजोये हुये परम्परागत ज्ञान के आधार पर निम्नलिखित सज्जन इसके नवयज्ञ के सहयोगी बने—

1 सर्वश्री चौधरी हरिश्चन्द्र नैण श्री गंगानगर
2 चौधरी जीवनराम कड़वासरा हीनगढ़
3 चौधरी सरदार राम जी सहारण चोटाला
4 चौधरी शिवकरण सिंह जी चोटाला
5 चौधरी बुद्ध राम जी नायब तहसीलदार
6 चौधरी चुन्नीलाल जी जाखड़
7 चौधरी ज्ञानीराम जी वकील
8 चौधरी मल्लू राम जी
9 चौधरी प्रेम सुख जी कड़वा लीलावाली
10 चौधरी कन्हीराम जी विश्नोई
11 चौधरी हेमराम जी जाखड़
12 चौधरी रामकरण जी विश्नोई
13 चौधरी हरजी राम जी
14 चौधरी ह्याली राम जी
15 चौधरी मनीराम जी, सियाग चोटाला
16 मोहरूराम जी पूनिया, पचकोसी पंजाब
17 चौधरी सेढ़राम जी
18 चौधरी धन राज जी शिवराम गुलार (पंजाब)
19 चौधरी राम सुख जी बाहर, रूपनगर
20 चौधरी हेतराम रामकिशन जी माम्भू चन्डालिया नाहर
21 चौधरी बहादुर राम जी, दोपलाना
22 चौधरी रामकरण मामराज, आजोदपुर
23 सरदार नारायण सिंह भाटी, बिलियावाली

उपरोक्त सज्जनों ने जाट स्कूल की महत्ता समझ कर स्वामी जी को तन-मन धन से सहयोग प्रदान किया। एक उदाहरण है कि उस अकाल के जमाने में भी अकेले बारेवां गांव ने स्वामी जी को 2750 रुपये दिये स्वामी जी अति शीघ्र जाट मिडिल स्कूल को हाईस्कूल का रूप देना चाहते थे। जिसकी तैयारी हेतु एक नया छात्रावास दो नई बिल्डिंगें, सभा भवन, विद्यालय के ऊपर गैलरियाँ चार नये **रसोईघर**

पाँच क्वार्टर अध्यापकों के लिये, एक पशुशाला एवं खेलने हेतु मैदान तैयार करवा लिए गए ताकि हाईस्कूल बनते ही इनका उपयोग किया जा सके।

सन् 1934-35 में औषधालय की स्थापना की गई, शारीरिक शिक्षा के प्रारम्भ करने हेतु एक विद्यार्थी को ट्रेनिंग हेतु बड़ौदा भेजा, ताकि प्रशिक्षण के उपरांत वह संस्था में आकर अन्य विद्यार्थियों को प्रशिक्षित कर सके।

(D) ग्रामोत्थान विद्यापीठ संग्रहालय की स्थापना

वर्तमान सर छोटूराम स्मारक संग्रहालय

इन्हीं दिनों में स्वामी जी के मन में संग्रहालय की स्थापना का विचार आया, उनका विचार था कि विद्यार्थी को शिक्षण संस्थायें केवल अक्षर ज्ञान की ऊँचाइयों पर ही तो चढ़ाती हैं। भारतीय इतिहास, सभ्यता संस्कृति, कला और दिनचर्या का प्रत्यक्ष ज्ञान उन्हें कहाँ से मिले। दो उपाय हैं, या तो उन्हें सालों भ्रमण करवाया जाय जो बड़े पैमाने पर सम्भव नहीं है। ये वे दिन थे जब पश्चिमी संस्कृति की एक धुँधली परत भारतीय संस्कृति और कला पर चढ़ चुकी थी दूसरा उपाय था उन सब की झलक यहीं मिल जावे। ताकि विद्यार्थी और आम आदमी उन्हें आँखों से देखे। सन् 1936 में संग्रहालय के लिए उन्होंने आधार बनाना प्रारम्भ कर दिया। स्वामी जी का यह स्वप्न सन् 1938 में साकार हुआ। लेकिन संग्रहालय को वर्तमान भव्य रूप सन् 1950 में प्राप्त हुआ।

जगदीश चन्द्र चतुर्वेदी (अध्यक्ष सर छोटूराम स्मारक संग्रहालय) द्वारा सन् 1956 में लिखित पुस्तक 'कला के पद्म' के प्रथम खण्ड से इस संग्रहालय के उदय और विकास शीर्षक से लिखा गया स्वामी जी का आमुख उनके संग्रहालयों के प्रति सूक्ष्म विश्लेषण का परिचायक है। ' संग्रहालय नाम के लिये एक छोटा शब्द है, परन्तु इस शब्द के मर्म में बहुत कुछ निहित है इसके द्वारा प्राचीन कला कौशल एवं इतिहास सामने आ जाता है। इसमें मिट्टी तथा धातु की प्राचीन वस्तुएँ मूर्तियाँ, वस्त्राभेज, पत्र, हस्तलिखित पुस्तकें, सिक्के, शिला लेख, ताम्र-पत्र, शास्त्र, वस्त्र, चित्र आदि प्राचीन नवीन वस्तुयें, उनके समय स्थान गहराई व विवरण के साथ रखा जावे जिससे प्राचीन इतिहास में सहायता एवं वर्तमान कला कौशल को उत्तेजना मिले।"

पुरातत्व और इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान श्री विश्वेश्वर नाथ रेऊ ने अपने एक पत्र में संग्रहालय तथा उसकी उपयोगिता के सम्बन्ध में उक्त भावनायें व्यक्त की थी। संग्रहालय की वस्तुओं के चयन उसकी स्थापना तथा विकास के समय मेरे आगे रेऊ जी के उपरोक्त विचार ही सदा रहे। परिणाम स्वरूप संगरिया के इस संग्रहालय में विविध प्रकार की वस्तुएँ एकत्रित होती चली गई। मेरे इस प्रयत्न के तीन उद्देश्य रहे हैं, प्रथम इतिहास की जानकारी, दूसरी कला-कौशल प्रेरणा और तीसरी सर्व साधारण जनता का मनोरंजन।

× × × ×

संस्कृत शिक्षा की इच्छा से प्रेरित होकर चाहने पर या न चाहने पर भी यह भगवाँ वेष धारण किया और इसी से सम्बन्ध रखने वाले कुम्भो, तीर्थों और भारत के भिन्न भिन्न प्रान्तों के भाषा और उनमें होने वाले मेलो, उत्सवो, प्रदर्शनियो, बड़े-बड़े नगरो, रियासतो, राज्यो और उनके पुस्तकालयो, संग्रहालयों, मठ मन्दिरो के साथ दूसरे धर्मों के गिरजों मन्दिरो, पीर फकीरों के मकबरों, उजड़े किलों मे घूमा भटका और उनको देखा।

× × × ×

मैं एक बार अजमेर गया। वहाँ ढाई दिन का झोंपड़ा देखा जो केवल टूटी फूटी पत्थर की मूर्तियो की ही बनी इमारत है। भारत का प्राचीन इतिहास दबा हुआ पड़ा है।

× × × ×

मैंने श्री अरविन्द का पाण्डीचेरी आश्रम रवि बाबू का शान्ति निकेतन, आगरा का दयाल बाग, सिन्ध का साधु बेला साबरमती आश्रम, पटना का सदाकत आश्रम आदि देखे और वहाँ से अपने साथ एक उत्साह और कार्य की इच्छा शक्ति लेकर आया।

× × × ×

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के झासी अधिवेशन से लौटने पर रेऊ (अध्यक्ष जोधपुर राजकीय संग्रहालय) का पत्र मिला जिसमे मुझे पुस्तकालया के साथ संग्रहालयो की स्थापना का सुझाव दिया था। क्योंकि पुस्तकालयो और संग्रहालयो का इतिहास के नाते एक जैसा सम्बन्ध रहा है।

× × × ×

मान सरोवर की यात्रा दस हजार फुट की ऊँचाई से प्रारम्भ होती है गौरी कुण्ड की ऊचाई 1,9600 फुट है मैं मार्गो मे विभिन्न रगों व प्रकारो के पत्थर इकट्ठे करता मान सरोवर की इस यात्रा में मैं अपने साथ अनेक वस्तुएँ लाया। हिमालय मे सुनहरे बालों के पक्षीराज की खाल पहाड़ी भेड़ बकरियो की खालें, जितने वर्ष की आयु उतने ही गांठो वाले सींग, शेर का जबड़ा, तिब्बत के सिक्के, मानव अस्थियो, के आभूषण बहुत सी सामग्री। श्री लका, ब्रह्मा, तिब्बत, नेपाल, हॉगकॉग आदि यात्रायें की। कांग्रेस व अधिवेशनों में जाया करता था। संग्रहालय की बहुत सी सामग्री सौराष्ट्र, अहमदाबाद, नागपुर, रामगढ आदि के अधिवेशनों की प्रदर्शनियों से ली गई है। कुछ महत्वपूर्ण सामग्री कलकत्ते के अलभ्य वस्तुओं के व्यापारी श्री चुन्नीलाल नौलखा से क्रय की गई।

× × × ×

स्व० श्री ताराचन्द जी की सिफारिश और विश्वास से मुझे महाराजा विजेन्द्रसिंह भरतपुर द्वारा गुप्त कालीन स्वर्ण मुद्रायें मिली, महाराज बीकानेर अलवर, महाराजा

पटियाला एव पेप्सू सरकार ने उनके अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये। श्री महन्त हरिहर गिरी द्वारा दी गई छोटी तोप (चल सकती है) दी थी गोवर्धनसिंह द्वारा अलवर महाराज के दिये मृत जीव जन्तु प्राप्त हुए। ठा० जसवन्त सिंह एस० पी० ने एक बहुमूल्य बडा शेर दिया। राय कृष्ण दास साहब द्वारा मुझे राजघाट की पाषाण और मृण्मूर्तियाँ मिली और डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल ने सग्रहालय की वस्तुओं विशेष कर सिक्कों का काल निर्धारण किया।

× × × ×

प्रो० हुमायू कबीर, चौधरी शिवकरण सिंह जी, कुम्भाराम आर्य, चौधरी रामचन्द्र, का सक्रिय सहयोग एव राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री मोहन लाल सुखाडिया राजस्थान पुरातत्व विभाग के अध्यक्ष डा० सत्यप्रकाश, सन्त विनोबा भावे, प० जवाहर लाल नेहरू, श्रीमती इन्द्रा गाधी, श्री मन्नारायण आदि महानुभावो ने सग्रहालय मे पधारकर भावी योजनाओ के लिए सम्बल प्रदान किया।

सग्रहालय की कहानी स्वामी जी की जुबानी से हमे पता चलता है कि निजी क्षेत्र मे सग्रहालय स्थापित करना और वह भी एक फकीर द्वारा, जिसके पास सम्पत्ति के नाम पर मात्र अपना शरीर हो कितना महान् कार्य है। मैं कहूँगा एक अकेले व्यक्ति का इतना बडा सग्रह इन परिस्थितियो मे दुनियाँ मे दुर्लभ है। तभी तो विनोबा जी ने सग्रहालय की दर्शक पुस्तिका मे अकित किया था 'यह भारत के सर्वोत्तम सग्रहालयो मे से एक है भारत ऐसे ग्रामीण सग्रहालयो पर गौरव करता है स्वामी जी का और सफलता मिले।' भारत मे एक से बढकर एक, सग्रहालय हैं जो अथाह सम्पत्ति और अपार सत्ता के धनी व्यक्तियो द्वारा निर्मित हैं, जिन्हें हुक्म देने की आवश्यकता पडती है। मान सरोवर के दुरुह रास्तो पर जान जोखिम मे डाल कर सग्रह नही किया जाता। सग्रहालय की समस्त वस्तुयें स्वामी जी द्वारा माँगी हुई, खरीदी हुई और सीने के चिपका कर सग्रहालय तक लाई हुई हैं। दिल्ली मे एक चित्रों की प्रदर्शनी लगी स्वामी जी को अनेक चित्र पसन्द आ गये। स्वामी जी ने उसकी कीमत पूछी तो सामने एक अध नगे साधु को देख अधिकारी तिरस्कार पूर्ण भावना से बोला महाराज यह भीख मे नही दिये जाते हैं इनकी बडी कीमत है, स्वामी जी भी कम स्वाभिमानी नहीं थे। झट से जवाब दिया भीख नही कीमत पूछ रहा हूँ? अधिकारी शर्म से पानी पानी हो गया पाँच हजार रुपये माँगे थे, तीन हजार रुपये मे ही स्वामी जी के इच्छित सभी चित्र दे दिये। चित्रों को सर पर उठाया और चल दिये। इस बीच एक ससद सदस्य ने आश्चर्य से प्रश्न किया, "स्वामी जी आप इतने बडे आदमी हो इन चित्रों को यूँ सिर पर क्यो उठा रखा है? स्वामी जी ने कहा इन्हे सुरक्षित ले जाने का इससे अच्छा और कोई तरीका नही है।

सग्रहालय स्वामी जी के अथक प्रयासों की यादगार है। सग्रह की एक-एक

वस्तु के पीछे उसे लाने का भारी कष्ट और परिश्रम का इतिहास है । स्वामी जी ने एक ऐसी कष्ट कारक यात्रा का वर्णन किया है "मुझे याद है कि एक बार मैंने एक बड़ा शीशा लिया जिसका मूल्य 110 रुपये था, भीतर का चित्र ही 1000 रुपयें का था उस चित्र को लाने पर केवल कुलियों पर ही 42 रुपये खर्च हुए ऐसी लागत वाला शीशा चाय का कप पकड़ते-पकड़ते इन्जन के झटके से टूट गया । शीशा चूर-चूर हो गया ।

× × × ×

मैं इतना सावधान होकर सोता हूँ कि सिराहने रखी हुई ऐनक को भी कभी ठेस नहीं लगने दी जरा सी आहट पाकर जाग उठता हूँ ।

× × × ×

रामगढ़ (रांची) की कांग्रेस नुमाइश से कुछ सामान लेकर आ रहा था । टूटने-फूटने वाली चीजें थी, तीसरे दर्जे के डिब्बे मे था, दो बड़े-बड़े टोकरों में बांधकर बैठा रहा दो रातें और एक दिन सफर मे निकल गया पर पलक भी नहीं झपकी '

संग्रहालय मे कला दीर्घा, लघु कला दीर्घा, शहीद कक्ष, समुद्री सामग्री कक्ष, पशु जीवन शास्त्र कक्ष, सांस्कृतिक मानव शास्त्र, दीर्घा अस्त्र शस्त्र कक्ष, पुरातत्व कक्ष, स्वामी जी की कल्पना साज सज्जा और व्यवस्था की उच्च क्षमता की प्रतीक हैं । स्वामी जी के देहावसान के बाद उनकी जीवन झांकी भी संग्रहालय मे बनाई गयी है ।

सर छोटूराम स्मारक संग्रहालय मानव जाति की थाति है । अपनी भव्यता आकर्षण एवं महत्वपूर्ण संग्रह के कारण विद्वानों, पर्यटकों, विद्यार्थियों एवं जन सामान्य का मार्गदर्शक बना हुआ है । स्वामी जी के चौथी दशक की यह कल्पना आज भारतीय इतिहास और पुरातत्व जीवन्त प्रकाश स्तम्भ बनकर उभरी है ।

(E) 'वैद्य ही अध्यापक एवं अध्यापक ही वैद्य"

काया की काया पलट अपील से स्वामी जी को पर्याप्त धन एवं संस्था को अनेक आने जाने लोगों का साथ मिला । संस्था मे विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं आने-जाने वाले से चहल पहल रहने लगी । संस्था को स्वावलम्बी बनाने के प्रयास म स्वामी जी ने 1934 मे ही एक छोटे से औषधालय की स्थापना कर दी थी । लेकिन स्वामी जी चाहते थे कि ग्रामीण भागों के कष्ट निवारण हेतु यहाँ स्वास्थ्य शिक्षा प्रारम्भ की जावे और इसी विचार मे से एक महान विचार ने जन्म लिया । 'वैद्य ही अध्यापक एवं अध्यापक ही वैद्य' जो स्वामी जी का मौलिक विचार था ।

अपनी योजना की पुष्टी मे स्वामी जी ने लिखा था कि "हमारे मुल्क में इतने डॉक्टर नहीं है कि गाँव-गाँव में डॉक्टर हो और न इतने मेडिकल कॉलेज और आयुर्वेदिक कालेज हैं कि डॉक्टर और वैद्य की सेवायें भारत के पाँच लाख गाँवों को मिल सकें । सबसे अच्छा

यही है, कि हमारे प्राथमिक शिक्षा के अध्यापक स्वाथ्य का ज्ञान प्राप्त करें। और सुबह शाम या स्कूल के समय के अलावा गाँव वालों को सामान्य स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवायें करें। बुखार, खाँसी, नजला, जुकाम, सिरदर्द और पेंटदर्द, चोट लगना आदि ऐसे रोग हैं जो कभी कभी किसी को हो सकते हैं। साधारण रोग उपचार के अभाव मे जान लेवा सिद्ध हो सकता है। समय पर लगी राख, लाख का काम करती है। इससे अध्यापक की प्रतिष्ठा बढ़ेगी और उससे व्यक्तिगत और सामाजिक लाभ होगा।

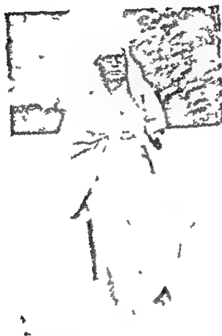
सन् 1937 मे आयुर्वेद विद्यालय की स्थापना की गई। आयुर्वेद शिक्षा के लिए अलग से कोर्स था। लेकिन सस्था से परीक्षायें पास करके जाने वाले हर विद्यार्थी से सामान्य स्वास्थ्य शिक्षा का ज्ञान करवाया जाता, ताकि वह छात्रो एव ग्रामीण लोगो की चिकित्सा करें। सस्था मे गरीबो को निशुल्क चिकित्सा व्यवस्था की गई। विद्यालय अपने रसायन शालाओ मे अति आवश्यक औषधियो का निर्माण भी करता था। यह योजना आगे चलकर मरुस्थल म खोले गये लगभग 287 विद्यालयों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रो मे अति उपयोगी सिद्ध हुई। स्वामी जी जानते थे कि अभी यह क्षेत्र आर्थिक रूप से इतना सक्षम नहीं है कि वैद्यों या डॉक्टरो एव अध्यापको को हर गाँव मे भेज सके। अत अध्यापक को ही बहुउद्देशी रूप दिया गया। आज भी हजारो अध्यापक गाँवो मे स्वामी जी के इस मन्त्र के अनुसार अपनी जीविका के लिए अतिरिक्त आय जुटा रहे है।

(F) नखलिस्तान का निर्माण

बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण एव बाग बगीचों की स्थापना

बालू रेत का अथाह समुद्र आँखो की नमी को सुखा देने वाली गर्म लू तीन सौ फीट से अधिक गहरा जलतल, वह भी गर्मियो में सूख जाये, बूँद बूँद के लिए आसमान को निहारते नर-नारी टँकरो द्वारा बीसो मील से आने वाल पानी को प्राप्त करने हेतु एक-एक लोटा पानी के लिए घण्टो तपती दुपहरी में खड़ी भीड़ क्या कोई कल्पना कर सकता है ? ऐसे स्थान पर पेड़ो का झुण्ड, बाग बगीचो की शोभा ? लेकिन उस तपस्वी के तप से यह सब उनके आने के 5-6 वर्षो मे ही हो गया था।

स्वामी जी ने स्वय ऐसे ही अभावग्रस्त क्षेत्र मे जन्म लिया था, उसके बाद उन्होने भारत क वे समृद्ध एव प्रकृति के सुरम्यस्थल देखे। बहादुर सिंह जी भोबिया कहा करते ■ कि नहर के किनारे कुवा खोदने का क्या फायदा। कुआ वहाँ खोदो जहाँ आवश्यकता हो। इसी भावना को स्वामी जी ने आगे बढाया। पानी जितना भी प्राप्त होता उसका आर्थिक उपयोग किया जाता। हर विद्यार्थी को एक पौधा सौंपा गया, जिसे सस्था छोडते वक्त एक वृक्ष देना होता था। विद्यार्थी पौधे के साथ एक पत्थर रख लेते, उसी पर स्नान करते उसी पर कुल्ला, यानि पानी की हर बूँद का सर्वोत्तम उपयोग किया जाता।



त्याग सर समाज सेवी सन्त स्वामी जी सन् 1927 मे



1 अप्रैल 1959 को प्रधानमन्त्री पंडित नेहरू और स्वामी जी

जहाँ यहाँ पहले पाँच सात वृक्ष थे वहाँ अब एक अच्छी वाटिका हमारे पास है और तमाम संस्था के अन्दर सैंकड़ों वृक्ष हैं। सब मिलकर शायद हजार हो।"

× × × × ×

अबोहर, मुक्तसर, बाजीदपुर तो पौधे लाने के लिए घर थे ही परन्तु वाटिका के लिए तो बेल बूंटे सहारनपुर, फिरोजपुर, लाहौर, आगरा, आदि स्थानों से भी लाये गये थे। छ वर्ष से बराबर अबोहर और बाजीदपुर से शीशम के सैंकड़ो पेड़ बरसात के दिनों में सगरिया लाये जाते रहे हैं। किन्तु दीमक, आँधी रेत, और वर्षा के अभाव से इनमें से बहुत कम जड़ पकड़ पाये हैं एक बड़ा पेड़ जो रोहतक जिले से लाया गया था वह भी मर गया।"

रिपोर्ट में वृक्षों को आगन्तुकों की संज्ञा देते हुए सूची भी हुई है "अब हम उन आगन्तुकों के नाम की सूची दे रहे हैं जिन्हें हम बड़े आदर सत्कार और कष्ट साध्य यत्नों से लाये थे और जिनका जो जान से आतिथ्य कर उन्हें सदा के लिए फूलों-फूलों का अधिकार और स्थान दिया था। और जिन पर बड़ी-बड़ी आशायें और अदम्य उत्साह था और आज जिनके चले जाने से भीतर ही भीतर टूट देवता की उलझनें ध्वनित कर रही हैं।' चाँदनी रातरानी' पीले रंग के छोटे और बड़े फूलों की चमेली, श्वेत चमेली, लाल गुड़हल, श्वेत गुड़हल, गुल दोदी, छोटी बड़ी इलायची, गुलखेरा, मोतिया बेल (दो जाति की) मोगरा, कनेरपीली, लाल, सफेद, नरगस रतनजोत, सदाबहार लाजवन्ति केला, केली (तीन रंग) सुदर्शन, महदी अलियर, पतरज, पत्थर चट्टू, रसीतिया, गुलाबास, बुंराट (दो प्रकार का) नीली घास, फरने, मुरम्हा, टिकामा और सोसन, आकाश नीम, रत्क मजनी, पवन सीनिया, पवन सरियाँ, काष सिनिया, आमपीच, ईड सरल, मोर पंख, जामुन बड़ा, लसूड़ा, आम, अनार, निम्बू, खट्टा, सम्मालू अजीर बाड़ा, मोलसरी अगस्त फालसा, नाशपाती, सेब, ढाक कचनार, नासकेस, समेंदा, बेलें, सतावर अंगूर, गिलोय, बेलगुडहल, रेलवे करीप मखमली, आइपोमिया, जंगली रायबेल और इनक पैदा तथा अनेक व जिनका अभी नामकरण संस्कार भी नहीं हुआ। ये थे स्वामी जी के अतिथि। वृक्षों, बेल बूंटों का संग्रह और वह भी थार मरुस्थल में शायद अपने प्रकार का अनूठा बोटनीकल गार्डन था। आज भी स्वामीजी की रचना कृषि महाविद्यालय में एक सौ प्रकार से अधिक वनस्पति के नमूने हैं लेकिन स्वामी जी का उन परिस्थितियों में संग्रह और उन्हें जिन्दा रखने का उपक्रम उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वनस्पति शास्त्री का दर्जा दिलाने के लिए सम्पूर्ण मसाला था।"

रिपोर्ट के अन्त में उल्लेख है कि "जिन बेल बूटों को वक्त बेवक्त हमने हनुमानगढ़ के पानी से जिलाया है वह कठिनाइयाँ कभी आँखो से ओझल थी"""
आज उनका भविष्य पानी के समद में उज्ज्वल दिखाई दे रहा है।""
" बचने वाले बेल बूंटे गये परिवार से कहीं अधिक अपना परिवार बना लेंगे।""
भयकर अंधेरी रात के बाद प्रकृति के नियम से जगमगाता सूर्य सदा ही निकलता है"

प्रकृति के नियम बड़े सरल हैं। भेद इतना ही है कि हम अभी उसे समझ नहीं पाये हैं।

सहारा रेगिस्तान में जीवन की आशा निरर्थ नखलिस्तान प्रकृति प्रदत्त है लेकिन थार मरुस्थल में ये नन्दनकानन मानव निर्मित। यह सब सर्व शक्तिमान के आशीर्वाद व उसके देव दूत स्वामी केशवानन्द जी महाराज ने किया तभी तो लेखक ने केशव स्मारिका में उन्हें ऐ बालू रेत पर लिखने वाले इतिहासकार नाम से सम्बोधित किया था।

तूने बदसूरती को सूरत बख्शी,

तंगहाली को खुशहाली बख्शी।

रेत के समुद्र में नखलिस्तान बनाया।

(G) कार्य में सफलता वरना मौत

सन् 1932 में स्वामी जी के आगमन के बाद हरपल संस्था बनती सजती सवरती रही। 1938 39 में यह स्थान आकर्षण का केन्द्र और सजीव रूप धारण कर चुका था। स्वामी जी की पूर्व संस्था साहित्य सदन अबोहर भी उन्हीं के निर्देशन में चल रही थी। जाट स्कूल से लोगों की आशाएं बढ़ने लगी और स्वामी जी आशाओं की पूर्ति में हर पल सोचते और करते रहे। काय प्रारम्भ रखने एवं उसके लिए धन संग्रह इन दिनों स्वामी जी का मुख्य काय होता है। मीलों पदल ऊटों, घोड़ों से सफर तय कर धन संग्रह करते। स्वामी जी ने स्वयं लिखा है कि हमारा यह मांगने और रात दिन फिरने का काम उस वक्त तक चालू रहा जब तक की हाई स्कूल के लिए लायक इमारतें और छात्रावास न बन गये। इन दिनों का स्वामी जी का काय करने का मूल मन्त्र था —

1941 के अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन के अलावा इस अवधि में जाट स्कूल के लिए धन संग्रह पर उससे विद्यार्थी आश्रम कुण्ड व अध्यापक निवास सभास्थल एवं पशुशाला का निर्माण स्वामी जी के विशेष काय रहे।

(H) संस्था स्थापना के 25 वर्ष पर रजत जयन्ती समारोह 1942

बहादुर सिंह भोबिया का शक्षिक पौधा अब वृक्ष का आकार धारण कर गया था। इस अवसर पर आयोजना के जरिये संस्था के कार्यक्रमों को जनता तक पहुचा कर उसे प्रोत्साहित करने अवसर का फायदा उठाते हुए धन संग्रह एवं लोगों को आकर्षित करने हेतु रजत जयन्ती महोत्सव मनाया गया।

महोत्सव का सबसे दूरगामी फल यन्त जनता को यह पहुचा कि एक प्रस्ताव बीकानेर सरकार को मृत्युभोज विरोधी कानून बनाने के सम्बन्ध में भेजा गया जो रियासती सरकार ने लागू भी कर दिया।

समारोह में पंजाब के किसान नेता एवं तत्कालिन रेवन्यू मंत्री चौधरी सर छोटूराम एवं बीकानेर के शिक्षा मंत्री श्री के एम पन्नीकर भी 13-14 सितम्बर 1942 को पधारे। उनके सानिध्य में भूतपूर्व विद्यार्थी एवं समाज सुधार सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रकाशित रजत जयन्ती रिपोर्ट में 1917 से 1942 तक का संक्षिप्त ब्योरा एवं भावी योजनाओं की झलक मिलती है। रिपोर्ट के पर्से पर जाट स्कूल संगरिया में पढ़े हुए विद्यार्थियों का लेखा जोखा दिया हुआ है। (परिशिष्ट"" में देखें) जिसके अनुसार 1917 में 28 विद्यार्थियों से शुरू पाठशाला में 1942 में 184 और इस अवधि में कुल 2508 विद्यार्थियों ने शिक्षा ग्रहण की। जिसमें 1180 जाट, 141 सिख, 516 विश्नोई, 187 ब्राह्मण, 214 वैश्य, 37 मुसलमान, 42 राजपूत एवं 90 हरिजन दिखाये गये। नीचे टिप्पणी में लिखा है इस इलाके में मुसलमान नहीं के बराबर और राजपूतों की संख्या अति अल्प होने के कारण उनकी संख्या कम है रिपोर्ट में छात्रावास में रहे विद्यार्थियों की संख्या वर्षवार एवं आय व्यय का रिकार्ड जनवरी 1918 से दिसम्बर 1941 तक का लेखा पेज संख्या 13 पर दिया है। (परिशिष्ट"" देखें।

1942 में ही वह शुभअवसर आया जब स्वामी जी को उनकी महान् हिन्दी सेवा के लिए साहित्य सम्मेलन ने साहित्य वाचस्पति की उपाधी से सम्मानित किया।

(1) जाट हाई स्कूल

रजत जयन्ती समारोह की सफलता के बाद स्वामी जी की वह साध पूरी हुई जिसके लिए उन्होंने 10-11 वर्ष प्रयास किये थे। धन संग्रह और हर पल परिश्रम के द्वारा हाई स्कूल बनने से पूर्व ही उसके लिए समान सुविधा स्वामी जी ने जुटाली थी। 1943 में जाट मिडिल स्कूल हाईस्कूल बनने के साथ ही उसमें हिन्दी साहित्य सम्मेलन की परीक्षा केन्द्र भी बना दिया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध का जमाना था। सरकार ने स्कूल के लिए 50,000 रुपए रिजर्व फण्ड की शर्त रखी लेकिन अब जन सामान्य स्कूल का महत्व समझ चुका था जनता यह जान गयी कि स्वामी जी के हाथों उनका संग्रहित धन सुरक्षित है और उनके ही विकास में खर्च किया जावेगा। अतः लोगों ने खूब धन दे दिया विशेष बात यह रही कि भारती फौजियों ने मोर्चों से स्कूल के लिए धन भेजा। भारतीय सिपाही जो अंग्रेजों की ओर से देश से हजारों मील दूर विदेशी भूमि पर दुश्मन से लोहा ले रहे थे। वे भी स्कूल को नहीं भूले।

(J) स्वामी जी की महान शिक्षा योजना

मरु भूमि सेवा कार्य

सन् 1944 में स्वामी ने संस्था को इस स्थिति में ला दिया था, कि अब संस्था अपने दायरे से बाहर निकल कर भी कुछ कार्य कर सकती थी समग्र विकास की भावना लिए स्वामी जी का काम करने का तरीका भी यही था कि शिक्षा केन्द्र का फायदा केवल उस स्थान तक ही समिति न रहे जहाँ वह स्थापित है, बल्कि उसका चारों ओर प्रकाश फैले, लोगो को फायदा पहुँचे।

रेगिस्तान की कठोरता स्वामी जी ने भोगी थी। मरुभूमि में शिक्षा प्रचार उनका स्वप्न था। जिसे साकार करने हेतु सितम्बर 1944 में संस्था के वार्षिक उत्सव पर उन्होने एक योजना रखी जिसे सहर्ष स्वीकार किया गया। इस योजना के संचालन हेतु प्रथम सहयोग राशि देने वाले चौधरी माम राज एवं चौधरी चन्दरा राम मोटेर, चौधरी छोगाराम एवं चौधरी धर्माराम पलाना थे, लेकिन इस विस्तृत योजना के लिए इतना ही काफी नही था। अतः इस क्षेत्र के धनी सेठो से मिलने स्वामी जी कलकत्ता गये। स्वामी जी का कलकत्ता में भारी स्वागत हुआ और उनकी योजना के सहयोगियो का ताता लग गया। सर्व प्रथम श्री मोहन लाल जालान तथा नन्द लालजी भुवालका ने 10 पाठशालायें खोलने का जिम्मा लिया। 24 दिसम्बर 1945 को स्वामी जी इसी निमित्त फिर कलकत्ता गये। 12-1 1946 को सूरजमल जालान स्मृति भवन में प्रवासी सेठो एवं मारवाड़ी रिलिफ सोसाइटी के तत्वाधान में एक सभा हुई। जिसमे स्वामी जी की भावना के अनुरूप उनके सद्-कार्यों को स्वीकृति मिल गई। इस योजना के तहत करीब 100 पाठशालायें बीकानेर, लुणकणसर, सूरतगढ, नोहर, भादरा, राजगढ, चुरू, रतनगढ, सुजानगढ, डूंगरगढ, सरदारशहर आदि तहसीलो के गाँवो में खोली गई। जिनका अधिकतर वित्त भार प्रवासी सेठो ने उठाया। इस योजना के तहत चली इन पाठशालाओ का संचालन स्वयं स्वामी जी ने किया। वेतन भुगतान, कार्यक्रम अध्यापको को छुट्टियाँ स्वीकृत करना, अध्ययन सामग्री भेजना, निरीक्षण आदि कार्य जाट स्कूल पर ही रहा। इन स्कूलो का निरीक्षण कार्य स्वामी जी ने स्वयं एवं उनके द्वारा प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं ने अनेक प्रकार के कष्ट सहन कर भी किया श्री हरीदत्त सिंह भादू कवि प्रचारक, श्री लाल चन्द्र पूनियाँ, श्री दौलतराम सारण, श्री हंसराज जी आर्य, आदि ने सामन्ती बाधाओ और वंचित उच्च वर्गों के विरोध के बावजूद स्वामी जी के सानिध्य में किया। इस योजना को समझने के लिए एक पुस्तिका (मरुभूमि सेवा कार्य) छपवाई गई, यह पुस्तक स्वामी जी को समझने का सूत्र कही जा सकती है। पुस्तक केवल योजना नही बल्कि मरुस्थल की दर्दनाक कहानी है। उन समस्याओं से उस पर्यावरण से कैसे निबटा जाय, उसके उपाय और समाधान बताये गये हैं। प्रथम बार अपनी लेखनी से लिखी हुई अपनी कहानी है।

क्या समझ थी, क्या दर्द था, स्वामी जी के हृदय मे मरुभूमि के प्रति। क्यो न होता वह उनकी जन्म भूमि जो थी । आज वह आत्मा हमारे मध्य भौतिक आकार में नही है लेकिन उनका स्वप्न केवल मरुभूमि सेवा कार्य की सौ पाठशालाओ के रूप मे साकार हुआ बल्कि प्रसिद्ध इन्जिनियर ■ वरसेन की कल्पना राजस्थान नहर, मजदूरो के हाथो तराशी गयी तस्वीकर आज मरुधरा की प्यास बुझाने के साथ साथ स्वामी जी के प्रिय जन-जन एव उन पशु-पक्षियो, बेल-बूटो को भी पल्लवित पुष्पित कर रही है ।

(K) रियासत ने स्कूल का महत्व समझा

जाट स्कूल रूपी वट वृक्ष की शाखा प्रशाखाओ ने दूर दूर तक जडे डाली । मरुभूमि सेवा कार्य के जरिये स्वामी जी का नाम ज्ञान के साथ-साथ टीलों को पार करते हुए मरुस्थल के चप्पे-चप्पे मे पहुंचा, स्वय महाराजा शार्दूल सिंह जी सस्था मे पधारे, जाट हाई स्कूल के उद्योग विभाग का उद्घाटन उनके कर कमलो से हुआ, उनके स्वागत मे विद्यापीठ का सबसे बडा दरवाजा 'सिंह द्वार' बनाया गया। सस्था की सम्मति पुस्तको मे बडे काले अक्षरो मे अंकित है शार्दूल सिंह सगरिया 5-1-1945, को आये लेकिन उन्होने अपनी सम्मति नही दी । इसी वर्ष स्वामी जी ने प्रान्तीय वैद्य सम्मेलन बुलाया । सम्मलित प्रतिनिधियो के विचार सार के आधार पर एक पुस्तक नेहरू रोग प्रदीप मरुस्थल निवासियों हेतु विशेष छपवाई गयी। नेहरू (न्हारवा) वर्षा कालीन अशुद्ध पानी पीने से मरुस्थल निवासियो मे आम बात थी । इस रोग को समूल नष्ट करने हेतु साधन जुटान की अपील भी निकाली गई ।

स्वामी जी ने अपना पुस्तैनी गाँव मगलूणा बचपन मे ही छोड दिया था। 1945 के फरवरी माह मे उनके विश्वसनीय अनुचर मास्टर तेगराम जी के साथ वे अपने घर मगलूणा गये । इस यात्रा मे मास्टर तेगराम (सम्पादक दीपक 'अबोहर' के समक्ष स्वामी जी ने मरुस्थल की दुर्दशा एव उसके लिए जीवन पर्यन्त कुछ करते रहने के लिए सकल्प दोहराया था ।

(L) मानवतावादी दृष्टिकोण से सृजनात्मक कार्य

देश विभाजन एव विभाजन पूर्व की परिस्थितियाँ अशान्ति लूट पाट घृणा एव अनिश्चय की थी । उन परिस्थितियों मे भी स्वामी जी अपने मन्दिर को सजाने सवारने एव उसके विकास में लगे रहे ।

सन् 1946 मे नोआखली के दगो मे गाधी जी के साथ-साथ पहुँचे और वह साम्प्रदायिक विष अन्यत्र न फैले इसका प्रयास करते रहे ।

रतनगढ के विद्यार्थी आश्रम के शिलारोहण सम्मेलन (13-14 अप्रैल 1946) मे प्रकट किये विचार स्वामी जी को मनीषियों की कोटि मे रखते हैं ।



स्वामी केशवानन्द जी रूसी दूतावास के सम्पर्क अधिकारी श्री वाराग्निकोव को विद्यापीठ प्रकाशन भेंट करते हुए



ग्रामोत्थान महिला विद्यापीठ महाजन में 1955 में उद्घाटनोत्सव पर भाषण देते हुए समारोह की उद्घाटन कर्ता श्रीमती डॉ० सुशीला नैयर तथा अध्यक्ष श्रीमती कमला बेनीवाल तत्कालीन उपमन्त्री राजस्थान सरकार

सन् 1947 में एक तरफ जहाँ खून खराबा हो रहा था वहाँ स्वामी जी ने शिक्षा प्रसार का अनवरत कार्यक्रम अपनाये रखा। 24 मई 1947 में बीकानेर किसान छात्रावास समारोह में गये। बीकानेर मेघ वंश (हरिजन) सम्मेलन का उद्घाटन किया और मार्च 1947 में मानसरोवर की कष्ट साध्य यात्रा की। साम्प्रदायिक सौहार्द के अनेक अनुकरणीय कार्य किये।

(M) जाट स्कूल का नाम परिवर्तन

सन् 1917 में चौधरी बहादुर सिंह भोबिया एवं उनके साथियों ने जाट बहुल क्षेत्र होने के कारण स्कूल का नाम जाट स्कूल रख दिया था, जिस पर समय-समय पर विशेषकर सामन्ती सरकार एवं उनके प्रभाव वाले लोगों द्वारा आलोचना की गई। रामगोपाल मोहता बीकानेर के प्रसिद्ध सेठ हुए हैं उनका एक पत्र इस सम्बन्ध में प्रकाश डालता है—

श्रीमान् चौधरी हरिश्चन्द्र जी,

एक बात आपको आज बहुत गोपनीय लिखता हूँ आपके स्कूल का नाम जाट स्कूल है। यदि जाट स्कूल के बदले कोई और सार्वजनिक नाम रख दें, तो आपको ग्रांट आदि की अधिक सहायता प्राप्त हो सकती है।

भवदीय

हस्ताक्षर

रामगोपाल मोहता

उपरोक्त सलाह प्रलोभन, हस्तक्षेप और संकीर्णता वश क्योंकि स्कूल सब जातियों के लिए खुला था अतः चौधरी हरीशचन्द्र एवं अन्य हितैषी सर छोटूराम एवं श्री लालचन्द जी आदि ने स्कूल का नाम बदलने से इन्कार कर दिया।

चौधरी लालचन्द जी ने श्री हरीश चन्द्र नैण को लिखा था कि अगर बीकानेर सरकार एक मुश्त एक लाख रुपया देने को तैयार हो तो स्कूल का नाम महाराजा गंगा सिंह जाट स्कूल संगरिया' रखा जा सकता है वहीं चौधरी छोटूराम जी ने लिखा कि यह जानने की कोशिश कीजिये कि महाराजा गंगा-सिंह जी अपना नाम जाट स्कूल के साथ जोड़ने के इच्छुक हैं क्या? रियासत की ओर से वैसा सुझाव फिर कभी नहीं आया। स्कूल बिना जाति का ख्याल किये विद्यार्थियों को शिक्षा देता रहा लोगों ने भी अच्छा सहयोग दिया। लेकिन स्वतंत्र भारत में स्वामी जी किसी महत्त्व संस्था को मात्र शब्द के रूप में बांध रखना नहीं चाहते थे, अतः 1948 में उस महान् परम्परा जाट स्कूल का नाम बदल कर 'ग्रामोत्थान विद्यापीठ" रख दिया गया। नाम बदलने के लिए भी स्वामी जी को काफी रस्साकशी करनी पड़ी स्वामी जी ने स्वयं लिखा है -

जी आर्य चौधरी मोतीराम जी सारण, श्री पन्ना लाल जी बारुपाल एव श्रीमती नानी बाई शर्मा।

कस्तूरबा ग्रामोत्थान महिला विद्यापीठ महाजन ऐसी सस्था है जहाँ उस समय पचास-पचास मील तक छात्रायें तो क्या छात्रो की शिक्षा का प्रबन्ध भी नही था। यह सौन्दर्य स्वामी जी के स्वप्नो के अनुरूप पुष्पित पल्लवति नही हो पाया। आज तो उस बजर भूमि मे राजस्थान नहर भी आ गयी है, लेकिन सचालको के राजनैतिक और व्यक्तिगत हितो के आगे उस पूज्य आत्मा द्वारा स्थापित नारी शिक्षा रूपी पौधा मानसरोवर के पानी के बावजूद मुरझाता चला जा रहा है। निश्चय ही स्वामी जी की चेतना किसी आत्मा को जाग्रति होगी और सस्था के बुरे दिन छटकर मानव की आदि गुरु नारी के सर्वांगीण विकास के लिए कोई विभूति सामने आ गई।

नवजीवन प्रेस की स्थापना

दीपक प्रेस अबोहर मे था जहाँ विद्यापीठ के प्रकाशन निकला करते थे, लेकिन स्वामी जी ने ग्रामोत्थान विद्यापीठ की नीतियो एव व्यवस्था सम्बन्धी प्रक्रिया प्रकाशनार्थ नवजीवन प्रेस की 1950 मे सगरिया मे स्थापना की। इस प्रेस से समाजोपयोगी मासिक 'ग्रामोत्थान पत्रिका' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ इसके अलावा भी अनेक प्रकाशन हुए।

(P) बेसिक शिक्षा योजना एवं समाज कल्याण कार्यक्रम

मरुभूमि शिक्षा योजना एव ग्रामोत्थान पाठशाला योजना के अन्तगत मरुस्थल मे किया गया शिक्षा प्रसार, ग्रामोत्थान विद्यापीठ का अग बन चुका था। ग्रामोत्थान विद्यापीठ म न केवल भवन बढते गये बल्कि शैक्षिक प्रवृतियाँ भी विकासोन्मुख थी। 1951 मे छात्रावास भवन सरस्वती, और नवजीवन भवन तैयार हो गये थे। 1952 मे स्वामी जी को राष्ट्रीय ससद का सदस्य बनाकर सम्मानित किया गया। लेकिन स्वामी जी जिस सीढी से ससद मे पहुच थ उसे भूले नही उसे वे साधन मानते थे साध्य नहीं स्वामी जी द्वारा सासद बनत ही लिखे गय एक पत्र से यह स्पष्ट आभास होता है कि व अपने कतव्यो से विमुख नही हुए थे—

'लोगो की इच्छा और प्रेरणा से जो कुछ हो गया वह बधाई के योग्य तो तभी समझा जायेगा जब वहाँ जाने वाले अपने कर्तव्य को निभायें। हो न हो मेरा समय वक्त वे वक्त वहाँ अवश्य ले लेगा और यदि फसल के दिन वहाँ (ससद) लग गये तो देहातो का रुपया पैसा आना बन्द हो जायेगा अस्तु अब आपका (सरदार शेरसिंह जी) ध्यान इधर खीचना चाहता हूँ कि अब आप अपना सवस्व सस्था के हाथो सौंप दें। आप ही पर अब सस्था का सचालन है'।' आज यह कर्तव्य बोध कितने सासद और विधायकों मे हैं।

ाधी जी प्रधानमंत्री पंडित नेहरू को ग्रामोत्थान विद्यापीठ संग्रहालय का अवलोकन कराते हु



स्वामी केशवानन्द जी एवं क्षेत्रीय सांसद एवं पंडित नेहरू के साथ।

सन् 1953 में सासदो के दल को जन सहयोग से बने पावन मन्दिर ग्रामोत्थान संगरिया को दिखाने लाये। श्री लाल बहादुर शास्त्री जो भी 8 जनवरी 1953 को स्वामी जी के अनुरोध पर पधारे जिनसे स्वामी जी ने बडे रोचक ढग से संगरिया का नामाकरण करवाया। 1905 से ही यह जगह चोटाला रोड कहलाती थी।

सन् 1954 को गांधी जी की कल्पना बेसिक (बुनियादी) शिक्षा कार्यक्रम स्वामी जी ने ग्रामोत्थान विद्यापीठ एवं मरुभूमि के अनेक गाँवों में प्रारम्भ किया। बेसिक शिक्षा योजना का विचार गांधी जी से और उसका प्रायोगिक रूप स्वामी जी ने 1953 में गांधी विद्यामन्दिर सरदार शहर से लिया था। स्वामी जी की सेवाओ को मध्य नजर रखते हुए गांधी विद्या मन्दिर शिक्षा सस्था जो आगे चलकर मरुस्थल में शिक्षा प्रसार का आधार बनी, उन्हे प्रबन्धकारिणी सभा का सम्मानित सदस्य बनाया था।

जून 1954 को विद्यापीठ में एक मास का समाज शिक्षा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। प्रशिक्षित कार्यकर्ता बेसिक स्कूलों के साथ-साथ ऐसे चुने हुए 36 केन्द्रो पर प्रौढ शिक्षा समाज सुधार, स्थायी वाचनालयो एव चिकित्सालयो को चलता फिरता पुस्तकालयो (जीप गाडियो मे) मे कार्य करते थे।

इन केन्द्रो के सचालन के लिए स्वामी जी के सद्प्रयत्नो से सरकार ने अपनी प्रथम पचवर्षीय योजना के तहत 50% अनुदान दिया। जिसके अन्तर्गत आधा खर्चा सरकार एवं आधा खर्चा ग्रामवासियो से उठाया गया एव सचालन ग्रामोत्थान विद्यापीठ का था।

स्वामी जी की समस्त ग्राम शिक्षा योजनाओ मे 1956 तक 22 लाख रुपये खर्च हो चुके थे, और 287 प्रत्यक्ष तथा इसके चौगुने अप्रत्यक्ष ग्राम इनकी योजनाओ से लाभान्वित हुए। ऐसे दुस्साहस पूर्ण कार्य जिसमे हजारो कार्यकर्ताओ की कष्टमय यात्रायें, बाधायें शामिल हैं कोई छोटी बडी सरकार भी करने से झिझकेगी। लेकिन उस महा मानव ने तम से घिरे मरुस्थलवासियो के लिए यह सब बिना किसी प्रतिफल की बात सोचे किया।

(Q) उच्च शिक्षा केन्द्रो की स्थापना

स्वामी जी द्वारा लाये गये असख्य पौधों, बेल-बूटों की तरह ग्रामोत्थान विद्यापीठ का हर अंग अब अपने पाँवो पर खडा हो चुका था। विद्यापीठ अब सम्पूर्ण भारत में अपना नाम रखता था। प्रशासन, राजनैतिक और समाज के हर कार्यों के सम्पादन मे कही न कहीं विद्यापीठ का आदमी बैठा था। सस्था की उपयोगिता और विशेषकर सचालक स्वामी केशवानन्द जी के कार्यों की महत्ता अब जगजाहिर हो गयी थी।

(i) बहुद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

सन् 1955 मे जाट एग्लो सस्कृत स्कूल ने बहुद्देशीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का रूप धारण कर लिया। यह ग्रामोत्थान विद्यापीठ की रीढ एव मुख्य आधार रहा है। यह स्कूल नही एक परम्परा है, एक प्रकाश स्तम्भ है, शिक्षण कला के इतिहास मे एक मील का पत्थर है। जिसने लाखों को जीवन की राह दिखाई विशेषता यह है कि, न तो इसके आदि संस्थापक स्वर्गीय बहादुर सिंह भोबिया अधिक पढे लिखे थे और न ही स्वामी जी ने कही विधिवत शिक्षा पाई। लेकिन उन्होने अपनी आने वाली सन्तानो के लिए एक शिक्षा की एक प्याऊ लगाई। वर्तमान मे तीन बडे छात्रावास, लम्बा-चोडा खेल मैदान, विशाल विद्यालय भवन, सभी आधुनिकतम प्रयोगशालायें, कृषि छात्रो के कृषि फार्म, स्वच्छ अनुशासित वातावरण को देखकर स्वामी जी को स्वर्गीय आत्म तृप्ति के क्षण भोग रही होगी।

(ii) शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय

स्वामी जी की मरुभूमि शिक्षा योजना एव शिक्षा प्रसार कार्यक्रमो में उनके सह-भागी और सचालक बिना किसी विशेष प्रशिक्षण के कार्य किया करत थ। उनके लिए समय-समय पर प्रशिक्षण शिविर लगाये जाते थे। स्वामी जी की यह सद् इच्छा थी कि ऐसा एक प्रशिक्षण सस्थान स्थायी रूप से विद्यापीठ के पास होना चाहिए और वह साध पूरी हुई 1956 के जुलाई माह मे। शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय की रूपरेखा चोधरी लक्ष्मणसिंह जी ने बनाई थी।

शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय अपने शानदार स्वच्छ वातावरण अच्छे शिक्षण भवन, आदर्श छात्रावास के लिए आज तक इस क्षेत्र और विशेष कर बीकानेर डिवीजन का आकर्षण का केन्द्र रहा है। विद्यालय प्रांगण मे स्वामी जी ने अपने हाथो से और दख-रेख मे असख्य पौधे लगवाये, जिसकी महक दर्शको को आज भी भुलाय नही भूलती। विद्यालय हरियाणा, राजस्थान और पजाब की सीमा पर स्थित होने से अध्यापक प्रशिक्षण जगत मे अधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मरुस्थल के जन-शिक्षक स्वामी केशवानन्द के इस विद्यालय से हर वर्ष 200 जन शिक्षक उत्पन्न होते हैं।

(iii) कृषि महाविद्यालय

स्वामी जी को भारतीय ग्रामीण सभ्यता से आत्मीय लगाव था। वे हर हालत मे किसान की उन्नति चाहते थे, उनके विचार इस और यथार्थवादी थे। उन्होने अपनी कल्पनाओ को आकार दिया था। स्वप्न जजाल मे वे कभी नहीं उलझे कृषको का दशा सुधारने का व केवल एक समाधान बताते थे, 'शिक्षा' और कृषकों को, कृषि का वैज्ञानिक ज्ञान करवाने हेतु, कृषि विज्ञान का उच्च अध्ययन और वह भी उनकी आँखो के सामने हो, ऐसा विचार था, स्वामी जी का। इस हेतु उन्होने अथक प्रयास किये। 1932 की काया पलट अपोल की तरह कृषि

महा विद्यालय की स्थापना के उद्देश्य से एक 32 पेज की पुस्तिका छपवाकर वितरित करवायी। जिसमे कृषि महा विद्यालय क्यो खोला जावे? वह संगरिया मे ही क्यों हो? इसके साधन कहाँ से आयेंगे? एव लोगो को दान के लिए प्रोत्साहित करने सम्बन्धी बातें अति रोचक सरल एव बडे अक्षरो मे प्रकाशित करवायी गयी—

"पीने के लिए पानी 18-20 मील दूर हनुमानगढ और सगत मडी से आता था। पर हिम्मते मर्दा मदद दे खुदा''''''

सन् 1947 मे देश विभाजन के कारण भारत का अन्न भण्डार लायलपुर मिण्ट गुमरी आदि प० पंजाब के जिले पाकिस्तान मे चले गये। इस कमी की पूर्ति के लिए पहले भाखडा और अब राजस्थान नहर का निर्माण जारी है ... करोडो एकड जमीन और दो-दो विशाल नहरों को पानी का समुचित रूप मे उपयोग करने के लिए जिस ढग, के कृषि विशेषज्ञो की आवश्यकता है, उनकी इस प्रदेश मे भारी कमी है। उसी कमी को पूरा करने के लिए ही कृषि महाविद्यालय की स्थापना का निश्चय किया गया जिससे आधुनिकतम ज्ञान विज्ञान से युक्त इस प्रान्त के नवयुवक कृषि कार्य मे देश का नेतृत्व कर सकें।"

कृषि महाविद्यालय संगरिया मे ही क्यो? शीर्षक से स्वामी जी ने लिखा—

"... संगरिया का यह सौभाग्य है कि यह दोनो राज्यो के सन्धि स्थल पर विद्यमान है''' विद्यापीठ की अपनी स्थावर जगम सम्पत्ति एक करोड रुपये के लगभग है, तीन हजार बीघे जमीन जिसमे खेती बाडी सम्बन्धी आधुनिकतम तजबे (रिसर्च) किये जा सकते हैं। 'सूरतगढ स्थित अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का विशाल कृषि फार्म, जिसमे 80 लाख रुपये की खेती बाडी की मशीनें संगरियाँ मे पढने वाले विद्यार्थियो के लिए जाँचने परखने हेतु उपयोगी होगी।" चारो तरफ नहरो का जाल, यातायात की समुचित व्यवस्था। उपयुक्त कारणो को देखते हुए कृषि महाविद्यालय के लिए संगरिया से बढकर कोई स्थान नही हो सकता था। जुलाई 1961 से विद्यापीठ मे कृषि महाविद्यालय का आरम्भ है, जिसके प्रिन्सीपल हैं विख्यात कृषि विशषज्ञ डा. के दा• बावेजा।"

× × ×

इस प्रारम्भ की कठिनाइयो व व्यय को देखते हुए आठ लाख पच्चीस हजार रुपया एकत्रित किया जा रहा है''' सरकारी सहायता तो तभी मिलेगी जब कि प्रारम्भ मे हम अपने पास से अच्छी धन राशि खर्च करके, कॉलेज को सुन्दर रूप में चालू कर सकेंगे। इसके लिए मैंने निश्चय किया है कि जब तक संगरिया मे कृषि महाविद्यालय की स्थापना, मान्यता व इस हेतु धन सग्रह—न हो जावे और उसे चलता न देख लिया जावे तब तक संगरिया मे प्रवेश न किया जावे।

× × ×

"' इन सब कार्यों के लिए जहाँ सरकार खर्च करती है वहाँ पचायती राज्य मे जनता की भी जिम्मेदारियाँ कम नही होतीं ।

× × ×

इलाके को चमकाने एव उसकी सन्तान को ऊँचा उठाने "" ' आडम्बरो से सन्तान की जडे खोखली क्यों कर रहे हैं ?

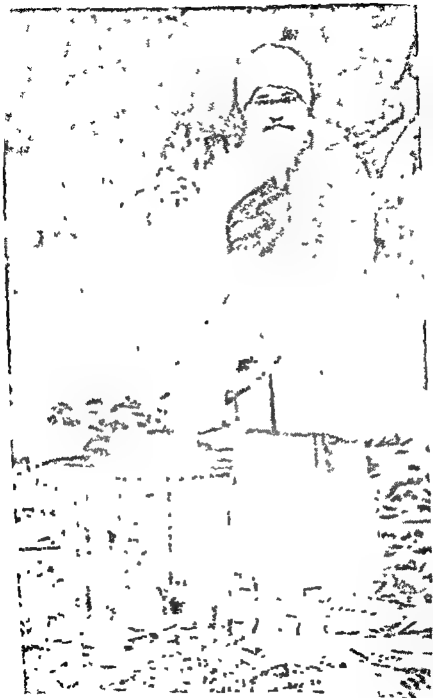
"'"'"'हमने (विद्यापीठ) लिया ही नहीं, दिया भी है लोगो को शायद ख्याल है कि वे इसलिए बडे हैं कि उनके पास रुपये हैं, इसके पास रुपये नही हैं। पर उन्हे ध्यान होना चाहिए कि राज्य सभा के सदस्य के नाते उसके (स्वामी जी) पास भी रुपये आये हैं और उनका टोटल 64 हजार करीब बनता है—क्योंकि मैं इस धन को जनता की धरोहर समझता हूँ अत वह सब संस्था हित मे दिये जा रहा है । आखिर आप रुपये अपनी सन्तान के लिए ही जोडते होंगे ? पर सन्तान की शिक्षा द्वारा आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति के बिना वह जोडा हुआ पैसा वृथा है' ' अत सावधान हो जावे और युग के साथ चलने के लिए अपनी सन्तान को उच्च शिक्षा दिलाने के ' लिए तैयार करो ।"

एक अन्य पुस्तिका ग्रामोत्थान विद्यापीठ सगरिया में कृषि कालेज स्थापना हेतु सस्थापक प्राचार्य डा० के० डी० बवेजा एम० एस० सी०, पी० एच० डी० (लन्दन) एम० ई० एस० आई० ने बडी तर्क सगत बातो से सरकार एव जनता को कृषि महाविद्यालय की त्वरित उपयोगिता को समझाया ।

एक इश्तहार जिसमे कृषि कालेज उसके लिए पचास लाख दान एव सम्भावित खर्च का ब्यौरा दिखाया गया ।

स्वामी जी की तर्क पूर्ण अपीलें, उनका दृढ निश्चय, जनता को धमकी देकर भी उससे प्यार करना, उनके हित मे, उनकी सन्तानो के लिए जूझना, आज के समाजसेवियो के लिए अनुकरणीय है ।

अन्तत स्वामी जी को सफलता मिली अगस्त 1962 मे । कृषि महाविद्यालय के लिए उन्होने क्या क्या नही किया । तत्कालीन मुख्यमन्त्री मोहन लाल सुखाडिया उदयपुर मे इसकी स्थापना चाहते थे । अधिकारी इसे निर्जन क्षेत्र मे असम्भव, तो प्रबन्धकारिणी के सदस्य इसे सफेद हाथी बाधन की सज्ञा देते थे, लेकिन अन्तत उक्त फकीर के दृढ निश्चय के आगे सब नतमस्तक हुए । डा० मोहन सिंह मेहता, कुलपति राजस्थान विश्वविद्यालय ने स्वय सगरिया पधार कर महाविद्यलय दीप शिखा प्रज्वलित की । डॉ० मोहनसिंह मेहता ने कहा था—"स्वामी जी मैं कृषि महाविद्यालय खोलने की स्वीकृति देने आया हूँ । आपने बिना साधन क्षमता के इतने बडे स्तर पर जो यज्ञ प्रज्वलित कर रखा है ईश्वर ने मुझे आज इस लायक बनाया है कि मैं अपनी एक आहूति दूँ ।" युग पुरुषो के सकल्प, उनकी कर्मशक्ति, लगन, तथा सद्प्रयत्नो से निश्चित ही फलीभूत होते हैं, तभी समाज के अन्धकार, शिक्षा व्यवधान विनिष्ट होकर प्रगति का पथ प्रशस्त करते हैं ।



त्याग मूर्ति स्वामी ब्रह्मानन्द जी के अभिनन्दन ग्रंथ के अवसर पर

कई एकड़ में फैली हुई शानदार इमारतें, 250 एकड़ का कृषि फार्म, दुग्ध-
शाला, मुर्गीखाना, इन्जीनियरिंग वर्कशाप, कृषि कला विज्ञान, वाणिज्य एवं कला
पथ मे स्नातकोत्तर अध्ययन सुविधा, स्वामी जी के उस पौधे का वट रूप है,
सकी ज्ञान रूपी सुविस्तृत छाया में हम बैठे फल खा रहे हैं। जो साठ छात्रों से
प्रारम्भ हुआ और आज 1200 छात्रों के लिए अध्ययन सुविधा उपलब्ध करा रहा
है। इस अवधि मे 22-23 हजार तो कृषि स्नातक ही देश को दे चुका है।

(ग) शिक्षा महाविद्यालय

कृषि महाविद्यालय की स्थापना जैसा व्यय समय एव श्रम साध्य और
साहसपूर्ण कार्य स्वामी जी ने सांसद रहते हुए किया था। 1962 मे भारत-चीन
युद्ध हुआ, जिसमे स्वामी जी ने ग्रामोत्थान विद्यापीठ की बजाय भारत की चिन्ता
पहले की, स्वयं के भत्ते से 501 रुपये के अलावा 4100 रुपये विद्यापीठ से चन्दा
कर भिजवाया गया। इन सब के साथ ही स्वामी जी अपनी शैक्षिक योजनाओं के
लिए प्रयत्नशील रहे उनके प्रयास से 1962 मे ग्रामोत्थान विद्यापीठ रूपी हार
मे एक और सुन्दर मनका जुड़ा शिक्षा महाविद्यालय।

इस अवसर पर भारत सरकार के उपशिक्षा मंत्री श्री भगत दर्शन ने कहा
था—"नेहरू ज्योति अध्यापक प्रशिक्षणार्थियो मे ज्ञान, त्याग, संयम और कर्म की वह
अखण्डता उत्पन्न करे जिससे भावी पीढ़ियाँ स्वतन्त्रता का मूल्य समझे। स्वामी जी
उन तपस्वियों में है, जो आत्म कल्याण निमित्त नहीं लोक कल्याण निमित्त कठोर तप
कर रहे हैं। नेहरू शिक्षा महाविद्यालय अध्यापक प्रशिक्षण के क्षेत्र में चारो दिशाओ
को प्रकाशित करता रहे।"

उद्घाटन समारोह पर स्वामी जी ने शायद अपने जीवन का निचोड़ रूपी
सारगर्भित भाषण जिसे सुनकर कोई भी उनमे भारत के दर्शन कर सकता
था—

"...वास्तव मे अनुभव सबसे बड़ा अध्यापक है। जिसका पढ़ा भूला नही
जाता मैंने जो कुछ पढ़ा है वह अनुभव के स्कूल से पढ़ा है। भारत भ्रमण कई बार
किया है, मैंने इसे नजदीक से देखा है। भिन्न-भिन्न जातियाँ और सम्प्रदायो के लोग
अनेक धर्म मत मतान्तर तरह तरह के पहनावे खान-पान, फिर भी एक।

× × ×

अमरसर (अमृतसर) के वहा बूटे के अखाडे में मैंने शिक्षा पाई....
इन्द्र प्रस्थ दिल्ली मे 12 वर्ष तक संसद सदस्य रहा। दिल्ली का चप्पा-चप्पा मुँह
बोलती तस्वीर है ... आगरे का ताजमहल, दयालबाग की कला संगमरमर की
कारीगरी, भरतपुर का अजेय लोहागढ दुर्ग एवं डीग के भव्य भवन
दुनियाँ को चकाचौंध कर देती है। दुनियाँ के एक दिन का खर्च जितनी कीमत
का हीरा कोहिनूर इसी देश का था... राम और कृष्ण की भूमि, विक्रमादित्य और
अशोक जैसे शासक यहीं पर हुए हैं... गंगा जैसी पवित्र जो बरबस ही दिलो में श्रद्धा

उद्वेल देती है। आदि गुरु शंकराचार्य से मण्डन मिश्र का शास्त्रार्थ इसी के किनारे हुआ था। मण्डन मिश्र की पत्नि सरस्वती इस प्रतियोगिता की निर्णायिका थी। हमारे देश मे महिलायें कितनी विदूषी होती थी ।"

स्वामी जी के विचार यद्यपि बेतरतीब हुआ करते थे लेकिन उनके विचारो से विशालता, अनेकता मे एकता, राष्ट्र प्रेम, गहन यर्थातवादी चिन्तन का सजीव चित्रण होता था। उनकी अभिव्यक्ति की विषय वस्तु मे शिक्षा का प्रमुख स्थान होता था। स्वामीजी मे तूफानो मे दीपक जलाने की क्षमता थी, तभी तो अनेक द्वारा प्रज्जवलित दीप सिखाऐ हर तूफान को सहकर आज भी अनवरत ज्ञान प्रकाश फैलाती रही हैं।

(R) स्वामी जी का स्वप्न स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

सन् 1942 मे स्वामी जी ने 1917 से चली आ रही प्रवृत्तियो का जनता को परिचय करवाने हेतु रजत जयन्ती का आयोजन किया था। आयोजन मे के० एम० पन्नीकर एव सर छोटूराम पधारे थे, जिससे न केवल विद्यापीठ को बल्कि सम्पूर्ण क्षेत्र को उनके आगमन का दूरगामी फायदा मिला था। सर छोटूराम के सद्प्रयत्नो से ही भाखरा नहर विद्यापीठ सगरिया से होकर गुजरी। जनता ने अपने पैसे का रचनात्मक उपयोग अपनी आंखो से देखा था।

संस्थान स्थापना के 1967 मे 51 वर्ष पूरे हुए स्वामी जी ने इस वर्ष मे एक महान् आयोजन करने की सोची, जिसके पीछे अनेक लोगो की इच्छाएँ भी थी, इस बहाने विद्यापीठ के कुछ कार्य सम्पूर्ण हो जावेंगे एव साथ ही गुरु नानक की 500वी जयन्ती, गुरु जम्भेश्वर महाराज की 500वी जयन्ती, आजाद हिन्द फौज की 25वी जयन्ती भी मनायी जावेगी आदि स्वर्ण जयन्ती के सम्बन्ध मे विचार थे स्वामी जी के।

स्वर्ण जयन्ती की तैयारी औचित्य एव उसके प्रचार-प्रसार के लिए स्वामी जी ने एक पुस्तिका निकाली स्वर्ण जयन्ती महोत्सव क्यो ? और कैसे ? उसमे लिखा- "1917 से संस्था ने बडे विस्तृत क्षेत्र मे जन जाग्रती का कार्य किया है" संस्था के द्वारा इस सुदीर्घ काल मे किये गये जनहित कार्यो का मूल्याकन करना, इसके संस्थापको, सहायको, हितैषियों एव संचालको को सम्मानित करना तथा संस्था को इस परिवर्तनशील युग की आवश्यकता के अनुरूप बनाये रखने के लिए उपाय सोचना और तदनुसार कार्यो मे सहायक होना आदि बातो के लिए स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया जाना आवश्यक है।

× × × ×

"ग्रामोत्थान विद्यापीठ की अनेकानेक प्रवृत्तियो में भारी अपूर्णताएँ हैं और स्वर्ण जयन्ता महोत्सव का एक मात्र लक्ष्य ही यह है कि इस क्षेत्र का पूर्ण विकास इसके द्वारा हो। इसकी ग्राम शाखा शालाओं ने यदि इलाके के अशिक्षा

इलाका अब जाग्रत है और अपनी कमजोरी को समझता है। मैं उस कमजोरी को भी नष्ट करना चाहता हूँ। इसलिए ग्रामोत्थान विद्यापीठ स्वर्ण जयन्ती से पूर्व इसे सर्वांगपूर्ण बनाना चाहता हूँ कि जिससे यह इस इलाके के लिए अधिकाधिक उपयोगी और समृद्धि का कल्पवृक्ष बनो रहे'।

स्वर्ण जयन्ती का आयोजन स्वामी जी नही कर पाये। उनका स्वास्थ्य ही इसके आगे बाधा बन गया। विद्यापीठ व्यवस्था समिति ने भी स्वामी जी का इस अवधि मे वांछित सहयोग नही दिया। फिर भी स्वामी जी उस भव्य समारोह के अलावा वह सब प्राप्त करने में सफल रहे, जो स्वर्ण जयन्ती की ओट मे वे चाहते थ। बस अन्तर इतना रहा कई कार्य वे पूर्ण कर गये, कुछ का शिलान्यास तो कुछ के लिए स्वत होने की परिस्थितियाँ छोड गये। उनकी एक प्रमुख योजना कन्या महाविद्यालय की स्थापना, उनके महा प्रयाण के आठवे वर्ष (1980) मे उनके उच्चतम नारी शिक्षा के मनोरथ को साकार किया।

कृषि महाविद्यालय के साथ कला एव विज्ञान सकाय का उच्च अध्ययन प्रारम्भ करना, जो उनके प्रयासो से उनके सामने 1968 मे सम्भव हो गया। विभागो के छात्रावास जो भी समय-समय पर सम्पूर्ण कर लिये गये। कीर्ति स्तम्भ जो सर छोटूराम स्मारक के प्रवेश द्वारा पर महारानी लक्ष्मीबाई की अपने घोडे पर युद्ध भूमि मे अग्रेजो से झूझती धवल काष्ट प्रतिमा उसके स्तम्भो पर दान दाताओ की अमर सूची सहित स्वामी जी की साधना का प्रतीक के रूप में खडा है।

गुरु नानक, गुरु जम्भेश्वर, आजाद हिन्द फौज की जयन्ती, मना तो नहीं सके, लेकिन अपने जयपुर, रोहतक, आगरा स्वास्थ्य के लिए प्रवास के दौरान युग पुरुष गांधी, युवको के आदर्श नेताजी सुभाषचन्द बोस, सिख गुरू और उनकी वाणियाँ जुम्भेश्वर महाराज चरित्र और वाणी, सर्वखाप पचायत और ग्राम स्वराज्य, एव ग्रामोत्थान पत्रिका का विशेष स्वर्ण जयन्ती अक छपवाकर वितरित करवायी।

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की तारीखें स्वामी जी की अति व्यस्तता स्वास्थ्य सम्बन्धी कठिनाइयो एव कुछ अपनो द्वारा निष्क्रियता दिखाने के कारण अनेक बार टली। स्वर्ण जयन्ती और हमारा कर्त्तव्य नाम की एक पुस्तिका मे स्वामी जी ने 1969 में लिखा—"स्वर्ण जयन्ती महोत्सव फरवरी 1970 मे 15, 16 17 तारीखों मे मनाया जावेगा। ·· विद्यापीठ की स्वर्ण जयन्ती मनाने का उद्देश्य सस्था को कई गुना अधिक चमका देना है और उसकी जडें गहराई तक पहुँचा देना है"· स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर विद्यापीठ मे कम से कम चार छात्रावास और बन जाने चाहिए।" यदि ये छात्रावास विद्यापीठ में नही बनते तो विद्यापीठ के कालेजो का देहात के लोगों के लिये होना न होना बराबर ही है। कालेज के अधूरे भागो को

मा ड्राफ्ट अपने आराध्य ग्रामोत्थान विद्यापीठ को भेजकर, संगरिया के लिए रवाना हो गये। 13 सितम्बर को वे लगभग 11 बजे नई दिल्ली रेल्वे स्टेशन पर उतरे, इस बीच विद्यानन्द के कथनानुसार स्वामी जी का स्वास्थ्य ठीक नही था, उन्होने मद्रास से चलने के बाद केवल एक बार थोडा-सा दूध और डबल रोटी ली थी। सम्पूर्ण रास्ते स्वामी जी सोये नही। विद्यानन्द ने स्वामी जी को अनेक रूपों मे देखा था, पत्थर शिला और रेल्वे स्टेशन के कडे रुखे बैंचों पर स्वामी जी क्षणो मे हाथ का तकिया बना कर सो जाते थे, तो कई बार कई-कई रात सफर मे सोने का नाम नही, ज्वर थोडा था, लेकिन विद्यानन्द ने पहले भी कई बार 100 डिग्री से ज्यादा तापमान मे भी उन्हे देखा था, 100° उसे किसी अनहौनी का पूर्वाभास नही हुआ।

"" भारी मन से विद्यानन्द ने कहा " "नई दिल्ली रेल्वे स्टेशन पर उतरते समय स्वामी जी स्वस्थ दिखाई दे रहे थे। हम एक आटोरिक्शे से चौधरी कुम्भा राम जी की कोठी ढूढने लगे, काफी भटकने के बाद भी जब कोठी न मिली तो रकाबगज गुरुद्वारे के पास आटोरिक्शा छोड कर स्वामी जी गोल डाकखाने के पास एक वृक्ष के नीचे अपना अगोछा बिछाकर लेट गये।" विद्यानन्द को चौधरी कुम्भा-राम जी की कोठी ढूँढने भेजा। विद्यानन्द चौधरी साहब की कोठी पहुँचा जहाँ पता लगा की वे दिल्ली से बाहर हैं। विद्यानन्द जब वापस उस स्थान पर पहुँचा तो वहाँ स्वामी जी नही थे। शायद वे विद्यानन्द का इन्तजार करने के बाद स्वय कोठी ढूँढने निकल पडे। स्वामी जी वहाँ से विट्ठलभाई पटेल भवन पहुँचे। वहाँ से रकाब-गज मार्ग होते हुए पत व लाल कटोरा चौराहे पर पहुँचे। पुराने चुनाव आयोग कार्यालय के पास लाल कटोरा रोड के फुटपाथ पर छाया में लेट गये। और उसी *स्थान पर स्वामी जी चिर निद्रा मे लीन हो गये।*

विद्यानन्द सयोग वश उस रास्ते से स्वामी जी को ढूँढता आ रहा था। उसे पुलिस घेरे और भीड के मध्य भगवा वेषधारी एक साधु की लाश दिखाई दी, उसे इस अनहोनी का आभास होते ही वह बेहोस होकर गिर गया होश आने पर विद्यानन्द ने पुलिस को बताया कि फुटपाथ पर मृत्यु को प्राप्त साधु कोई साधारण व्यक्ति नहीं बल्कि 12 साल तक सासद रहे स्वामी केशवानन्द जी हैं।

दिल्ली पुलिस गश्ती दल ने श्री रामनिवास मिर्धा से विद्यानन्द की बात की पुष्टि कर श्री गगानगर जिलाधिकारी को वायरलेस से यह दुखद समाचार सुनाया। *करीब रात 1 बजे ग्रामोत्थान विद्यापीठ मे पुलिस थाना संगरिया के माध्यम से यह* हृदयविदारक घटना पता चली।

विद्यापीठ संगरिया से सर्वश्री खेमचन्द चौधरी, शेरसिंह जी, हरवश सिंह जी, महावीर प्रसाद गुप्त ख्याली राम भोमिया एव वैद्य श्री राजमल जी स्वामी जी के पार्थिव शरीर को उनकी कर्मभूमि के शोकाकुल परिवार तक लाने हेतु उसी क्षण

दिल्ली रवाना हो गये। पुलिस की आवश्यक प्रक्रिया एवं बगला देश के राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान के आगमन के कारण इस दल को स्वामी जी की लाश लगभग एक बजे दोपहर मिली एवं रात के ग्यारह बजे संगरिया पहुँचे।

ऐ अजल तुझसे यह कैसी नादानी हुई।
फूल वह तोडा कि गुलशन भर में विरानी हुई॥

धरा कम्पित हो उठी। दीपक बुझ गया। इलाका अनाथ हो गया था। इस वज्रपात का समाचार सुनकर क्षेत्र का जनमानस अपनी सुध-बुध खोकर केशव-केशव चीखते विद्यापीठ प्रागण मे उनके अन्तिम दर्शनो हेतु उमड़ पड़े········

जहाँ आने से डरते थे शैतान भी
वहाँ लाया तू सरस्वती को····
सहारासी मरू हुई फलवती
क्या किया तूने इस धरती को········
तेरे कन्धे नही फौलाद थे शायद
जिन पे उठाया तूने ग्रामोत्थान।
कर तेरे विश्वकर्मा होंगे शायद
जिनसे रचाया तूने ग्रामोत्थान
किसके सहारे छोड गये इसे तुम
हम तेरी चरण धूलि भी नही
करेंगे कोशिश शायद यह चल जाये
मगर हम मे इतनी शक्ति भी नहीं
तेरी कर्म भूमि मे
करेंगे हम तेरी भक्ति
क्या किया तूने इस धरती को·······
आये सौ धर्म, सौ जात यहाँ
मगर तेरे धर्म से लडने की ताकत कहाँ
तेरी गाली भी फलती थी
एक मुराद बनकर
आशिषें देता रहा तू सदा,
हमे कबीर और फरीद बनकर
भूला न पायेगे तेरे रिश्ते को
केशव-केशव चिखते पाओगे इस धरती को····

सुच्चासिह राजपूत की यह हृदय हार रूपी श्रद्धाजली, समुद्री, लहरो के मानिन्द उमडते जनमानस की मनः स्थिति मे थी। रात भर दर्शनार्थियो का तांता, भरे टपकते काले बादल की तरह आता रहा जो अपने अराध्य की झलक पाकर वही

वर्ष पड़ता। जनमानस के दुख का अन्दाजा इसी से लगाया जा सकता है कि सगरिया की आबादी से दुगनी सख्या में लोग स्वामी जी की महाप्रयाण यात्रा मे शामिल हुए थे। पुलिस ने भी अपनी श्रद्धाजली अहिंसा के पुजारी को बन्दूकें उल्टी करके दी।

सारादेवी की कोख का चिराग पूरे देश का स्थायी प्रकाश स्तम्भ बना, स्वामी केशवानन्द बालू रेत के समुद्र मे भटका, अकालो से जूझा, सेवा, त्याग और साहस की ऊँचाइयाँ पायी। करोड़ो दिलों में अपना घर बनाया, लेकिन 13 सितम्बर 1972 की काली दोपहरी ने उस युग पुरुष को अपनी चपेट मे ले लिया।

जब तुम आए जग मे जग हंसा तुम रोए।
ऐसी करनी कर चलो तुम हंसो जग रोऐ।
हे युग पुरुष !
लाखो करोड़ों दुखी इन्सानो की ओर से
तुझे शत् शत् नमन है।

---

1. शोकाकुल माहौल मे स्वामी जी के निधन की परिस्थितियो की ओर किसी का ध्यान नही गया उन परिस्थितियो की जाँच अवश्य करवाई जानी चाहिए थी।

"बड़े शौक से सुन रहा था ज़माना तुम्हीं सो गए दास्तां कहते कहते ।"

स्वामी केशव नन्द जी का महाप्रयाण 11 सितम्बर 1972

7

अनथक यात्री

"......कुछ संयोग की बात कहूँगा एक बार घर से बाहर निकला तो मुड़के घर की ओर नहीं जा सका... ...मैंने दुनियाँ को जी भरकर, बाजीगर के खेल की तरह नजदीक से देखा... मैंने पहाड़ और समुद्र भी देखे। दुनियाँ मेरी कल्पना से बहुत बड़ी निकली, इतनी बड़ी कि मैं उसे समझ भी नहीं पाया... "

× × × ×

"हमारा देश कोई छोटा नहीं है, इसमें बड़े बड़े करिश्मे हैं। तरह तरह के लोग हैं। हिमालय सबसे बड़ा पर्वत है, गौरीशंकर, इसकी चोटी संसार की सबसे ऊँची है। मैंने कैलाश मानसरोवर तक की पैदल यात्रा की है... हम वहाँ से उस ऊँचाई तक के कंकर चुनकर लाये मानसरोवर झील का पानी भी हम साथ लाये। हमारे संग्रहालय में देख सकते हैं। मैं बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋषिकेश, हरिद्वार उधर धनुषकोटी तक और लंका तक हो आया हूँ। सारे हिन्दुस्तान को मैंने कई बार पैदल और अनेकों बार रेल द्वारा देखा है।" अन्वेषक यात्री स्वामी केशवानन्द अपने यात्रा वृतांत अति सहज भाव में सुनाया करते थे, उनकी अभिव्यक्ति में कहीं अहम भाव प्रकट नहीं होता था। साफगोई और देखने की ललक पैदा करने वाली उनकी यात्रा की कहानियाँ अति सरस और रोचक होती थी।

डॉ० मोहन सिंह मेहता ने पूछा स्वामी जी जब आप इतना कार्य लोगों के लिए कर रहे थे लोगों ने लाखों रुपया आपको शिक्षा प्रसार हेतु दिया, तो क्या किसी ने आपके लिए सवारी की व्यवस्था नहीं की?

स्वामी जी का जवाब था, "मेरी पैदल यात्रायें बिना रुके होती थी। एक बार एक भले आदमी ने हमें एक घोड़ा दे दिया, उसने हमें दूसरे गाँव जल्दी तो पहुँचा दिया, परन्तु वहाँ जाकर हमें उसकी चिन्ता अपने से अधिक हो गई, हम भूखे प्यासे चल देते। हमें हमारी गलती अनुभव हुई। ऐसी जल्दी और आराम किस काम का कि जिसमें अपने काम से भी पहले घोड़े की चिन्ता... वहाँ तो बाधक है। पन घोड़ा लौटा दिया।"

श्री गोरीशंकर आचार्य ने कहा था हाथ मे लकड़ी दूसरे मे बड़ा लोटा पैरों मे देशी जूतियाँ, शीतकाल में एक लम्बी ऊनी कोट पहने, कन्धे पर कम्बल डाले बगल मे थैला लटकाये महाराज अपने जीवन की सम्पूर्ण अर्जित प्रोपर्टी लिए वर्तमान को जगाते कहीं भी मिल सकते हैं। त्रिवेणीदेवी के संस्मरणो मे लिखा है।"' "स्वामी जी को सुबह अबोहर मे देखा था, पूर्वार्द्ध में भटिण्डा, मध्यहान मे संगरिया और अपरान्त मे श्री गंगानगर देखा गया"'"

"दिन तो याद नहीं सर्दियों का समय था, स्वामी भादरा स्टेशन पर उतरे चढ़ने लगे तो पता लगा फाटक अन्दर से बन्द हो गया गाड़ी चल पड़ी, रात का समय, भयंकर ठण्ड, अस्सी वर्ष का बूढ़ा पाँव दान पर बड़ी मजबूती से खड़ा रहा। अगले स्टेशन पर इंजन स्टाफ को बुलवाया दरवाजा खुलवाया। कर्मचारियों ने क्षमा याचना की यह देखकर कि स्वामी जी हैं, लेकिन स्वामी जी ने बस इतना कहा "इसमे आप लोगों का क्या दोष है" एक रेल्वे अधिकारी द्वारा सुनाई यह घटना यदि किसी वर्तमान एम० एल० ए० या एम० पी० के साथ घटी होती तो वह अखबारो की सुर्खियाँ बन जाता। लेकिन अपने मंजिल पर आँख टिकाये चलने वाले उस यात्री ने उस कष्ट और असुविधा को कोई महत्व नहीं दिया।

"मैंने जो कुछ पढ़ा है अनुभव के स्कूल मे""""भारत का भ्रमण कई बार किया है।""मैं कैलाश मानसरोवर तक पैदल चला गया चीड़ के फूल चाय के बीज लाया"' ब्रह्म बूटे के अखाड़े मे शिक्षा पाई"' दिल्ली का चप्पा-चप्पा मुँह बोलती तस्वीर है"'''' मैंने फतेहपुर सीकरी देखी"''1906 मे पहली बार वृन्दावन देखा "' उत्तर प्रदेश को मैंने पूरा देखा " त्रिवेणी का संगम, पास ही काशी जी हैं, मैं बचपन मे काशी और इलाहाबाद दोनों जगह संस्कृत पढने के लक्ष्य से दरवाजा खटखटाता फिरा था।

× × × ×

मैं एक बार अजमेर गया। वहाँ ढाई दिन का झोंपड़ा देखा जो कि केवल टूटी फूटी पत्थर की मूर्तियो की ही बनी इमारत है भारत का गौरवस्थल चित्तौड़ और भरतपुर देखा।

× × × ×

यात्रायें मुझे सदैव प्रेरणा देती रहीं। मैंने अरविन्द का पाण्डीचेरी आश्रम, रविबाबू का शान्तिनिकेतन, आगरा का दयालबाग, सिन्ध का साधुवेला, साबरमती आश्रम, पटना का सदाकत आश्रम आदि देखे और मैं वहाँ से अपने साथ एक उत्साह और कार्य की इच्छा शक्ति लेकर लौटता। यात्राओं का क्रम चलता रहा"'"

जीवन पथ के इस अन्वेषक यात्री ने अनेक पड़ाव डाले उन्हें सजाया संवारा और सम्पूर्ण मानवीय जगत की धरोहर समझ, संसार को सौंपकर आगे चलते बने। उनकी कर्म भूमि कभी फाजिल्का रही, कभी अबोहर, लम्बा समय संगरिया में व्यतीत

या तो अंतिम दिनो मे कस्तूरबा महिला ग्रामोत्थान विद्यापीठ महाजन (बीकानेर) और आर्पित हुए। स्वामी जी हिन्दुस्तान की चलती फिरती तस्वीर, उसकी गान और जीवन्त कहानी थे। फरीद के वाक्य की ललक 'अगा नेडे आ गया तो रह गया दूर' उन्हें जीवन पर्यन्त रही मंजिल पर आँख लगाये चलने वाले इस री को रास्ते के कष्ट भय और प्रलोभन महसूस कभी हो नही हुए। अनवरत शिक्षा र मानवता की अलख जगाता यह यात्री कभी हारा नही कभी थका नही। चप्पे-चप्पे ज्ञान बटोरकर उससे वंचित मानवता को बाँटता, वह फकीर गुनगुनाया करता था।

साहसी को बल दिया है मृत्यु ने मारा नही।
राह ही हारी सदा राही कभी हारा नही॥



8
शिक्षा संत

एक अनाथ अशिक्षित, घुमक्कड़ व्यक्ति जिसने कभी विधिवत किसी पाठशाल मे बैठकर ज्ञानर्जन नहीं किया हो, क्या 300 से अधिक से स्कूलो, 50 छात्रावासों इतने ही पुस्तकालयो, समाज सेवा केन्द्रो एव सग्रहालयो का सस्थापक हो सकता है सहज ही विश्वास होता है, इस करिश्मे पर लेकिन यह सब हुआ, उस शैक्षिक देवदू के माध्यम से, जिसने अनुभव से शिक्षा पाई सत्सग से सीखा, घूम फिरकर दुनिय का रंग देखा । करीब सो पुस्तकें अन्य भाषाओ से रूपातरित करवाओ, स्वय लिखं और लिखवायी, दैनिक अखबार निकले, मासिक और साप्ताहिक पत्रिकाओं के जरि दुनियाँ की नवीनतम घटनाओ को आम समझ योग्य बनाकर जन साधारण त पहुँचाया ।

जिस भूमि पर वेद लिखे गये । उस शिक्षा के मरघट (मरुस्थल) में ज्ञान दीपक जलाया और अनेक तूफानो के मध्य उसे प्रज्ज्वलित रखा । तभी तो सुधा कहते हैं—

क्या सुनाये इस जुबा से, तेरे वो उपकार हम
तेरे ही पैगाम से, हो गये बेदार हम,
पेश है खिराजे अकीदत केशवानन्द जय तेरी ।।

बनके आये रहनुमा रहबर कुल आलम के तुम
तुम हो तालिमें पैगम्बर, निगेबा कुल आलम के तुम,
हर दिल अजीज बन गये, केशवानन्द जय तेरी ।।

हो गया रोशन जमाना, बन के आफताब,
और बने महताब भी हो, तेरे करिस्मे लाजवाब ।
है लबों पे नाम तेरा, केशवानन्द जय तेरी ।।

जब तक दुनियाँ रहेगी, नाम केशव का अमर
जिन्दा है जमी आसमा, जिन्दा ये शामो सहर,
आईनाये दिल में तुम हो, केशवानन्द जय तेरी ।।

"... छोटे बड़े अनेक पुस्तकालयो का निर्माण मेरे द्वारा हुआ, हजारों की

अवस्था में भिन्न-भिन्न भाषाओं की पुस्तकें खरीदी तथा दूसरे व्यक्तियों को दिलाई भी, पर स्वयं मैंने बहुत ही कम पुस्तकें पढ़ी होंगी। किसी की भूमिका, किसी का कोई विषय और कुछ ही पन्ने पलटे होंगे फिर भी कुछ पुस्तकें अवश्य ही पढ़ी हैं।

"मेरा पालन पोषण आर्य समाज के वातावरण में हुआ था उनके सालाना जलसों तथा त्यौहारों पर बड़े-बड़े विद्वानों के उपदेश सुने"

सन् 1917 में लोकमान्य तिलक की गीता रहस्य का हिन्दी अनुवाद मैंने आद्योपान्त और धैर्य से गाँव दानेवाला (पंजाब) में कई महीने लगकर पढ़ा। जिसका प्रभाव मेरे जीवन को मोड़ देने में और धर्म क्षेत्र में उतारने में सबसे अधिक रहा।"

कर्मयोगी केशवानन्द ने एक बार कहा था, "मेरा जो रूप आप देख रहे हैं यह केवल माता की कोख से नहीं मिला, यह शब्द की चोट से उपजा है।"

सबद की चोट लागी मारे मन में ।
बेधि गयो तन सारो ॥

इसी शब्द की चोट ने स्वामी जी के शरीर को शिक्षा सन्त, पुस्तक प्रेमी और पुस्तकालयों का निर्माता बना दिया। स्वामी जी ने गीता पढ़कर ही तो भारतीय साधु हृदय नामक पुस्तिका में साधुओं को सम्बोधित करते हुए कहा था "जाति की आँखें आप पर लगी हैं। आप जिस-जिस गाँव नगर, इलाका एवं प्रान्त में भ्रमण करते हैं वहाँ अपने उपपरिश्रम से पुस्तकालय एवं धर्मालय स्थापित कर दें। जिनमें सर्व-साधारण के बालक बिना छुआ-छूत के पढ़ सकें।"

साधुओं को राष्ट्र निर्माण में लगने की अपील और पुस्तकालय प्रेम की यह मिसाल"

पुस्तकालय

भारत का उद्धार कैसे हो ?
भारत का उद्धार, सच्चा भारत जहाँ
बसता है उसका विकास करने में है।
सच्चा भारत कहाँ बसता है ?
गाँवों में।
गाँवों की मुक्ति कैसे होगी ?
ज्ञान द्वारा।
ज्ञान कहाँ है ?
पुस्तकों में।
पुस्तकें कहाँ हैं ?
पुस्तकालय में।
अत पुस्तकालय को अपनाये बिना हमारी उन्नति सदा अधूरी रहेगी।"

सकल जगत मे अपने आप मे अनोखी है। सजे सजाये भवनो मे शीशे की अलमारियों मे पुस्तको को कैद करना भी उन्हे पसन्द नहीं था, अपने झोले में तो वे पुस्तकें रखते ही थे साथ ही जन-जन तक पुस्तकें स्वय चलकर जावे। इसका प्रबन्ध भी पैदल और ऊँट सवारो के जरिये चलता फिरता पुस्तकालय योजना लागू दिया था।

एक हेण्डबिल मे स्वामी जी की धन सग्रह के सम्बन्ध मे अपील ''''भली प्र से विचार कर जान लेना चाहिए कि बच्चा एक खान का पत्थर है जिसके टुकडे मूल्य रुपया आठ-आना होता है। वही टुकडा जब किसी कलाकार कारीगर विज्ञानवेत्ता के हाथ मे पड जाता है अथवा वह उस कारखाने मे जहाँ काटने-छाँ तरासने और चमकाने के साधन होते हैं, पहुँचता है तो वह कीमती हो जाता है अज्ञान भरा जीवन एक प्रकार से काला कोयला है। उसकी अच्छी लम्बी सगत उत्तम शिक्षा ही कीमती हीरा बना सकती है ''

कौडी को तो खूब सम्भाला, लाल रत्न क्यों खो दिया।
जड माया के बदले औलाद रूपी लाल को क्यो खो दिया॥

''रुपया पैसा रत्न बडी चीज है, वास्तविक एव स्थायी रूप से वश परम्प को चमकाने वाली वस्तु सन्तान है''।

खान के कुरूप टुकडो को तरासकर हीरे बनाने वाला सन्त हिन्दुस्तान चप्पे-चप्पे मे ऐसे कारखाने खोलने का प्रयोगिक स्वप्न देखता रहता था ता हिन्दुस्तान की भावी सन्तान को कलाकारो, शिक्षाविदो, विज्ञान वेत्ताओं असख्य उद्योग जानने वालो के, कुशल प्रशिक्षित नेतृत्व में गढ़ कर शिक्षित, सु और आत्म निर्भर बना कर जीवन पथ पर छोडा जा सके। बाधायें, व्यथा दुर्व्यसन, प्रलोभन, अन्धविश्वास, साम्प्रदायिक विष और सकीर्णता उनके पाँवो बेडियाँ न बन सके।

कला के प्रसग मे स्वामी जी ने लिखा है '''' जो बातें अनेक प्रकार समझाने पर भी नही समझ पडती, आँखो के सामने आते ही मन उन्हे सहज ग्रहण कर लेता है—इसी कारण''''''''सग्रहालय भी आज शिक्षा प्रचार के साध बन गये हैं।''

× × ×

वस्तुतः सग्रहालय एक ऐसी सस्था है जहाँ आकर बालक, युवक, वृद्ध सभी अपना ज्ञान वर्द्धन स्वय वस्तुओ को देख देखकर करते हैं, कोई उन्हे स्कूलो की भाँति पुस्तको को पढा कर नही बताता। इस नवीन प्रणाली से प्राप्त किया हुआ ज्ञान गहन और टिकाऊ होता है, क्योकि यह नेत्रो के द्वारा मस्तिष्क मे एक तस्वीर खीच देता है, जो जीवन पर्यन्त रहता है ' मैंने स्वयं सीख लिया और जान लिया'' यह एक ऐसी मनोवैज्ञानिक सतुष्टि है जो मुझको पढाया गया और बताया गया मे कभी भी नही होती।''

स्वामी जी शिक्षा प्रसार की हर नवीन तकनीक को बिना किसी विवाद और असमंजस में पड़े अपना लेते थे। पर्यटक जीवन में असंख्य स्थान, वस्तुयें देखी थी। उनकी हार्दिक इच्छा रहती थी कि वे सब जन साधारण को देखने के लिए उपलब्ध हों और इसी ललक ने उन्हें एक दुर्लभ वस्तुओं का संग्राहक, पुरातत्ववेता और कला ममज्ञ का दर्जा दिलवाया।

शिक्षालय रूपी संसार की अजीबो गरीब वस्तुओं को एक कमरे में सजाने वाला महान संग्राहक, शिक्षा रूपी अमृत बूंदों को कागज के टुकड़ों पर सजा कर जन जन को बौद्धिक भोजन कराने वाला पुस्तकालयों का संस्थापक, अनगढ़ पत्थर रूपी बालकों को तराशकर हीरों की मानिंद कीमती और चमकदार बनाने वाला, शिक्षा मंदिरों का सृजक, निश्चय ही एक महान् शिक्षा संत था। उनकी शिक्षा सेवायें शैक्षिक इतिहास की अमर धरोहर है।

9
अछूतोद्धारक

"संस्कृति" शब्द का सार अर्थ है ऊँचे और उदार विचार तथा उन विचारों के अनुकूल व्यक्ति और समाज के जीवन का निर्माण। हम दावा करते हैं कि भारत की संस्कृति अन्य सभी देशों की संस्कृति से श्रेष्ठ है, उदार है। "वासुदेव कुटुम्बकम्" आत्मवत् सर्व भूतानि" यही हमारी संस्कृति का सार है। अपितु सारा संसार हमारा परिवार और संसार के सारे प्राणी हमारे समान हैं।"" ""हमारे ऋषियों ने कहा है हमें दूसरों के प्रति वैसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जो स्वयं हमारे लिए बुरा हो, प्रतिकूल हो, यही हमारी भारतीय संस्कृति का आदर्श और उद्देश्य है""

पर खेद के साथ हमे यह स्वीकार करना ही चाहिए कि हमारे जीवन में हमारे आचार-व्यवहार में हमारे सांस्कृतिक आदर्श और उद्देश्य का समन्वय नहीं, है, वासुदेव कुटुम्बकम् की बात छोड़िये अपने घर में, अपने देश में, अपने सह धर्मियों के साथ हम कुटुम्ब जैसा व्यवहार नहीं करते। कुटुम्ब की बात तो दूर हम उन्हें इन्सान भी नहीं समझते हम उन्हें पशुओं से भी बदतर समझते हैं, नहीं तो क्या कारण है कि पशु के मांस से तो हमारा चौका खराब नहीं होता, हमारा घर अपवित्र नहीं होता, किन्तु हमारे सह धर्मियों में से कोई हमारे घर में प्रविष्ट हो जावे अथवा चौके के निकट चला जाय, तो हमारा घर अपवित्र हो जाता है " क्या यह विवेक की विडम्बना नहीं कि हम गंदा करने वाले तो अपने को श्रेष्ठ समझें और उस गन्दे को साफ करने वालों को हम इन्सान भी न समझें। यदि हम उन्हें इन्सान समझते होते तो भंगी महतरों अछूत कहे जाने वाले हमारे विवेक पर पत्थर तो तब पड़ जाता है जब कोई हिन्दू अछूत धर्मान्तरण कर ले तो बड़ी खुशी से उसके साथ इन्सान जैसा व्यवहार करने लगते हैं। यदि वह किसी ऊँचे सरकारी ओहदे पर हुआ तो झुक-झुक कर सलाम करते हैं।

दूर । दूर ।। करते रहे, जब तक रटता रहा राम ।
हरिया जब हैरिस भया झुक-झुक करे सलाम ।।

"' मेरा दृढ़ विश्वास है कि भारतीय संस्कृति और श्रेष्ठता पर, तब तक

प्रश्न चिन्ह लगा रहेगा, उसकी श्रेष्ठता पर तब तक संदेह बना रहेगा जब तक कि हम सवर्ण अवर्ण का विशेषण विनिष्ठ कर बिल्कुल एक विशुद्ध हिन्दू नहीं बन जाते हैं।

ग्रामोत्थान पत्रिका के जुलाई 1952 के अंक में प्रस्तुत स्वामी जी के उपरोक्त विचार भारतीय संस्कृति की मौलिक भावना की मंशा बताते हुए निहित स्वार्थों द्वारा उसके मौलिक स्वरूप को कुरूप और तोड़ मरोड़ कर पेश करने की मंशा को प्रकट करते हैं।

जहाँ छुआछूत को स्वामी जी सामाजिक अपराध और भारतीय संस्कृति की अमृत धारा में गंदे नाले का प्रवाह मानते थे उसी प्रकार जाति पाँति से भी वे घृणा करते थे। इस सम्बन्ध में उनके विद्वतापूर्ण विचार ग्रामोत्थान पत्रिका के सितम्बर 1952 के अंक में मिलते हैं—

प्रत्येक जाति वाचक शब्द के भीतर एक विशेष अर्थ भरा हुआ है उस शब्द के उच्चारण या श्रवण मात्र से ही मानस पटल पर एक विशेष अर्थ मूर्तिमान हो उठता है ... पानी शब्द से पीने योग्य एक अत्यन्त सुपरिचित पदार्थ का ... मनुष्य' शब्द के उच्चारण या श्रवण करते ही हमारे मन की आँखों में वह प्राणी प्रकट होता है जिसमें अनुभूति और भावना विवेक और वितर्क का एक विशेष गुण धर्म होता है जिसके कारण वह माँ प्रकृति के साम्राज्य में सब से उन्नत प्राणी समझा जाता है यदि इन शब्दों से उनके भीतर छिपे अर्थ हम प्रतीत न हों अर्थात उन प्राणियों में वह गुण धर्म न हो जिनके आधार पर उनके नाम रखे गये हैं तो वे नाम व्यर्थ हैं निरर्थक हैं

आर्यावर्त के ब्राह्मणों से संसार के सभी मानव अपने अपने चित्र की शिक्षा ग्रहण करेंगे ऐसी थी महिमा हमारे प्राचीन युग के ब्राह्मणों की क्षत्रीय शब्द का अर्थ है जो प्राणी मात्र एवं मानव समाज की हानि से रक्षा करे किन्तु इन विशेषताओं के बावजूद भी हम में एक प्रकार तंग दिली ने प्रवेश करना शुरू कर दिया था। इस तंग दिली ने हमारा सत्यानाश कर दिया हमने ऊँच नीच जाति पाँति वगैरह के सत्यानाशी ताने बाने बुनने शुरू कर दिये थे ... भील बालक को द्रोणाचार्य ने तीरंदाजी सिखाने से मना कर दिया ... गुरू की मिट्टी की मूर्ति से धनुर्विद्या सीखी लेकिन बरसों कथित उच्च कुल के राजकुमारों की ईर्ष्या एवं गुरू की तंग दिली के कारण उसे गुरू दक्षिणा में अपना अंगूठा देना पड़ा।

यदि ब्राह्मणों में शिक्षा और क्षत्रियों में से युद्ध कला निकाल दी जाय ... हमारे ब्राह्मण कहलाने वाले लोग ब्राह्मण के स्वाभाविक गुण धर्म से विहीन हो गये लेकिन फिर भी अपनी जाति के झूठे अहंकार में अपने दूसरे भाइयों को नीच बना दिया अनेक जाति पाँति की सृष्टि कर डाली और स्वयं नपुंसक होते हुए भी अपनी बनावटी जाति के मिथ्या घमंड में क्षत्रियों ने रक्षा करने के बजाय अपने दे

की अन्य जातियों को दबाना शुरू किया। इसी तरह दिलो, मूर्खता और स्वार्थपरता का यह परिणाम था, कि जहाँ हम ज्ञान विज्ञान मे दूसरो से पिछड़ गये वहाँ वीरता और स्वाभिमान मे भी किसी युग मे भारतीय क्षत्रियो के पूर्वज सारे विश्व को विजय कर विश्व यज्ञ रचाया करते थे.... उनकी सन्तान कहे जाने वाले क्षत्रियो ने विदेशी मुगल बादशाहो की गुलामी को सिर माथे पर लिया उनके कदमो मे अपनी बेटियाँ तक हाजिर की अपने देशवासियो के विरुद्ध उन विदेशी बादशाहो की ओर से लड़ाइयाँ लड़ी क्या यह कम शर्म की बात है, और फिर सात समुद्र पार से आकर अग्रेज हमारी छाती पर मूंग दलते रहे और हमारे ये क्षत्रिय और राजपूत राजे-महाराजे ब्रिटिश सम्राट के चित्र को अपनी पगड़ी में अपने ताज में चमकाते जरा भी लज्जित नही हुए।

"... हमारे पूर्वज ब्राह्मणों की याद की औलाद ने अपने ही देश मे भेद और प्रतिबन्ध की अनेक दीवारें खड़ी करके नीचे के लोगो को आगे बढने से रोका। इसी पाप का परिणाम हुआ कि काशी के क्वीन्स कालेज और दूसरे विश्व विद्यालयो मे अग्रेज और जर्मन विद्वानो के नीचे सस्कृत पढने पढाने का उन्हें दण्ड मिला। इतना दड मिलने के बाद भी इन लोगो की आँखें नही खुली। फिर भी छुआछूत और जाति-पाँति के प्रपच को इन्होंने नही छोडा विदेशी यवनो और मलेच्छों के आगे सिर झुकाया। उनकी गहरी गुलामी भी की किन्तु अपने दलित बन्धुओ के साथ समानता का व्यवहार करने मे उपर उठाने का पथ तैयार करने मे तरह-तरह के रोडे अटकाते रहे...."

हम अपने देश के ऊँचे कहलाने वालो से निवेदन करते हैं— झूठ बड़प्पन का घमड छोड हमारा देश भारत है, हम सभी भारतीय हैं कोई किसी भी जाति या सम्प्रदाय का क्यो न हो हम सब समान हैं, भाई-भाई है।"

कितनी उच्चता थी स्वामी जी क विचारो में, कितना साहस था विचार अभिव्यक्ति का, और कितनी पवित्रता थी उनके लक्ष्य में यह सब उनके विचारो से स्पष्ट है।

स्वामी जी ने कोरी बातें नही की अपने विचारो को मूर्त रूप दिया अनेक हरिजन स्कूल, हरिजन छात्रावास, हरिजन कल्याण केन्द्र खोले अनेक हरिजन बालको को शरण और प्रोत्साहन देकर समाज मे स्थान दिलवाया। राजस्थान विधान सभा के भू० पू० सदस्य धर्मपाल जाति से हरिजन (मर्म्बी) थे। उनके पिता ग्रामोत्थान विद्यापीठ में झाड़ू बुहारी देने का कार्य किया करते थे और बाजे पर गाना बजाना किया करते थे। स्वामी जी के सानिध्य से धर्मपाल भजन उपदेशक ही नही विधान सभा में भी पहुँचे। रामजीलाल धानक एवं बालुराम हरिजन स्वामी जी के व्यक्तिगत सेवक थे। धर्मपाल के पुत्र चानण राम को बीकानेर और लाहौर में अपने हरिजन होने के कारण दाखले मे अनेक जगह तिरष्कार सहना पडा।

इस घटना से क्रोधित होकर स्वामी जी ने चानण राम के माध्यम से सम्पूर्ण दलित वर्ग को यह प्रसिद्ध सलाह दी थी "" क्रोध, घृणा और वितृष्णा से हृदय का रेशा-रेशा भर उठा। मुझे क्रोध आ रहा था, उस चानण राम पर कि वह क्यों अब भी हिन्दू बना रहा। वह क्यूं इस घृणित हिन्दू नाम चानण राम को अब भी दिल मे लगा डी ए वी कालेज लाहौर और डूंगर कालेज बीकानेर मे अध्ययन के लिए प्रविष्ट हुआ। उसके लिए अनेक रास्ते खुले थे किसी मस्जिद या गिरजे में जाकर चोटी कटा लेता ईसाई बनकर बड़े मजे मे वह भविष्य को प्रशस्त बना सकता था साहब बनकर आता और इन ऊंची जात के पूर्वों के आगे पाखण्डियो की छाती पर मूंग दलता। उनसे सलाम करवाता अपनी जाति के अछूतो को इन नीच सवर्णों के विरुद्ध सगठित करता। सदियो से अपनी जाति के प्रति होते आ रहे अन्याय, अत्याचारो का जो भरकर बदला चुकाता। वह हत्या को आदर्श मान लेता जिसने हिन्दुओ के तिरस्कार से राम कृष्ण के बदले ईसा मसीह को अपना आराध्य बना लिया था और हरिया से हैरिस साहेब बन गया था।"

छुआछूत बदस्तूर जारी है, गाँव के बाहर असुरक्षित घर, कुएँ की सिढ़ियो स दस कदम दूर, टक टकी लगाये भव्य मन्दिरो की छाया से दूर, मतदान के लिए स्वतन्त्र अभिव्यक्ति से वंचित दुनियाँ का मलबा सर पर उठाये अधनगे फटे हाल पाँव मे बघुआ की जजीर पहने स्वामी जी का चानण राम हिन्दुस्तान के चप्पे-चप्पे म तम में ज्योति की आश लगाये तिल तिलकर मर रहा है। यदि उसने राम नाम की जगह की तरह अल्ला हो अकबर कहने हिम्मत की तो सारा हिन्दुत्व खोखला उठेगा कभी बेमही तो कभी बेलछी की तरह उसका सामूहिक दहन जश्न मनायेगा।

काश स्वामी जी का दर्द तथा कथित उच्च और विकासशील समाज ने समझा होता—

जि ह शक हो व
घरें खुदा की तलाश
हम तो इंसान को
दुनियाँ का खुदा समझते हैं।

10

महान समाज सुधारक

ईसाइयों की एक धार्मिक गाथा है कि उनके सम्प्रदाय का एक साधु समाज में प्रचलित रीति रिवाजों को मानने से इन्कार कर देता तो समझाने बुझाने प्रताड़न करने के बाद भी जब वह नहीं माना तो उसे नर्क में भेज दिया गया। नर्क के दुखों से उपजी करुण क्रन्दन भरी आवाजें उस साधु के कान पर और प्रबल होकर प्रकट हुईं साधु ने नर्कवासियों से और तेजी से चीखने चिल्लाने का कारण पूछा तो उनका जवाब था—हम तो कष्ट सहन करके कुछ दृढ़ हो गये हैं। लेकिन हमें दया आती है, कि आपका कोमल शरीर ये भयंकर कष्ट कैसे सहेगा।

साधु ने सारे कष्ट देखे-कहीं बदबूदार कीचड़ पड़ा है जिसमें मच्छरों मक्खियों जैसे स्वास्थ्य नाशक जीव भिनभिना रहे हैं कहीं रुकी हुई पानी की झीलें जिनमें बेलों वृक्षों के पत्तों के गिरने से पानी बेस्वाद और बदबूदार हो गया, बस्तों में हर जगह कूड़ा करकट मल-मूत्र पड़ा है जहाँ सांस भी नहीं लिया जा सकता टूटे-फूटे छप्पर जिनसे गर्मी सर्दी का बचाव भी नहीं होता अध पक्के गले सड़े रस रहित स्वाद रहित अस्वास्थ्यकर खाने के साधन फटेहाल पराल सोने के लिए खाट और चारपाई नहीं साग सब्जी-फल-फूल नहीं झाड़ झंखाड़ों में बिच्छू सांप आदि का कदम कदम पर भय मैले कुचैले फटी छाती के मनुष्य के पुतले या जिन्दा लाशें गांव से बाहर कहीं ऊंचे स्थान जहाँ पानी का नाम निशान नहीं और हवा के साथ जान लेवा धूल उड़ती दिखाई दे रही जिसमें गिद्धों की टोलियां जिन्दा मुर्दा जानवरों को खाने में जुट पड़ती दिखाई देती हैं। साधु ने एक-एक बदसूरती को परखा और इस नर्क को स्वर्ग बनाने की ठान ली।

साधु ने नर्कवासियों के सामने अपना ध्येय प्रकट किया, तो किसी ने कहा हम यहाँ आये ही नर्क भोगने हैं। किसी ने अपने दुर्बल शरीर की दुहाई दी किसी का जवाब था हमारे पास साधन ही क्या है स्वर्ग बनाने का आप हमारी करणी से मिले दण्ड को कैसे बदल सकते हैं? विधाता की रचना को हम नहीं बदल सकते? लेकिन साधु इन आलसी और पुरुषार्थहीन तर्कों से हारा नहीं, उसने अपने उत्साह और पराक्रम से उन्हीं में से कुछ लोगों के साथ नर्क को स्वर्ग बनाने में जुट गया।

कीचड़ पर कराहों से ऊँचे भागो की मिट्टी डाली और समतल जमीन धरो मे बाट दी। लकडी, ईंट, चूना पत्थर दूर-दूर से मँगवा कर सुन्दर घर बनाये गये, झीलो का पानी ऊपर खींचकर टीलो वाली एव कीचड वाली समतल जमीन पर सिंचाई द्वारा फलदार पौधे अन्न, फल फूल की खेती प्रारम्भ की। डिग्गीयाँ बनाकर पीने योग्य पानी वर्षा ऋतु मे एकत्र किया जाता। कूडे करकट के ढेर खेतो मे खाद हेतु पहुँचा दिये गये, पशुओ को खेतो में उपजा चारा डालकर और स्वच्छ पानी पिलाकर स्वस्थ बनाया गया। उनके दूध से बच्चे और बूढे स्वस्थ हुए, उनकी खाल, दूध, ऊन से धन सग्रह हुआ। नर्क मे नवआगन्तुक यह देखकर आश्चर्य करते कि उन्हें जिस स्थान पर दण्ड स्वरूप भेजा गया है वह उस तथा कथित स्वर्ग से अधिक सुख कर है।

यह कहानी स्वामी केशवानन्द जी महाराज की जीवन गाथा है स्वामी जी सगरिया को स्वर्ग बनाने का ध्येय लेकर आये थे जिसमे उन्हे अनेक बाधाओ के बावजूद सफलता मिली।

कबीर की नजर से कोई अन्धविश्वास छूटा हो, गाधी की दृष्टि से कोई दुर्व्यसन बचा हो, तो स्वामी जी की दृष्टि से मरुस्थल मे प्रचलित बेमेल विवाह, मृत्युभोज, ऋण, अशिक्षा बीडी-सिगरेट, जुआ शराब मुकदमे बाजी पर्दाप्रथा, स्त्री अशिक्षा गाली गलौज, गरीबी अकर्मण्यता, अस्वच्छता और असामाजिक वेश भूषा रूपी पिछडेपन की द्योतक दशायें बची हों।

स्वामी जी ने जीवन पर्यन्त कुरीतियो एव दुर्व्यसनो के खिलाफ सघर्ष किया इस सम्बन्ध मे उनके विद्वतापूर्ण व तार्किक विचार हमे उनके द्वारा लिखी गई पुस्तक 'मरु भूमि सेवा कार्य' मे मिलते हैं। जिसमें मरुस्थल के चप्पे-चप्पे, कण-कण की विशेषताओ को उजागर किया गया है। समस्याओ को पहचाना गया है, और उनके समाधान प्रस्तुत किये गये हैं।

"आज प्रत्येक सस्कार, बिरादरी भोज का साधन बन गया है, किसी के लडका पैदा हो, लोग दस्ठौन की बात करते हैं नामकरण के लिए नही, अपितु खाने के लिए। कोई मर जाए अन्त्येष्टि सस्कार चाहे गीली लकडियो से कर दो चाहे लाश को अधजला छोड दो, लेकिन मृत्यु भोज जरूर करो। ब्याह शादी हो, गमी हो कोई पैदा हो, लाओ हमे खाना खिलाओ बिरादरी की आवाज होती है। अगर कोई मृतक भोजन न करे तो उसे बिरादरी से निकाला जाता है। मारने पीटने की धमकी दी जाती है

किसी को इस बात से मतलब नही कि विवाह सस्कार मन्त्रो से हो रहा है अथवा श्लोको से, वर-वधु की जोडी समेल है या बेमेल, उन्ह तो मतलब खाने से है, जितनी बढ़िया दावत बन गई लोगो की निगाह मे उतना ही अच्छा विवाह हो गया

किसी के घर में शोक हो लोग बैठकर नुकते और भोजन का प्रोग्राम बनाते हैं,

जैसे मरे हुए मवेशी पर गिद्ध इकट्ठे हो जाते हैं खाने को, यहाँ तो जिन्दों को खाने की तैयारियाँ होती हैं। मृतक के वारीस घर फूँक तमाशा देखता है....

नुकता करने के बाद कोई भी परिवार अगले बीस वर्ष के लिए गरीबी के दुश्चक्र मे फंस जाता है....कर्ज दीमक की भाँति चढ जाता है कर्जदार आदमी न तो अच्छा खा सकते हैं, और न अच्छा पहन सकता .. बुड्ढे और दुर्बल पशुओं से काम चलाना पड़ता है....स्वास्थ्य गिर जाता है.... पशुओ के अभाव मे खेती नहीं कर पाता . अकाल पड़ते हैं जिसका नतीजा यह होता है कि दरिद्रता और गन्दगी उनके यहाँ डेरा डाल लेती है। गरीब का दुनियाँ में कोई मान नही करता हर समय इन्हें दूसरो द्वारा तिरस्कृत होना पड़ता है।

... भोजो पर हम कितना खर्च करते हैं, अन्दाजा लगावें तो कपकपी आ जाये....संगरिया गाँव मे गत पाँच वर्ष मे विवाह शादियो पर 20,000 रुपये खर्च हो गये (यह चौथे दशक का अन्दाजा है) इनसे दो तालाब बन सकते थे, जो अगले पचास-पचास साल तक चार हजार मन पानी हर वर्ष के हिसाब से दो लाख मन पानी हमारे पीने, पशुओ के पीने एवं वन वनस्पति विस्तार एवं हमारे आने वाली सन्तान के काम आते। यदि पिछले चालीस वर्ष की फिजूल खर्ची का टोटल लगावें तो सोलह तालाब बन जाते और संगरिया का जल कष्ट मिटता और एक लाख साठ हजार रुपया सगरिया के गरीबों, मजदूरो के पास होता ....

अनमेल विवाह ... कर्ज से दबे लोग ज्यादा से ज्यादा रकम हासिल करने के लिए अपनी कन्याओ को बुड्ढे लोगो के गले मढ देते हैं, इस कन्या विक्रय ने और अनमेल विवाह ने विधवाओ की संख्या को बढाया है। समाज के चरित्र और स्वास्थ्य को गिराया है पाप की वृद्धि की है और धर्म का ह्रास हुआ है .... इस कुप्रथा के कारण सभ्य समाज के सामने हम अपना सर ऊँचा नही कर सकते.........

बूँद-बूँद ■ घट भरे टपक रीतो होय, के आर्थिक सिद्धान्त को समझ कर इन नाशकारी प्रथाओ को समाज से उखाड फेंकना ही हमारे विकास के रास्ते प्रशस्त करेगा।

× × × ×

गिलासो मे जो डूबें फिर न उभरे जिन्दगानी मे।
हजारो बह गये इन बोतलो के बन्द पानी मे॥
न कर बर्बाद जिन्दगी, बोतल के दीवाने।
वह काटेगा बुढ़ापे मे, जो बोता है जवानी मे॥
यह दारू का प्याला, मौत का कड़वा प्याला है।
मिला है जहर शरबत में, छुपी है आग पानी मे॥

....बप्पा रावल को जब यह पता लगा कि बीमारी के समय मे उन्हें औषधि रूप मे शराब दी गई थी तो उसने अपने शरीर को त्याग कर दिया था ....

' तम्बाकू का व्यसन भी झोपडी से राजमहल तक पहुँचा हो तम्बाकू पीना निरा जगलीपन और व्यर्थ की आदत है। '''

सिगरेट के एक कोने पर आग, और दूसरे पर एक मूर्ख व्यक्ति बैठा होता है''' अंग्रेजी का पढे लिखे लोग तम्बाकू सेवन को आज कल की सभ्यता मानते हैं''' प्रति वर्ष लाखों बीघे इसकी खेती होती है, तब भी विदेशों से मँगानी पडती है। साधारण मजदूर भी 25-30 रुपये माहवार की बीडी पी जाते हैं। ' युद्ध से पहले अनेको आदमी जो 60-70 रुपये माहवार की सिगरेट इस व्यसन पर खर्च करते थे। युद्ध जनित महगाई में अब उनका क्या हाल होगा। ''' मरन वाला राज रोग की भाँति अपनी सन्तान को यह दुर्व्यसन भी विरासत मे दे जाता है। माता-पिताओं का परम कर्तव्य है कि वे इस दुर्व्यसन से बचें जिससे उनकी आने वाली सन्तानें इस कुटेव से छुटकारा पा सकें।

एक घर आजकल कम से कम दो रुपये माहवारी की तम्बाकू पीता है 100 घरो वाले गाँव मे 2400 रुपये की तम्बाकू पी गई, चाय, शराब, भांग की खपत है तो 600 रुपये साल के ये समझिये इस प्रकार एक साल मे 3000 रुपये दुर्व्यसन पर खर्च हुए इस रूप मे इस रुपये से 300 रुपये साल मे गाँव की सफाई पाँच सौ रुपये मे गाँव की पाठशाला का खर्च, पाँच सौ रुपय लडकियों की शिक्षा, 1700 रुपये बचत। इस बजट से पाँचवे वर्ष तालाब और हर दूसरे वर्ष कुआ बनाया जा सकता है। अगले 25 वर्ष मे गाँव मे पाँच तालाब 12 कुएँ होंगे। जो प्रति वर्ष चार सौ पाँच सौ बिघा जमीन की सिंचाई एव मानव पशु की तकलीफ मिटा सकते हैं।

तम्बाकू की भाँति चाय का भी बायकाट होना चाहिए चाय बेचने वाले बडी मक्कारी से व्यापार करते हैं स्टेशन पर साइन बोर्ड लगाये जाते हैं कि ' गर्मी मे गर्म चाय ठडक देती है" यह वैसी ही बात है कि जैसे कोई कहे शीतकाल में शिमला गर्म रहता है"

" जरा भी लिखा पढी करने मे बाबूओ के सिर दर्द होने लगता है और मजदूरो की टाँगें लडखडाने लगती है। भरी जवानी मे पिचके गाल, तेज हीन आँख, अपने देशवासियों को देखकर किसे दुख न होगा। '' '

प्रत्येक समझदार व्यक्ति का कर्तव्य है कि शराब, भाग, गाजा, चरस, तम्बाकू, चाय सबका बहिष्कार करें—और इन चीजो को अपने पास मे फटकने तक न दें, अगर ऐसा हुआ जो, होना ही चाहिये तो हमारा राष्ट्र स्वस्थ और बलिष्ठ राष्ट्र बन जायेगा। वास्तव मे यह कार्य न केवल अपने लिये किन्तु सन्तानो और मुल्क भर के लिए कल्याण का मार्ग होगा और ऐसा कौन अभागा होगा, जो अपनी सन्तानो और मुल्क को कल्याण न करना चाहता हो। जिस प्रकार शराब गाजा, चाय से बरबादी होती हैं उसी भाँति जेवरो के शौक ने भी देहातियो की गरीबी को बढ़ाया है। हमारे गाँव मे गालियो, अपशब्दो के उच्चारण का बहुत

ही अधिक प्रचलन है : बात बात मे माँ, बहन आदि की गालियाँ निकाल निकाल कर अपने असभ्य और जंगलीपन का परिचय लोग देते रहते हैं। अपने शिशुओं को लाड प्यार के समय लुच्चा, बदमाश आदि अपशब्दों का उच्चारण करते हैं। हम अपने सगे सम्बन्धियों को गन्दी गालियों से प्रसन्न करते हैं। यही सब बुरी गालियाँ अपशब्द, बुरे इशारे, बुरा रहन-सहन विरासत मे हम अपनी भोली-भाली सन्तान को सदैव देते रहते हैं।

अन्ध विश्वास के सम्बन्ध मे उन्होंने लिखा है कि रात मे भूत देखने की बात हजारों आदमी कहते हैं दिन मे भूत देखने की बात कोई नहीं कहता। रात मे अँधेरा होता है इस का अर्थ अन्धकार मे भूतों का डर होता है। अर्थात् अन्धकार का नाम ही भूत है। इस प्रकार जिन लोगों के हृदय रूपी मकानों को ज्ञान रूपी सूर्य के दर्शन नही होते वे सदैव अन्धकार मे रहते हैं। इस प्रकार हृदय के अन्धकार का दूर होना ही विद्या अथवा शिक्षा है।

स्वामी जी के सहजग्राह्यीय विचार, दुर्व्यसनों से कानिक रूप से छुटकारा पाने की तरकीब, स्वयं और अनुयायियों का स्वच्छ दुर्व्यसन रहित जीवन, नशे एवं आयोजन आदि के रचनात्मक और प्रेरणादायक कार्यक्रम थे, जिनसे सम्पूर्ण क्षेत्र मे समाज सुधार की लहर चल पडी स्वामी जी या उनके आदमियों को देखकर लोग हुक्का छुपा देते, बीडी, सिगरेट तोड देते, बोतलें दूर लेजाकर फोड देते। चाय की जगह मेहमानों को ताजा छाछ और दूध पेश करते। ग्रामोत्थान विद्यापीठ तो धूम्रपान निषेध क्षेत्र था, स्वामी जी की चेतना एवं स्वप्रेरित होकर विद्यापीठ के समस्त लोगों ने कुरीतियों और दुर्व्यसनों को न केवल विद्यापीठ परिसर, बल्कि मरुस्थल के दूरदराज क्षेत्रों से भगाने के भागीरथ प्रयास किये।

नशाविरोधी प्रदर्शनियाँ, दीवारों पर प्रेरणादायक वाक्य लिख कर पोस्टर छपवा कर भजन मंडलियों मे कार्यक्रम पुस्तक एवं पत्र-पत्रिकाओं द्वारा नशा विरोधी अभियान छेडकर इस कार्य को युद्धस्तर पर किया।

रुढीवादी, तथा कथित सभ्यता वाले अनुचित ढंग से रुपया कमाने वाले, नेमची लोगों ने स्वामी जी के अभियान को अवरुद्ध करने के प्रयास करते थी राम-नारायण ज्याणी के शब्दों मे ---

अपनों ने ही लिखाई है रपट जा-जाकर थाने मे ।
कि यह साधु काम करता सुधार का हमारे जमाने में ।।

लेकिन स्वामी जी के रचनात्मक उपाय इन सबका मुख मोड देते थे—

यदि धन प्यारा है तो शराब से बचो ।
यदि धर्म प्यारा है तो शराब से बचो ।।

× × ×

तम्बाकू के काले कारनामे
तम्बाकू पीना जगली आदत है

× × ×

तम्बाकू कहती है—
खांसी करू, गुर्रा करूं,
फिर भी न मरे तो मैं क्या करूं ।

× × ×

इधर पीया, उधर फूंका ।
इधर सूंघा, उधर छींका ॥
इधर खाया, उधर थूका ।
तम्बाकू से सदा झौंका ॥

× × ×

सावधान शराब जहरीली नागिन है ।
शराब से पेट, जिगर और गुर्दे रोग ग्रस्त होते हैं
शराब पाप का वृक्ष है'
इन गम्भीर घाव करने वाले नारो के आगे वे सब आहत हो जाते ।

प्रेम से, बुद्धी से समझाओ वरना असामाजिक तत्वो को समाज की संगठित शक्ति से डराओ, यह विचार था स्वामी जी का । एक बार स्वामी जी के ग्रामोत्थान रूपी शिक्षा मंदिर के पास राजस्थान, हरियाणा सीमा पर किसी ने शराब का खोखा खोला । स्वामी जी गये और कहने लगे "ओ भले आदमी तेरी आ दुकान उठा ले । नही तो छोरा तने सीधो कर देसी फिर मेरे बस की कोनी ' " उसी समय दुकान उठ गयी ।

1972 मे स्वर्ग सिधारे उस सन्त का प्रभाव आज भी उस क्षेत्र मे है, लेकिन अब फिर वे काली शक्तियाँ स्वामी जी द्वारा निर्मित उस स्वर्ग मे अपना डेरा जमाने लगी है । स्वामी जी के वे अनुयायी और वे छोरे (लड़के) आज भी बड़ी संख्या मे हैं लेकिन वह दुकान आज फिर वहां आ गयी । ठेकेदार कहता है उसने लाखो खर्च किये हैं स्वामी जी के अनुयायियो मे समाज सुधार की वह दृढ़ता और ईमानदारी और कर्त्तव्य बोध नही रहा । जिससे उस पाप पौधे को वृक्ष बनने से पहले उखाड़ सकें ।

भय लगता है, स्वामी जी के स्वर्ग मे कहीं शराब का कीचड़ न हो जाये पाप वृक्षों मे सांप और बिच्छू न पनप जाये, तम्बाकू, चरस और गांजे का विषैला धुंआ उस प्रकाश स्तम्भ की रोशनी को मन्द न कर दे, कुरीतियो को भगाने मे सृजनात्मक रूपी तलवार को गढ़ने वाला कारखाना कहीं हमारी अकर्मण्यता से दममारो दम रूपी पीढ़ी का सृजक न बन जाये ।

ही अधिक प्रचलन है : बात बात में माँ, बहन आदि की गालियाँ निकाल निकाल कर अपने असभ्य और जंगलीपन का परिचय लोग देते रहते हैं। अपने शिशुओं को लाड प्यार के समय लुच्चा, बदमाश आदि अपशब्दों का उच्चारण करते हैं। हम अपने सगे सम्बन्धियों को गन्दी गालियों से प्रसन्न करते हैं। यही सब बुरी गालियाँ अपशब्द, बुरे इशारे, बुरा रहन-सहन विरासत में हम अपनी भोली-भाली सन्तान को सदैव देते रहते हैं।

अन्ध विश्वास के सम्बन्ध में उन्होंने लिखा है कि रात में भूत देखने की बात हजारों आदमी कहते हैं दिन में भूत देखने की बात कोई नहीं कहता। रात में अँधेरा होता है इस का अर्थ अन्धकार में भूतों का डर होता है। अर्थात् अन्धकार का नाम ही भूत है। इस प्रकार जिन लोगों के हृदय रूपी मकानों को ज्ञान रूपी सूर्य के दर्शन नहीं होते वे सदैव अन्धकार में रहते हैं। इस प्रकार हृदय के अन्धकार का दूर होना ही विद्या अथवा शिक्षा है।

स्वामी जी के सहजग्राहीय विचार, दुर्व्यसनों से तार्किक रूप से छुटकारा पाने की तरकीब, स्वयं और अनुयायियों का स्वच्छ दुर्व्यसन रहित जीवन, नशे एवं आयोजन आदि के रचनात्मक और प्रेरणादायक कार्यक्रम थे, जिनसे सम्पूर्ण क्षेत्र में समाज सुधार की लहर चल पड़ी स्वामी जी या उनके आदमियों को देखकर लोग हुक्के छुपा देते, बीड़ी, सिगरेट तोड़ देते, बोतलें दूर लेजाकर फोड़ देते। चाय की जगह मेहमानों को ताजा छाछ और दूध पेश करते। ग्रामोत्थान विद्यापीठ तो धूम्रपान निषेध क्षेत्र था, स्वामी जी की चेतना एवं स्वप्रेरित होकर विद्यापीठ के समस्त लोगों ने कुरीतियों और दुर्व्यसनों को न केवल विद्यापीठ परिसर, बल्कि मरुस्थल के दूरदराज क्षेत्रों से भगाने के भागीरथ प्रयास किये।

नशाविरोधी प्रदर्शनियाँ, दीवारों पर प्रेरणादायक वाक्य लिख कर पोस्टर छपवा कर भजन मंडलियों में कार्यक्रमों पुस्तक एवं पत्र-पत्रिकाओं द्वारा नशा विरोधी अभियान छेड़कर इस कार्य को युद्धस्तर पर किया।

रुढीवादी, तथा कथित सभ्यता वाले अनुचित ढंग से रुपया कमाने वाले, नशेड़ी लोगों ने स्वामी जी के अभियान को अवरुद्ध करने के प्रयास करते श्री रामनारायण ज्याणी के शब्दों में —

अपनों ने ही लिखाई है रपट जा-जाकर थाने में।
कि यह साधु काम करता सुधार का हमारे जमाने में॥

लेकिन स्वामी जी के रचनात्मक उपाय इन सबका मुख मोड़ देते थे—

यदि धन प्यारा है तो शराब से बचो।
यदि धर्म प्यारा है तो शराब से बचो॥

× × ×

तम्बाकू के काले कारनामे
तम्बाकू पीना जंगली आदत है

× × ×

तम्बाकू कहती है—
खांसी करूं, दमा करूं,
फिर भी न मरे तो मैं क्या करूं।

× × ×

इधर पीया, उधर फूंका।
इधर सूंघा, उधर छींका॥
इधर खाया, उधर थूका।
तम्बाकू से सदा चौंका॥

× × ×

सावधान शराब जहरीली नागिन है।
शराब से पेट, जिगर और गुर्दे रोग ग्रस्त होते हैं
शराब पाप का वृक्ष है"
इन गम्भीर घाव करने वाले नारों के आगे वे सब आहत हो जाते।

प्रेम से, बुद्धी से समझाओ वरना असामाजिक तत्वों को समाज की संगठित शक्ति से डराओ, यह विचार था स्वामी जी का। एक बार स्वामी जी के ग्रामोत्थान की शिक्षा मंदिर के पास राजस्थान, हरियाणा सीमा पर किसी ने शराब का खोखा खोला। स्वामी जी गये और कहने लगे "ओ भले आदमी तेरी आ दुकान उठा ले। नहीं तो छोरा तन सीधो कर देगो फिर मेरे बस की कोनी"" उसी समय दुकान उठ गयी।

1972 में स्वर्ग सिधारे उस संत का प्रभाव आज भी उस क्षेत्र में है, लेकिन अब फिर वे कामी शक्तियाँ स्वामी जी द्वारा निर्मित उस स्वर्ग में अपना डेरा जमाने लगी हैं। स्वामी जी के वे अनुयायी और वे छोरे (लड़के) आज भी बड़ी संख्या में हैं लेकिन वह दुकान आज फिर वहां आ गयी। ठेकेदार कहता है उसने लाखों खर्च किये हैं स्वामी जी के अनुयायियों में समाज सुधार की वह दृढ़ता और ईमानदारी और कर्तव्य बोध नहीं रहा। जिससे उस पाप पौधे को वृक्ष बनने से पहले उखाड़ सकें।

भय लगता है, स्वामी जी के स्वर्ग में कहीं शराब का कीचड़ न हो जाये पाप कुण्डों में सांप और बिच्छू न पनप जाये, तम्बाकू, चरस और गांजे का विषैला धुंआ इस प्रकाश स्तम्भ की रोशनी को मन्द न कर दे, कुरीतियों को मिटाने में गृहनाशक रूपी तलवार को गढ़ने वाला कारखाना कहीं हमारी अकर्मण्यता से हमारी दम रूपी पीढ़ी का गूजर न बन जाये।

11

साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रणेता

हिन्दू जाट परिवार मे जन्मे एवं सिख गुरू नानक देवजी के पुत्र श्रीचन्दजी द्वारा प्रतिपादित उदासी सन्त पर परम्परा के साधु बने, स्वामी केशवानन्द जी धार्मिक समन्वय और साम्प्रदायिक सद्भाव की जीती जागती तस्वीर थे।

हिन्दी-सिख इतिहास, गुरुमत दर्शन, गुरू जम्भेश्वर महाराज की वाणियो का प्रकाशन, स्वर्ण मन्दिर के स्वर्ण पत्रो का जीर्णोद्धार, नामधारी गुरु एवं जैन गुरुओ के सम्मान मे समारोह आयोजित कर स्वामी जी ने अपनी मानव धर्म प्रवर्तक की भावना को आकार दिया।

स्वामी जी सिख गुरूओ की परम्परा मे प्रगाढ आस्था रखते थे, और उनकी वाणियो को मानव मात्र के लिए जीवन का सन्देश मानते थे। गुरुओ की वाणी जन-जन तक पहुँचे इसके लिए वे जन जन की भाषाओ मे होनी चाहिए, इसके लिए उन्होने इस शताब्दी के प्रथम दशक मे ही प्रयास शुरू कर दिये थे, जब वे फाजिल्का और अबोहर के क्षेत्रो मे गुरू ग्रन्थ साहब का पाठ और उसका सस्कृत-हिन्दी मे रुपान्तरण घूमकर विशेष अवसरो पर सुनाया करते थे।

गुरुओ की वाणी जन जन तक पहुँचे इसका सफल प्रयास स्वामी जी ने 1939 में हिन्दी सिख इतिहास, प्रसिद्ध जाट इतिहासकार स्व० ठाकुर देशराज जघीना द्वारा एव प्रसिद्ध इतिहासकार सरदार गण्डासिंह के सहयोग से किया। डॉ० गण्डासिंह, स्वामी केशवानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ के संस्मरण खण्ड में लिखते हैं"… "' जिस बात ने स्वामी जी की ओर मुझे अत्यधिक आकर्षित किया, उनका पजाब के इतिहास से प्रेम जिसकी देश के सुविज्ञ समाज ने आज तक नितान्त अवहेलना की हुई थी।

""स्वामी जी ने सिख इतिहास को हिन्दी मे लिखे जाने की एक योजना तैयार की, इस भाषा मे तब तक सन्त गोविन्द सिंह का इतिहास गुरू खालसा के अतिरिक्त और कोई अच्छी पुस्तक इस विषय पर न थी। स्वामी जी ने अनुभव किया कि सिख गुरुओ के सम्पादित महान् कार्य और अठारहवी शताब्दी के मुगलों के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए सिखो के बलिदानो की गाथायें और साथ ही पजाब मे प्रजातन्त्रीय जनगणो की सिख मिसलदारी के रूप में महाराजा रणजीतसिंह

का शानदार राज्य इत्यादि की गाथायें भारत के विभिन्न राज्यों और पूर्वी और केन्द्रीय प्रदेशों की जनता की जानकारी में लाने की आवश्यकता है। आपने कहा कि 1920 से 25 के सिख गुरु द्वारा सुधार आन्दोलन मे जो महान् बलिदान किये गये, वह सिखो की अपनी उपेक्षावृति के कारण भुलाये जा रहे थे उनकी स्मृति भी इतिहास के रूप मे स्थापित रहनी चाहिए ""

""मैंने उन्हें इस महान कार्य के लिए प्रत्येक सुविधा जो दे सकता था खालसा कालेज के इतिहास विभाग की ओर से दी।"

सिख इतिहास का प्रकाशन जन सहयोग एवं गुरु द्वारा प्रबन्ध कमेटी के सहयोग से 1954 मे सम्भव हुआ। यह 15 वर्ष की अवधि सवा सात सौ पृष्ठ के ग्रंथ के लिए अधिक नहीं थी, जो पजाब ही नहीं उत्तर भारत के तत्कालीन हर पढ़े लिखे परिवार मे पहुँचा। युद्ध जनित एव भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन मे ग्रन्थ के लेखक का सलग्न होना भी इसके विलम्ब का कारण बना।

स्वामी जी ने ग्रन्थ के प्रकाशकीय में लिखा—"हमें इस सिख इतिहास के प्रकाशित होने से प्रसन्नता है, कारण कि इससे हिन्दी साहित्य के एक अभाव की पूर्ति होती है। इस पूर्ति मे सिख जाति और सिख धर्म के सम्बन्ध मे हिन्दी जनता को सही परिचय प्राप्त करने का साधन प्रस्तुत हो गया। यह इतिहास एक प्रकार से सिखों सम्बन्धी जानकारी का कोष है""

उदासी सन्तो के पथ ने नानक पन्थ का काफी प्रचार किया। जहाँ जहाँ गुरु लोगो ने यात्राएँ की वहाँ-वहाँ उन्होने डेरे बनवाये और वहाँ के अपने भक्तो को गुरुवाणी का रसास्वादन कराते रहे। उनकी भी धार्मिक पुस्तक ग्रन्थ साहब रही"" उदासीन साधु एक लम्बे समय तक सिखो के पूरक रहे हैं। उदासी गुरु नानक देव के पुत्र बाबा श्रीचन्द जी के अनुयायी हैं, तो सिख उनके प्रिय शिष्य अगद देवजी की शिष्य परम्परा हैं। उदासियो ने सस्कृत शिक्षा पाकर फिर सस्कृत मे ग्रन्थ लिखकर गुरु मत का प्रकाश और प्रचार किया।""

" सिख गुरुओं के हिन्दू जाति और भारत देश पर बहुत बडे अहसान हैं। *ऋषि दयानन्द, राजा राममोहन राय और रामकृष्ण परमहस से पहले जिन्होने बिना* जाति और धर्म भेद के अपने उपदेशो को मनुष्य मात्र के लिए फैलाया था, वे सिख गुरू ही थे। गुरू ग्रन्थ साहिब मे सन्तो की वाणियो का भी सग्रह है, जिनमे नाम छीपी, जुलाहे कबीर, रैदास, चमार, धन्ना जाट, रामानन्द ब्राह्मण और फरीद मुस्लिम जैसे विभिन्न जातियो और धर्मो के सन्त शामिल हैं। इन वाणियो के द्वारा पुरानी रूढ़ियों, रस्म रिवाजो, आचार-विचारो, के आडम्बरों और पाखण्डो को उखाड फेंकने का प्रयत्न और प्रचार किया गया है, जिससे कि लोग सरल जीवन, उत्तम आचरण वाले, और सबके साथ सौहार्द का वर्ताव करने वाले बन जावे"

सिख इतिहास और गुरु मत दर्शन प्रकाशन के कारण न केवल सिखों बल्कि

सम्पूर्ण हिन्दी जगत में स्वामी जी को इस महान् कार्य को अति महत्वपूर्ण माना गया। प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रो० बाबूराम सक्सेना ने इसे विश्व कोश कहा, मास्टर तारासिंह ने इसे सिखों का महान् गौरव पूर्ण इतिहास, सरदार हुकमसिंह ने हिन्दी में सिख गुरुओं और शहीदों के ऊँचे कारनामों का परिचय कराने वाली सर्वोत्तम इतिहास पुस्तक का दर्जा दिया, ज्ञानी करतार सिंह ने इस प्रयास को हर सिख के सजाये रखने वाली धरोहर और सरदार दर्शनसिंह फेरूमान ने सिख गुरुओं की अमर वाणियों और सिख वीरों के महान् कारनामों की गाथाएँ हिन्दी जगत तक पहुँचाने के पवित्र कार्य के लिए स्वामी जी एवं लेखक ठाकुर देशराज को सिख जाति की अपार खुशी से अवगत कराया।

सिख जगत ने भी स्वामी जी महाराज को कम इज्जत नहीं बख्शी, विश्व के हर सिख के मन में स्वामी जी को सम्मानित करने की उत्कृष्ट इच्छा उत्पन्न हुई, थी और वह अवसर आया 17 अक्टूबर 1956 को जब सिख धर्म के सर्वोच्च पवित्र हरी मन्दिर (स्वर्ण मन्दिर अमृतसर) पर चढ़े स्वर्ण पत्रों का जीर्णोद्धार उस फकीर के हाथों करवाया।

सन्त स्वामी केशवानन्द वे दूसरे व्यक्ति थे जिन्हें एक धर्म का सम्पूर्ण अनुयाइयों ने सर्वों सोना चढ़ाने का सम्मान 155 वर्ष बाद दिया था। मौलिक स्वर्ण पत्र महाराजा रणजीतसिंह ने 1801 में चढ़ाये थे। इस अवसर पर सम्पूर्ण सिक्खी उनके सम्मान में झुक गई थी और अमृतसर सहित सम्पूर्ण पंजाब सत् श्री अकाल के जय घोष से गूंज उठा था।

समारोह के मुख्य अतिथि स्वामी केशवानन्द महाराज ने अपने उद्घाटन भाषण में सिख गुरुओं की वाणी को समस्त समाज की धरोहर बताते हुए कहा था—'महाराजा रणजीतसिंह तो आखिर महाराजा थे उनके लिए सोने के पत्र चढ़ाना कोई आश्चर्य की बात न थी। मगर आज मेरे जैसे फकीर के हाथ उन पत्रों के जीर्णोद्धार की शुरूआत कराकर आप मुझे अचम्भे में डाल रहे हैं—शायद दूसरों को भी भारतीय जनता ने राजाओं से फकीरों को कम महत्व नहीं दिया मैं अपने इस फकीरी जीवन में जो कुछ कर सका हूँ वह जनता से भीख मांगकर ही किया है। लेकिन यहाँ सोने के पत्रों के जीर्णोद्धार के लिए जनता से भीख मांगने का मौका मुझे नहीं दिया गया।

* गुरू नानकदेव वैदिक वंश के क्षत्री श्री कल्याणराय के घर 1525 विक्रमी में माता तृप्ता देवी के गर्भ से उत्पन्न हुए। श्री नानक देव जी के जीवन का सार था।

नेक कमाई में दूध और, पाप की कमाई में खून टपकता है॥

** गुरू रामदास जी और गुरू अर्जुन देवजी ने हरमन्दिर का निर्माण करवाया*** दशमेश गुरु गोविन्द सिंह जी जो एक ऊँचे दर्जे के विचारक और

कवि भी थे एक बहुत बडे योद्धा एव कुशल सेनापति भी थे एव जिस तरह हिन्दू एव सिखो ने मिलकर धम की स्थापना के लिए काय किया बन्दा बेरागी का बलिदान याद रहेगा।

मैं तो कहूँगा कि गुरुओं को किसी छोटी जमात में बाँधकर रखना उन गुरुओ के साथ विश्वास घात करना है और सिख धम के साथ भी। महापुरुषो को सीमा में बाँध कर हम उन्हे छोटा बनाते हैं बडा नही जितना भी सघर्ष है उसके मूल में लोभ पापस्य कारणम् है। 1947 म देश स्वतन्त्र हुआ देश के लिए हममें कौमी एकता आई परन्तु आज हम सीमाओ के लिए झगडते हैं तो कभी भाषा के लिए हिन्दी सस्कृत के विस्तार के लिए गुरु गोविन्दसिह जी ने सिखो को भेजा जो आगे चलकर निमल पन्थ बना

सिखो से चाहूँगा कि वे आज भी उस बलिदानी परम्परा को कायम रखे जिसके आधार पर खालसा पन्थ की नीव पडी नानक वाणी को मैंने न केवल पढा समझने का प्रयास किया है मैंने हाँगकाँग में सिख गुरुद्वारे देखे जड बात की चिकित्सा होनी चाहिए। बाहरी चमक दमक या टीप टल्ले से कुछ नही होता। आज कल हमारे मुल्क को बीमारी कुछ और इलाज कुछ और हो रहा है।

सच बात तो यह है कि इस ससार में जो बोयेगा वही खायेगा नानक देवजी ने कहा है—

मानक जो बीजे सो खावण करते लिख्यि पाईयाँ

राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सोहार्द के हामी उस सन्त का एक एक शब्द अध्ययन चिन्तन और अनुभव द्वारा खिंची लकीर था। लेकिन वतमान —

उस शायर की कविता में वह
यह लीक सी किसने मारी है

हमारे बुजुर्गों ने जमीन में गुरुओ की वाणी और कृष्ण की गीता बोई थी यह अग्नि बीज और नफरत की फसल कैसे उगने लगी। धम का अधकचरा ज्ञान रखने वाले आँखो पर मजहब की पट्टी बाँधकर सीमा और भाषा का प्रश्न उठाकर आज अपने ही बाजू पर प्रहार करने वाले सतो की वाणियो पर रफ काय की तरह कलम की बजाय तलवार चला रहे हैं। तभी तो शिव कुमार बटालवी की दुखी कलम कह उठी —

तब वारीश शाह को बाँटा था
अब शिव कुमार की बारी है,
वे जख्म तुम्हें क्या भूल गये,
जो नयो की फिर तैयारी है।

× × ×

मैं कब कहता इन्साफ न चाह,
या यह, कि हक की छेड ना जग।
पर दुश्मन की पहचान तो कर,
यों ही मत काट अपने ही अग।

सिख गुरुओं के कार्य हिन्दू धर्म की बुराइयों के खिलाफ सुधार आन्दोलन और विपत्ति के समय उसकी रक्षा करने के सम्बन्ध में थे। उनमें कोई तग दिली नहीं थी। गुरुओं की वाणी और सिख धर्म में कहीं भी हिन्दू और हिन्दी का विरोध नहीं है। नानक की वाणी जहाँ ब्रज हिन्दी और संस्कृत में है, वहीं गुरू गोविन्दसिंह संस्कृत शिक्षा के अभाव में गुरु वाणियों को समझना असम्भव मानते थे, उनका प्रारम्भिक नाम गोविन्दराम था, उन्होंने सिंह शब्द शक्ति के प्रतीक रूप में अपनाया था। उनके पच प्यारे विभिन्न जातियों (जाट, खत्री, नाई, वैश्य, कुम्हार आदि) एव विभिन्न दिशाओं (लाहौर, मध्य प्रदेश, गुजरात) से और उनका कार्य क्षेत्र पटना, आनन्दपुर साहब (पजाब) एव नादेड (महाराष्ट्र था)। गुरू नानक के अनुयायी स्वय कहते हैं—नानक दुखिया सब ससार '' सब दुखा दिया दारू एक नानक तेरो नाम '' नानक नाम जहाज।

फिर केवल सिख ही उसमें चढने का हक क्यों रखते हैं? आधा जहाज अन्य धर्मावलम्बियों को भी देवें? ऐसा कर सभी डूबेंगे! लेकिन ऐसा हो रहा है। नहीं तो खालिस्तान रूपी सकीर्ण विचार क्यों उपजा? इसे आकार देना है तो गुरु गोविन्द सिंह के पटना साहिब और नादेड महाराष्ट्र को पीछे क्यों छोडा?

गुरुओं की पवित्र वाणियों में धन्ना जाट, फरीद फकीर, रैदास चमार और कबीर के माध्यम से मानवता का सन्देश मातृभूमि के मनुष्य मात्र तक पहुँचाने का प्रयास किया गया है। उस धारा को भाषा और मजहब के कृत्रिम बैरियरों से अवरुद्ध किया जा रहा है तभी तो गुरु देव चौहान की कलम से मातृभूमि का दर्द प्रकट होता है—

आज की भयभीत हवा पूछती है,
खून का मजहब क्या है?
और कौनसी बोली भाषा
खून तो हमेशा खून होता है
न हिन्दू होता है न सिख

× × ×

तुम मेरा शरीर बेचलो
मेरे पर्वत, दरिया, गेहूँ सब कुछ
लेकिन मेरी आत्मा को कुन्दों से मत बिन्धो
मेरे बच्चो'......

"...धरती का कोई धर्म नही होता,
किस ईश्वर के लिए तुम मेरा गला काट रहे हो
× × ×
जोमा को माँ न कहे, वह बिन छाया रह जायेगा।
धूप पराई झेल-झेल कर खुद एक दिन मुरझायेगा।।

माँ के अनादर की त्रासदी कहने वाली कवि की ये पंक्तियाँ हमे अन्धकार और विनाश के रास्ते पर जाने से रोकती हैं, आग्रह करती हैं, कि स्वामी केशवानन्द का वह प्रयत्न, वह भावना सिख इतिहास- गुरुमत दर्शन का प्रकाशन हरिमन्दिर के स्वर्ण पत्रों के समारोह का जोश और सन्त श्री अकाल बोले सो निहाल का गुंजायमान वातावरण फिर से तैयार करें।

नामधारी एवं स्वामी केशवानन्द

17 अप्रैल 1963 को नामधारी सम्प्रदाय के गुरू सन्त महाराज जगजीत सिंह जी अपनी शिष्य मण्डली सहित स्वामी जी के अतिथ्य में संगरिया पधारे स्वामी जी नामधारियो के अतिप्रशसक थे। अत बदले में उस सम्प्रदाय ने स्वामी जी के ग्रामोत्थान विद्यापीठ रूपी शिक्षा यज्ञ में हर सम्भव सहयोग दिया।

दस हजार श्वेत वस्त्रधारियों के मध्य नामधारी गुरू ने स्वामी जी का परिचय सच्चे साधु के रूप में किया, एवं स्वामी जी ने इस सम्प्रदाय की राष्ट्रीय सेवाओं का उल्लेख करते हुए कहा—

"... कूका आन्दोलन को कौन नही जानता किस तरह उस छोटे बच्चे ने जब तोप उड़ाने का समय आया तो अंग्रेज मेम ने उसे माफी देने के लिए कहा—जब बच्चे को पता लगा (माफी देने की चर्चा का) तो वह चार ईंट अपने पैरो के नीचे रखकर तोप के मुंह के बराबर खड़ा हो गया उसे तोप के गोले ने एक आवाज के साथ आकाश मे मिला दिया। ... गो सेवा और गो भक्ति के लिए नामधारी हमेशा याद रहेगे। हमारे कृषि महाविद्यालय मे नामधारियो के डेरे से पशु आये हैं, सात्विक जीवन मास मदिरा से दूर परिश्रम करके खाना" .....

जैन धर्म और स्वामी केशवानन्द

1959 मे जैन धर्म के प्रमुख गुरू आचार्य तुलसी स्वामी जी के मानव धर्म यज्ञ मे शामिल होने संगरिया पधारें तीन दिन तक अणुव्रत आन्दोलन पर प्रवचन दिया। आचार्य तुलसी ने स्वामी जी की सृजनात्मकता को देखकर कहा था—"स्वामी जी को देखता हूँ तो सम्पूर्ण सस्था दिखाई देने लग जाती है। स्वामी जी ओझल हो जाते हैं। जब इस विशाल सस्था को देखता हूँ, तो धीरे-धीरे सस्था दिखाई देनी बन्द हो जाती है और स्वामी जी दिखाई पड़ने लग जाते हैं।"

महान ऋषि के दो शब्दो का जवाब स्वामी जी ने उन्ही के धर्म के सम्बन्ध में गूढ़ तत्वो का विवेचन कर दिया। लगता था मानो कोई जैन साधु प्रवचन दे रहा हो।

12

यश का दानी

राम की अयोध्या, कृष्ण की मथुरा, मोहम्मद का मदीना, ईसा का बथलेहम, मानव इतिहास के मील के पत्थर हैं। ये आदि पुरुष धर्म पर्वतक हुए इनकी अमृत वाणियाँ वर्तमान ही नहीं भूत और भविष्य में मानव कल्याणार्थ दी। महात्मा बुद्ध महावीर, सुकरात, कबीर, चैतन्य नामदेव, नानक और गुरु जम्भेश्वर ने उन महापुरुषों की वाणियों को विकृत करने वाली प्रवृतियों से संघर्ष-रत रहकर, पवित्र समाज की पुर्न संरचना का ऐतिहासिक सद्कर्म किया।

19 वीं शताब्दी की संध्या में वीरमा रूपी महान सन्त स्वामी केशवानन्द महा मरुस्थल के अथाह बालू ढेर से मंगलूणा नामक स्थान पर प्रकट हुये। जिन्होंने कराहती हुई मानवीयता को शताब्दी की संध्या तक राह दिखाकर पूर्व सन्तों की परम्परा का निर्वाह किया।

जो भी उस महान विभूति के सम्पर्क में आया, उनके चमत्कारिक व्यक्तित्व से आलोकित हुए बिना न रहा।

अबोहर का सन्त स्वामी केशवानन्द निष्काम योगी कर्मठ सन्यासी, एक ऋषि आत्मा, कर्मयोग का महान् साधक, एक सफल भिक्षु और सच्चा साधु जो एक साथ सिखों का धर्म गुरु, पठानों का साईं, बौद्धों का लामा, जैन धर्म का साधक ग्रामीणों का आराध्य और हिन्दू संस्कृति का रखवाला था।

मानव धर्म को मानने वाला राष्ट्र भक्त केशवानन्द न केवल स्वतन्त्रता संग्राम का एक कर्मठ सिपाही था, बल्कि अपने राष्ट्र समर्पित जीवन और आदर्श राजनीतिज्ञ की छवि के कारण तत्कालीन समाज का प्रजापति मान लिया गया था।

मरु-भूमि के प्रकाश स्तम्भ स्वामी केशवानन्द जी महाराज ने अंधेरे में शिक्षा की ज्योति जलाकर मरुभूमि में साहित्य उपवन लगाया, जहाँ कभी लिखा हुआ पन्ना नहीं मिलता था, वहाँ साहित्य के प्रति प्रेम की धारा बहाई, वह शिक्षा शास्त्री, कला मर्मज्ञ, प्रकृति प्रेमी, मरु-भूमि का शैक्षिक देवदूत, एक अमर शिक्षा सन्त था।

कुरीतियो के खिलाफ सघर्ष करने वाला स्वामी केशवानन्द नवजीवन दाता दलितोद्धारक, छुआछूत का निवारक नशा रूपी दानवो का विनाशक, त्याग मूर्ति, पर दुख कातर निष्कर्म सेवक दीन बन्धु बहुजन हिताय की महान् भावना वाला महान् समाज सुधारक था।

युग पुरुष स्वामी केशवानन्द का विराट व्यक्तित्व था, साम्प्रदायिक, सद्भाव, प्रेरण स्रोत, स्वाभाविक शिल्पी, पैगम्बरे तालीम नवीन रूढी रहित समाज का रचियता, दृष्टा और सृष्टा दोनो था। वह विद्वानो का विचार और कवियों की कल्पना था।

कहा गया है इतिहास विजेताओ का लिखा जाता है, लेकिन वह तो महान विजेता था ? कीर्ति उनकी होती है, जो अपने शरीर को मोमबत्ती की तरह स्वय जलकर औरो को प्रकाश देने में तिल-तिल जला दे। वह तो अन्तिम क्षण तक ऐसा करता रहा। आदर्श वे होते हैं जिनके बताये रास्ते पर चलकर जमाना अपने कल्याण का सामान जुटा लेता है, तो उसके हर आदर्श कल्याणकारी रास्तो की ओर सकेत थे। पूजे वह जाते है देवतुल्य देदीप्यमान खूबियाँ हो, तो उनके सरल सचरित्र, मान सरोवर सी पवित्रता लिए विचार, हिमालय सी ऊँचाइयाँ लिए आदर्श, चमत्कारी कार्य क्या पूजा योग्य सम्मान नही जुटा पाये ? फिर वह कौन-सी परिस्थितियाँ, मजबूरियाँ या सोचे समझे षडयन्त्र रहे हैं जिनके तहत स्वामी केशवानन्द जैसी महान विभूति का नाम भारतीय इतिहास के किसी पन्ने, किसी फाइल किसी चौराहे की मूर्ति, किसी डाक टिकट का मजमून, और सग्रहालयो की कतार का फोटो नही बन सका। शायद इस षडयन्त्र का रचनात्मक जबाब दिया था।

स्वामी जी ने अपनी तस्वीर पश्चिम मे सुलेमान उत्तर और पूर्व मे हिमालय एव दक्षिण मे अरावली पर्वत के सुदृढ फ्रेम में लगा दी।

तत्कालीन वाया मिडिया और पाँच सितारा लेखको की दृष्टि शायद महानगरो एव भारत के अखबारी कर्णधारों पर टिकी थी, वे क्यो नाहक बीयाबानो में तिल तिल कुर्बान होते भारत माँ के लालो को ढूढने, फिर सिलसिला चला क्रातिकारियो एव राष्ट्र भक्तो को इतिहास के स्वर्णिम पन्नो पर अमर करने का, यहाँ भी सफलता उन्हे मिली जिनके वशजो ने विधान सभाओ और ससद के दरवाजे तक पहुँचने में सफलता हासिल की। उन्होने अपने पूर्वजो का मनमाना इतिहास लिखाया तथा ताम्रपत्र गडवाये, यह सब ईमानदार इतिहासकारो की लेखनी करती तो, सन्तोष की बात थी, लेकिन विम्रसिता में डूबे, जमाने की सरचना अपनी अपनी लेखनी को मानने वाले, वे तथा कथित इतिहासकार अपने आकाओ को खुश करने के लिए भारत मा के करोडो लालो को भूल गये। जिन्होने आज के विशाल स्वतन्त्र भारत रूपी भवन की नीव भरी थी। तभी तो घोर स्वतन्त्रतावादी

राजा महेन्द्र प्रताप की दुखी कलम कह गयी थी "कि गांधीवाद ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के अनेक पहलुओं पर आवरण डाल दिया।" स्वामी जी दिनकर की वाणी में वह उपेक्षित पात्र हो गये—

"मैं उनका आदर्श, कहीं जो व्यथा न खोल सकेंगे,
पूछेगा जग किन्तु पिता का नाम न बोल सकेंगे।
जिनका निखिल विश्व में कोई कहीं अपना न होगा॥"

स्वामी जी को कई मोर्चों पर साथ लड़ना पड़ा था। अंग्रेज तो स्वामी जी सहित सम्पूर्ण भारतीयों के दुश्मन थे, सामन्त उनको भी भला कहलवाने को ठाने हुए थे। राजस्थान को स्वतन्त्र प्रशासन में आज भी सामन्तों का खौफ है, जो किसी जिन्दा सामन्त के नाम पर सार्वजनिक रास्ता, भवनों कार्यक्रमों का नामकरण कर सकता है, लेकिन वे जो रास्ते बना गये, उनको भुला देने की विवशता या सोची समझी चाल की परम्परा स्वत. निभा रहा है। नहीं तो फिर क्या कारण है कि सरकार इस महान् शिक्षा सन्त की स्मृति में आंसू बहाना, आयोजन करना और स्मृति डाक टिकट जारी करना तो दूर, उसकी रचना जो समाज और आने वाली सन्तानों के लिए धरोहर है, ■ साथ सौतेला व्यवहार करती है।

लेकिन महानता को नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता, लोगों के दिलों में स्थान है, उसे भुलाया नहीं जा सकता और स्वामी जी के इतिहास को अनदेखी नहीं की जा सकती। उन्होंने जो बालू रेत के टीलों पर अमर इतिहास अंकित कर दिया उसे प्रशासन की क्या शक्ति है कि वह उसे मिटा दे?

स्वामी जी सदा प्रचार तन्त्र और गाजे बाजे द्वारा अपने कार्यों के प्रचार प्रसार से दूर रहे, या कभी मिडिया उनके पास नहीं आया लेकिन यह सत्य है कि ईमानदारीपूर्वक विश्लेषण जो होना चाहिये था, नहीं हुआ इस सम्बन्ध में प्रसिद्ध साहित्यकार उपेन्द्र नाथ अश्क 20-11-1957 में अपनी भावना प्रकट कर गये थे 'ऐसे भी लोग होते हैं जो बहुत शोर मचाते हैं, समाचार पत्रों में अपने कल्पित काम का ढिंढोरा पीटते हैं, पर करते कुछ नहीं और ऐसे भी होते हैं जो न तो शोर मचाते हैं, न अपने कार्यों की मुनादी करते हैं, पर काम खूब करते हैं और उनका काम ही उनके परिश्रम, उनकी निष्ठा, उनकी कर्तव्यपरायणता की घोषणा करता है साहित्य सदन अबोहर मुझे ऐसे लोगों के अदम्य उत्साह और मूक सेवा का परिणाम दिखाई देता है।

अश्क की नजरों से इस महान् कर्म-योगी का राष्ट्र समर्पित कार्य बुद्धि जीवियों के केन्द्र लाहौर में बैठकर भी न छुप सका समकालीन प्रसिद्ध विचारक एव भारतीय संस्कृति के पुजारी श्री बालगोविन्द तिवारी, निदेशक राजस्थान राज्य शिक्षा संस्थान उदयपुर की पारखी दृष्टि में स्वामी जी की शैक्षिक सेवायें अविस्मरणीय इतिहास है।

What ?

Why ?

How

ABOUT

Gramotthan

Vidyapeeth

Sangar

कृषि महा विद्याल
ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरि
[राजस्थान]

। विद्यापीठ, संगरिया।
कालेज की स्थापना

प्रशस्ति गीत

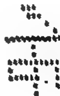


रजत-जयन्ती

AN INTRODUCTION

TO

ITTHAN VIDYAPEETH
SANGARIA (Rajasthan)





"स्वामी केशवानन्द इज ऑनहिज एज्यूकेशन मिशन"

भारत की प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्रो मे यदि स्वामी केशवानन्द का नाम नही आता है तो शिक्षा का इतिहास अधूरा रह जायेगा। परतन्त्रता के युग मे जिसन मरुभूमि मे सैकडो प्राथमिक विद्यालय खोले- जहाँ रेल तो दूर रास्ते तक नही थे, दिशाओ से चलना होता था, भयकर आँधियो मे जो शिक्षा गीत गाता फिरता रहा, दुख है कि प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र मे आज इनकी सेवाओ का उल्लेख तक का किसी ने कष्ट नही किया, कारण स्पष्ट है कि वह स्वय प्रचार की दुनिया से दूर रहे। प्रौढ शिक्षा के शिविरो का आयोजन करना, स्वय पढाना, मुफ्त पुस्तकें वितरण करना चलता फिरता पुस्तकालय चालू करना, निश्चय ही दृढ धारणा के साथ स्पष्ट भविष्य की योजना का परिचायक है। स्वामी जी ने जितना कार्य किया है उससे आधा भी प्रचार होता तो निश्चय ही स्वामी जी प्रौढ शिक्षा एवं प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र मे इतिहास के साथ जुड गये होते।"

एक प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री भी समाज को अपनी कलम मे स्वामी जी की उपेक्षा करने पर उलाहना देता है। वह समय भी आया जब स्वतन्त्र सरकार को भी इस भूल का अहसास हुआ। राजस्थान के प्रसिद्ध राजनेता स्व श्री मोहनलाल सुखाडिया ने 28 जून 1955 मे कहा था —

" "स्वामी जी आजकल की दुनियाँ मे जो प्रचार आदि की परम्परा है उससे दूर रहकर ठोस कार्य करने में विश्वास रखते हैं। वह बहुत ही सादगी के साथ साधु जीवन व्यतीत करते हैं "" स्वामी जी न केवल सस्थाओ की प्रेरणा के प्रतीक हैं, बल्कि वे प्रेरणा के स्रोत है।"

उजाला विश्व को मिल जाये, मैं अधकार में पल लूगा
फूलो मे आवास भरले दुनियाँ, मैं शूलो पर चल लूँगा।
मेरा क्या है, जो युग मुझ को बिसरा दे।
मन्दिर के सब कलश बनें, मैं नीवो मैं ही पल लूँगा।।

स्वामी केशवानन्द, वे जो प्रेरणा के स्रोत बने, वे जो रास्ते बना गये, उन पर चलकर समाज के कर्णधार बने लोगों, उनके श्रद्धालुओ उनकी आभा से प्रकाश वान बने विद्वान, उनकी राह पर चल रहे समाज सुधारको, सभी धर्मों के अनुयाइयो की उन्हे सच्ची श्रद्धाजली यही होगी की उनकी धरोहर शैक्षिक देवालयो का खजाना खाते ही न रहें, उस थाती को आने वाली सन्तानो के लिए सजाते सवारते और बढ़ाते रह, उनके पूर्वरचित समाज में विष न फैलने देवें। यही स्वामी जी की यादगार उनका स्वर्णिम इतिहास, मानव सभ्यता के कालक्रम के चौराहों पर उनका आदमकद और युगो-युगो तक सम्मान का प्रतीक है।

13
लोक दृष्टि में स्वामी जी

मानव धर्म के प्रणेता, शिक्षा के प्रकाश स्तम्भ, अछूतोद्धारक, आदर्श राजनीतिज्ञ, महान् समाज सेवी श्रद्धेय स्वामी केशवानन्द जी कोई देवता नहीं बल्कि एक अति सामान्य आदमी की तरह, आदमी के लिए सर्वोत्कृष्ट कार्य कर गये। वे सामान्य साधुओं की तरह विचार रखते तो उनके पास फाजिल्का उदासी पंथ की गुरु गद्दी साधनों का भण्डार था, तो उन्होंने अपनी राज्य सभा की सदस्यता के दौरान ही लाखों पाये थे। साधुओं की तरह धूनी रमाते या जंगलों में भगवान् की तलाश करते लेकिन उनके विचार बड़े साफ थे, उनका ध्येय बड़ा सरल और दिखाई देने वाला था। वे कहा करते थे, "मैं इस संसार में केवल एक बार ही आया हूं, यदि कोई अच्छा काम कर सकूं तो वह मुझे अभी कर लेना चाहिए और न आगे के लिए इसे स्थगित हो करना है, क्योंकि मुझे इस रूप में दुबारा नहीं आना है"

मानव मात्र की सेवा करने वाले स्वामी केशवानन्द जन-जन के आराध्य थे, और रहेंगे। समय-समय पर स्वामी जी एवं उनके कार्यों के सम्बन्ध में हार्दिक अभिव्यक्तियां विद्यापीठ में रखी दर्शन पत्रिका, पत्र पत्रिकायें संस्मरणों, भाषणों, लेखों आदि में बिखरी पड़ी हैं। लेखक द्वारा उनके संकलन का प्रस्तुतीकरण अप्रासंगिक न होगा। मूल शब्द अभिव्यक्ता के ही हैं, स्थानाभाव के कारण संक्षिप्तीकरण अवश्य किया गया है।

"अरे यह तो दूसरा केशवानन्द है"……

महात्मा हीरानन्द जी

1905 अवधूत [कुम्भ मेला] प्रयाग

"यह कहता है कि चाहे मुझे कितने ही जन्म लेने पड़ें मैं अंग्रेजों को भारत से निकाल कर ही छोड़ूंगा।"……

स्वामी जी की डायरी में लिखी पंक्तियों

1921 का अर्थ जिसके आधार पर अंग्रेज

सी० आई० डी० अधिकारी

ने स्वामीजी को सजा

दिलाई

'स्वामीजी आप जैसा कैदी मैंने नही देखा, आप जेल के सारे कानून कायदे मानते हैं फिर रद्दी क्लास की कोठरी मे जाने के लिए क्यो कहते हैं'''

जेलर

1930 ओल्ड मुल्तान जेल

"मैं जो भाषण तुलसी जयन्ती के लिए लिख ले गया था, उसमे मैंने बहुत सकोच के साथ जो दो चार पंक्तियाँ सदन के लिए लिखी थी वहाँ जाकर मैंने अनुभव किया कि वे बहुत कम थी। उसे साहित्य का हरा-भरा पौधा कहना, पजाब प्रान्त के लिए उसे हिन्दी व साहित्य का श्रद्धा, विश्वास एव सच्चाई के साथ किये जाने वाले त्याग, तपस्या एव साधना का प्रतीक समझना सस्था का पूर्ण वर्णन नही है। हिन्दी प्रेमियो के लिए उसे तीर्थ कह कर हिन्दी एव साहित्य की आराधना मे लगे हुए तपस्वियो की उसे तपोभूमि कहना भी, पूर्ण वर्णन नही हैं''' उसका यथार्थ और पूर्ण वर्णन हो नहीं सकता।"सत्यदेवजी विद्यालकार

"यह एक रमणीक स्थान है इसको देखकर चित्त बहुत प्रसन्न होता है। कोई भी व्यक्ति एक सस्था के पीछे अपना चित्त लगाकर प्रयास करते हुए क्या कर सकता है यह इस संस्था को देखकर मालूम होता है''

9.10 1935 सरदार वल्लभभाई पटेल

अंग्रेजी दैनिक "ट्रिब्यून" ने स्वामी जी की रचना साहित्य सदन अबोहर को रेगिस्तान का नन्दनवन लिखा। राणा जंग बहादुर "मैं इसे देखकर मुग्ध हो गया हूँ। जी करता है यही रह जाऊँ। मैंने यहाँ इस ज्ञान गगा के तट पर अनेक जिज्ञासुओं को प्यास बुझाने के लिए" आते देखा है' '''। साहित्य सदन अबोहर अपने नगर का अभिमान, अपने मानको का आभूषण और इसके संस्थापक श्री स्वामी केशवानन्द जी के उच्च भावो की जीवित प्रतिकृति है।

विद्याधर शास्त्री

मैंने समरिया स्कूल को दिन भर वहाँ रहकर देखा और देखकर प्रसन्नता हुई श्री केशवानन्द जी महाराज की अनेक सत् प्रवृतियो में से यह एक है।

देव शर्मा
आचार्य गुरुकुल कागडी

"यह सदन नवयुवको का आराध्य देव, जनता का देव मन्दिर, अबोहर का अभिमान पजाब का गौरव, राष्ट्र भाषा का प्रताप एव तपोभूमि स्वामी केशवानन्द जी के विचारो की साक्षात मूर्ति है ''

19.7.1932 ब्रह्मदत्त शास्त्री

'सुदूर पजाब प्रान्त में हिन्दी की ऐसी सुदर और उपकारिणी सस्था (साहित्यसदन) कायम करना स्वामी केशवानन्द जी जैसे सन्यासी का ही काम था'''

प्रो० बाबूराम सक्सेना
प्रधानमन्त्री हिन्दी साहित्य
सम्मेलन प्रयाग प्रो० प्रयाग विश्व विद्यालय

23.9.1938

"... इस भावना एवं समस्त कार्य का श्रेय प्रबन्ध समिति एवं साधु केशवानन्द को है ..."

बी० ए० इंगलिश
30-10-1935 निदेशक शिक्षा विभाग
बीकानेर राज्य

मुझे स्वच्छ हवादार और सुव्यवस्थित इमारतें देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मुझे स्कूल का सारा वातावरण बड़ा पवित्र प्रतीत हुआ। विद्यार्थियों के लिए सभी आधुनिक खेलों का प्रबन्ध है '

किशनदास चोपड़ा
26-2-1936 नाजिम सूरतगढ़

मुझे जाट एंग्लो संस्कृत स्कूल का निरीक्षण करने के लिए कृपापूर्वक निमन्त्रित किया गया। स्वामी जी के आदेश से व्यायाम शिक्षकमहोदय ने कई ऐसे मनोरंजक खेलों का प्रदर्शन करवाया जैसे कि मैंने केवल कलकत्ता, तथा लखनऊ, इलाहाबाद आदि बड़े स्थानों में देखा जहाँ की जनता बहुत उन्नत है।

बी० बागची
28-7-37 इन्सपेक्टर गर्ल्स स्कूल
बीकानेर स्टेट

मैंने आज जाट स्कूल का निरीक्षण किया... यह पुस्तकालय बीकानेर राज्य के मिडिल स्कूलों के श्रेष्ठतम पुस्तकालयों में अपना अच्छा स्थान रखता है " यदि भविष्य में जारी रहा तो यह स्वयम् एक संस्था होगी।

तेज सिंह
23-3 38 पुस्तकालयाध्यक्ष
बीकानेर स्टेट

'इस पुस्तकालय के साथ एक चलता फिरता पुस्तकालय भी है जो कि गाँव गाँव में ले जाया जाता है, वास्तविक शिक्षा प्रसार का यही सर्वश्रेष्ठ साधन है'।

25-7-36 डा० गोपीचन्द भार्गव

इसमें कोई सन्देह नहीं कि उत्तर भारत की उन सभी संस्थाओं में, जिन्होंने माता राष्ट्रवाणी की सेवा का व्रत लिया है, साहित्य सदन अबोहर सर्वश्रेष्ठ संस्था है।

ठा० देशराज
2 6-37 *प्रसिद्ध इतिहासकार एवं*
स्वतन्त्रता सेनानी

साहित्य सदन केवल पुस्तकालय ही नहीं है अपितु एक अच्छी संस्था हो गई है इसका भविष्य उज्ज्वल है... इस संस्था का सम्बन्ध प्रयाग के हिन्दी साहित्य

सम्मेलन से है और यथा विधि समस्त सम्पत्ति की रजिस्ट्री भी हो गई है। इस सस्था द्वारा इस प्रदेश में राष्ट्रभाषा का प्रचार तथा प्रसार समुचित रूप से हो रहा है''''

नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ
बाबा राघवदास, वेदव्रत शास्त्री
प्रभूदयाल हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

"इस प्रान्त के लिए इस सस्था का वही उपयोग है, जो मरुस्थल के लिए एक सुन्दर नदी का''''

वेद दर्शनाचार्य स्वामी गंगेश्वरानन्द
मण्डलेश्वर

'''''इस अशिक्षित कृषक प्रान्त के लिए यह सदन जीवन दान दे रहा है।'''

तर्कवाचस्पति श्रीजगदेव शास्त्री
सिद्धान्त भूषण मुख्याधिष्ठाता
आर्य महाविद्यालय, किरठल, मेरठ

"पुस्तकालय जैसा है वह मेरे लिए पजाब प्रान्त मे देखने की पहली सस्था है'' "

रघुनाथ प्रसाद
हैड इन्सपैक्टर बर्मा शैल आयल
कम्पनी लाहौर

"साहित्य सदन का वाचनालय, पुस्तकालय, व्यायामशाला आदि उपयोगी उद्यम सराहनीय ही नही प्रत्युत अनुसरणीय है'

रविदत्त धनीराम दीक्षित
प्रिंसीपल
शिक्षा विभाग ब्रिटिश ईस्ट
अफ्रीका

छात्रावास का प्रबन्ध हृदयग्राही है, और स्थान का वातावरण बहुत ही रमणीक है।

एम० एन० मुलानी
4-10-39 निदेशक शिक्षा विभाग बीकानेर
राज्य

''''मुझे यह लिखने मे बहुत प्रसन्नता होती है कि यह स्कूल बीकानेर राज्य के श्रेष्ठतम स्कूलो मे अपना अच्छा स्थान रखता है।

वजीर उल दौला, रायबहादुर
सर एस० एम० बापना
31-3-40 प्राइमिनिस्टर बीकानेर राज्य

इस स्कूल का निरीक्षण करके मुझे विशेष प्रसन्नता हुई। मेरा अनुमान है कि इसकी इमारतो पर ही सत्तर हजार रुपया व्यय हुआ है इस सब धन के संग्रह करने का श्रेय स्वामी केशवानन्द जी को ही है।

जे० अटस
3-1-41 चीफ कमिश्नर, गंगानगर

स्वामी केशवानन्द जी मे त्याग, तपस्या, बलिदान, कष्ट, सहन, लग्न, धुन और मेहनत आदि सारे ही गुण न मालूम कहाँ से और कैसे इकट्ठे होकर आ गये हैं। साहस, सरलता, मिलनसारिता और नम्रता आदि उनके स्वभाव में दूध पानी की तरह एक हो गये हैं।

1941 सत्यदेव विद्यालंकार

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन, के अबोहर अधिवेशन के सफल आयोजन के लिए स्वामी जी को बधाई—

प० अमरनाथ झा
डॉ० सम्पूर्णानन्द जी, पुरुषोत्तमदास
टण्डन, भगवती प्रसाद जी बाजपेई,
डॉ० रामनारायण, सत्यदेव विद्यालंकार एवं
निराला।

बीकानेर राज्य मे यह सर्वप्रथम विद्यालय है जिसमे प्राच्य और पाश्चात्य विद्या का मिश्रण है तथा निःशुल्क शिक्षा दी जाती है।

हनुमान प्रसाद
25-5-41 एम० आर० संस्कृत कालेज
रामगढ (शेखावाटी) जयपुर राज्य

"यहाँ के सुप्रबन्ध और धार्मिक वातावरण से मैं आश्चर्य चकित हुआ। मैं नहीं समझता था कि श्री स्वामी केशवानन्द जी रेगिस्तान मे ऐसे सुन्दर भवन बनवायेंगे और अपने उज्ज्वल चरित्र की छाप यहाँ भी डाल देंगे।

?-8-1941 राम नारायण मिश्र
भूगोल कार्यालय इलाहाबाद

यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि आत्मभाषा की शिक्षा देने वाले विद्यालयों मे यह संस्था सर्वोत्कृष्ट है।

रघुवीर सिंह शास्त्री
19 8-41 आचार्य आर्य महा विद्यालय किरठल
मेरठ

"...संस्था अति महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए सेवारत है... इस क्षेत्र की जनता एव बीकानेर रियासत के लिए गौरव का विषय है"

सर छोटूराम
13.9.1942 रेवन्यू मिनिस्टर, पंजाब

''स्वामी जी जिस मनोयोग से गोवश पत्र पढते हैं, वह ध्यान अन्य लोगों मे नहीं पाया। उत्तम गाय के लक्षण पशु निरीक्षणों से अधिक स्वामी जी जानते हैं'

महात्मा हरदेव सहाय
1942 गौ सेवा सघ कार्यालय, दिल्ली

''ग्रामीण जनता में जागृति के हेतु अबोहर साहित्य सदन के प्रसिद्ध शिक्षा प्रेमी स्वामी केशवानन्द जी महाराज ने एक तीन वर्षीय शिक्षा योजना बनाई है, जिसके अनुसार रियासती देहातों मे सर्वप्रथम 100 ग्राम पाठशालायें खोली जायेंगी '' 'सभी लोगो ने मुक्त कण्ठ से स्वीकार कर निश्चय किया है कि मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के तत्वाधान मे यह सत्कार्य शीघ्र प्रारम्भ कर दिया जाये।

मंत्री
12-1-46 रामकृष्ण बागड़ी
मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी
कलकत्ता

"सस्था की सर्वांगीण प्रगति का पूर्ण श्रेय इसके सचालक श्री स्वामी केशवानन्द जी को है। यह उन्हीं के अथक परिश्रम का सुन्दर फल है, कि मरुस्थल के इस कोने मे सरस्वती का यह मन्दिर फल फूल रहा है ...ऐसी सस्था को सम्पूर्ण सहयोग देना प्रत्येक देश भक्त का कर्तव्य है।

खुशालचन्द डागा
28-3-1948 वित्त मन्त्री बीकानेर

पूज्य स्वामी जी महाराज के त्याग और तपस्या से आज दिन दिन यह सस्था प्रात काल के सूर्य की भाँति ऊँची उठती जा रही है ...

28-3-1948 कुम्भाराम आर्य
माल मन्त्री बीकानेर

सस्था वर्तमान मे अपने साथ 75 हिन्दी पाठशालाओं को लिए हुए है। इसकी वृद्धि के लिए श्री स्वामी जी का जीवन निरन्तर लगा है।

घासीराम वर्मा
1949 मेम्बर आल इण्डिया कांग्रेस

यह सस्था स्वामी केशवानन्द जी के कर्मठ जीवन से बढकर इस रूप मे आई है, मरुभूमि के गांवो मे शिक्षा प्रसार के लिए इस सस्था ने जो महान् कार्य किया है, उसकी ओर देशवासियो का ध्यान जाना चाहिए बागड प्रदेश के लिए यह नया मार्ग दिखाती है और आशा का एक सदेश देती है।

14-9-1949

वासुदेव शरण अग्रवाल
अध्यक्ष पुरातत्व विभाग
भारत सरकार

स्वामी केशवानन्द जी और सगरिया विद्यापीठ दोनों ही अद्भुत और शानदार हैं। मुझे यहाँ की सफलता पर आश्चर्य होता है। मैं इस सस्था की कुछ सेवा करके कृतज्ञता का अनुभव करूँगा।

3 1-1950

ज्ञानी करतार सिंह
माल मन्त्री पजाब

' विद्या पीठ के विषय मे अपनी राय क्या दूँ। आपके पुरुषार्थ का वह अनुकरणीय और स्पृहणीय उदाहरण है "

28-11-1950

काशीनाथ त्रिवेदी
शिक्षा मन्त्री मध्य भारत

मैंने सगरिया विद्यापीठ देखा काम देखकर बडी प्रसन्नता हुई।

मदन मोहन
अध्यक्ष शिक्षा विभाग
राजस्थान

20-1 1951

पं मदन मोहन मालवीय की हिन्दू यूनिवर्सिटी, रवीन्द्र नाथ ठाकुर के शान्ति निकेतन तथा स्वामी श्रद्धानन्द के गुरुकुल कांगड़ी की तरह सगरिया का ग्रामोत्थान विद्यापीठ भी देश की शिक्षण सस्थाओं मे एक विशेष महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

19-9 1951

छबील दास
प्राचार्य नेशनल कालेज
लाहौर

मुझे तो यही खुशी है, पार्लियामेन्ट मे एक लम्बी दाढी तो और होगी।

1952

पुरुषोत्तम दास टण्डन
स्वामी जी के ससद सदस्य बनने पर

हम ससद सदस्य ता० 13 9-53 के प्रात काल विद्यापीठ सगरिया जिला श्री गगानगर जो कि जिला हिसार से एक फलांग तथा जिला फीरोजपुर की सीमा पर स्थित है, की यात्रा के लिए पहुँचे जिसकी चर्चा बहुत दिनों से सुन रहे थे '

यह सस्था गत 36 वर्ष से स्थापित है जबकि इस प्रान्त मे घोर सुविधा तथा अ धकार का साम्राज्य था " इसकी शाही इमारतो, प्रदर्शनी (म्यूजियम) और लाइब्रेरी को देखने पर तो व्यक्ति भूल जाता है कि वह राजस्थान के मरुस्थल मे बैठा है अथवा किसी राजधानी मे ।

इस सस्था ने जहाँ साक्षरता फैलाने और शिक्षा मे प्रगति की है, वहाँ उद्योग धन्धों को भी भुलाया नहीं है ---

यदि सस्था के अब तक के प्रयत्नो और व्यय को देखा जाये तो सहज मे ही यह अनुमान हो जाता है कि सस्था अब तक कम से कम 15 लाख रुपया व्यय कर चुकी है ·

देश की बडी से बडी शिक्षा सस्थाओ को ज्ञान सम्वर्द्धन और स्वावलम्बन की जिस साधन सामग्रियो की आवश्यकता होती है व इस सस्था मे आज के दिन वर्तमान हैं।

हम लोग जिनका कि एक मात्र कारण सस्था का दर्शन करना था । अनुभव किया कि भारत सरकार और राजस्थान सरकार को इसे 5 वर्षीय योजना अथवा दूसरी किसी सहायता मे अवश्य रखना था ।

हम अन्त मे केवल इतना ही निवेदन करते हैं कि सस्था की प्रवृतियो, इसकी उपयोगिता एव नवीन प्रवृत्तियो के सचालन हेतु पर्याप्त सहायता प्रदान की जावे ।

चौदह सासदों का प्रतिनिधि मण्डल

°1 सितम्बर 1953 ससद भवन नई दिल्ली

सस्था के सचालक बधाई के पात्र हैं । इसको वर्तमान रूप देने मे स्वामी केशवानन्द जी को श्रेय है उन्होने इसकी एक-एक ईट खडी की है और वही इसके स्तम्भ हैं

लाल बहादुर शास्त्री

1 जनवरी 1953 रेल मन्त्री भारत सरकार

यहाँ एक अच्छा खासा ग्राम विश्व विद्यालय बनाने के सब साधन मौजूद हैं यह सब स्वामी केशवानन्द जी के तप का फल है ।

रामेश्वरी नेहरु

7-2-1953

यदि सरकारी सहायता तथा सामाजिक उदारता दोनों का सहयोग इस विद्यालय को मिल सका तो यह भारत ही नही ससार का एक श्रेष्ठ एव दर्शनीय स्थान बन सकेगा ।

सावत्री निगम
गगा भवन आहिदगज
लखनऊ

16 8-1953

मैं अवश्य कहूँगा, कि यह संस्था आश्चर्यजनक है, यह वातावरण जीवन और उच्च विचार की कहावत को चारितार्थ करता है।

23-4-54　　　　एच डी प्रधान

आवास मन्त्री

23-11 54　　　　राजस्थान सरकार

यह अपने तरह की विशेष संस्था है, विशेषता यह एक अकेले व्यक्ति का कार्य है"' ' वह आश्चर्य जनक व्यक्ति हैं, स्वामी केशवानन्द

10-4-1955　　　　कुँजरू

कमिश्नर बीकानेर

हम संयोग से आये। ' हम बार बार आने का अवसर ढूंढेंगे।

1 एम लाल आई सी एस

सहायक सचिव,

खाद्य एम कृषि मन्त्रालय भारत सरकार,

2 भगवानसिंह आई ए एस चेयरमेन,

केन्द्रीय ट्रैक्टर संगठन भारत सरकार,

3 डा बी एन उप्पल कमिश्नर (कृषि)

4 डा राम चौधरी, न्यू पूसा

भारत सरकार,

"मैंने स्वामी केशवानन्द जी के आश्रम विद्यालय और संग्रहालय देखे थे, चकित रह गया, इस बीकानेर के बियाबान मे कैसे सुन्दर भवन कैसे बहुमूल्य संग्रालय और शान्ति आश्रम हैं। देखने से पहले मुझे तनिक भी यह पता न था, कि अबोहर और बीकानेर राज्य में स्वामी जी ने इतना महान् कार्य किया है, उन्होंने अद्भुत वस्तुयें और पुस्तकें एकत्रित की हैं। उनकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है।

21.9.55　　　　राजा महेन्द्र प्रताप

' स्वामी जी महाराज आचरण मे साधु, देश भक्ति मे अहिंसक, क्रांतिकारी समाज सेवक, और सुधार मे महान् पुरुष हैं।"' हर प्रकार से स्वामी जी महाराज सब लोगो के लिए आकर्षण बने हुए हैं।

कुम्भाराम आर्य

स्वास्थ और स्वायत शासन मन्त्री

राजस्थान सरकार

"' स्वामी जैसे सौ साधु अगर हमारे देश मे पैदा हो जावे तो पन्द्रह साल के बाद आज का भारत प्राचीन समय जैसे ऋषियो का सा भारत देखने को मिलेगा।

चौधरी रामचन्द्र
सार्वजनिक निर्माण मन्त्री
राजस्थान

स्वामी जी मे कार्य करने की अद्भुत शक्ति है"' उनके व्यक्तित्व मे आकर्षण हो, उसके द्वारा वे पैसे वालो तथा निर्धन परन्तु उत्साही कार्यकर्ताओ को अच्छे कामों में लगा लेते हैं। उनका महान् उपयोगी और त्यागमय जीवन हिन्दी प्रेमियो के लिए एक अमूल्य थाती है"

8-10.1955 पुरुषोत्तम दास टण्डन

"देश के समस्त साधु सम्प्रदायों को चाहिए कि स्वामी केशवानन्द जी के कार्य से शिक्षा ग्रहण कर अपने आपको देश निर्माण के कार्यों मे लगावें''''

मणी माता गोसाई
ससद सदस्या रामपुर (म प्र)

स्वामी जी ध्यान समाधी लगाने मे विश्वास नही करते। वे एक सच्चे कर्मयोगी हैं, कर्म मे विश्वास रखते हैं।''' वे वास्तव मे प्राचीन ऋषियो का नमूना हैं"

डा० गण्डासिह
निदेशक, पुरातत्व विभाग
पेप्सू

इस सस्था के कार्य देख कर आनन्द हुआ। एक भी समाज सेवक दृढ निश्चय से जो काम उठाले, वह किस प्रकार आगे बढ़ता है, उसका यह नमूना है। आशा है फिर स्वामी केशवानन्द जी की मिशाल से और भी साधुजन कार्य मे लगेंगे ' '

25-10-1955 सुशीला नैय्यर

''' इस मरुभूमि मे हरे भरे वृक्ष, भव्य भवन आदि जहाँ, आधुनिकता की चमक है वहाँ संग्रहालय तथा पुस्तकालय चमत्कार उत्पन्न करने वाले हैं। राजा महेन्द्र प्रताप से जो कुछ सुना था, उससे कहीं अधिक सुन्दर उपयोगी आकर्षक इसे पाया।

हरीसिह एम ए·
खेडी जाट रोहतक

26-4.57

"साहित्य, समाज तथा ग्रामो के उत्थान की दिशा मे स्वामी जी की सेवायें सदा ही स्वर्णाक्षरो मे लिखी रहेंगी और वे आज के और भविष्य के समाज सेवियो के लिए प्रकाश स्तम्भ प्रमाणित होगी"

20 2-57 प्रतापसिंह कैरो
मुख्य मन्त्री पजाब

वास्तव के यह दर्शनीय स्थान हैं। बहुत परिश्रम करके और बडी उदारता से व्यय करके कला के उत्कृष्ट नमूने एकत्रित किये हैं।

शेरसिंह
3-5-56 मन्त्री पजाब

"स्वामी जी को बधाई अर्पण करता हूँ क्रातिकारियो का इतिहास आप लोग लिखने में लगे हैं, बडी आवश्यकता को पूर्ति कर रहे हैं। गाधीवाद ने इतिहास पर पर्दा सा डाल दिया है श्याम जी कृष्ण बर्मा मेडमकामा, मौलवी, बरकतुल्ला, रास बिहारी बोस, सुभाष चन्द्र बोस, आजाद भगतसिंह का स्वतन्त्रता दिलाने मे बहुत बडा हाथ था। स्वामो केशवानन्द अभिनन्दन ग्रथ जो जिसका बडा भाग क्रांतिकारियों पर होगा, स्वामी जी का ऐतिहासिक कार्य साबित होगा।"

राजा महेन्द्र प्रताप
पीटर पीर, प्रताप
ससार सघ राजपुर देहरादून

अब तक मेरे देखे प्राइवेट सग्रहालयो मे यह सग्रहालय सबसे अधिक अच्छा और सुन्दर सग्रहालय है, यह स्वामी केशवानन्द जी के अधिक परिश्रम का फल है जिन्होने कि अपना जीवन इस सस्था को समर्पित कर दिया हो जिसका की यह सग्रहालय सिर्फ एक अग है

टी कुमार
कमिश्नर बीकानेर
पी० एस० कोल
कमीशनर सेटलमैन्ट

आज का दिन मेरे लिए सौभाग्य का दिन है, मुझे इतनी प्रसन्नता हुई है कि, मैं समझता हूँ कि मैंने आज अपनी जिन्दगी मे सबसे बडे तीर्थ का दर्शन किया है। स्वामी जी का कार्य महान है।

सोमदत्त कोहली
28-9-56 ए० वी० स० एन्ड एस० एम० एस०

स्थान बहुत उपयुक्त है, तथा उसमे एकत्रितत वस्तुयें वास्तव मे ऐतिहासिक एव महत्वपूर्ण हैं। शिक्षा एव देखने के लिए एक बहुत सुन्दर प्रयत्न है

कमला बेनीवाल
उपशिक्षा मन्त्री राजस्थान

ग्राम्य जीवन के बीच इस प्रकार का सग्रहालय भारत मे अन्यत्र नहीं देखा।

सगत सिंह
5-1-1956 क्यूरेटर
गगा गोल्डन जुबली म्यूजियम

आर्य समाज व सनातन धर्म के अतिरिक्त वही से (स्वामी जी के साहित्य सदन अबोहर से) इस पचनद प्रदेश मे वास्तव मे हिन्दी का श्री गणेश हुआ और यह सब स्वामी जी के अदम्य उत्साह सतत् परिश्रम और अद्भुत पुरुषार्थ का ही परिणाम है स्वामी जी ने स्वदेश भक्ति की एक अनुपम लहर और नवीन स्फूर्ति लोगों के हृदय मन्दिर मे उत्तेजित की। स्वामी जी के सदा, तपस्वी जीवन और सरल स्वभाव ने उनको जनगण मन अधिनायक बना दिया।""

चौंदी राम वर्मा
26-1-1957 पंजाब विधान सभा मण्डल

"" पिचहत्तर वर्ष की उम्र भी अपने उद्देश्य के लिए स्वामी जी की लगन उसकी पूर्ति के लिए अथक परिश्रम अपने आरम्भ और भोजन की चिन्ता न करते हुए जन समाज के लिए उनकी धुन ऐसे गुण हैं कि कोई भी उनकी सराहन किये बिना नही रह सकता।

मुकुट बिहारी वर्मा
2-12-1957 सम्पादक, दैनिक हिन्दुस्तान

मुझे आपके विद्या पीठ का सास्कृतिक सग्रहालय अत्यन्त उपयोगी लगा। इसमे अमूल्य ग्रन्थो तथा अन्य वस्तुओ का सग्रह कार्य वास्तव मे प्रशसनीय है।

1-4-1957 बारान्निकोव
सास्कृतिक मन्त्री, भारत स्थित
रूसी दूतावास

श्रीमान् स्वामी केशवानन्द जी को अभिनन्दन ग्रथ भेंट कर उनके प्रति श्रद्धा एव कृतज्ञता प्रकट करने का आपका आयोजन अवश्य ही सफल हो"

9-7-1957 मा० स० गोलवालकर
सरसघ चालक

स्वामी केशवानन्द जी एक कर्म निःस्वार्थ जन सेवक के रूप मे राजस्थान पजाब और हरियाणा प्रदेश मे परिचित हैं। दलित और उपेक्षित लोगो के प्रति उनके मन मे करुणा और सहानुभूति है""इनका चरित्र और त्याग समाज सेवी कार्यकर्ताओ के लिए एक प्रेरणा का विषय है""

जगजीवन राम
6-7-1957 रेल मन्त्री भारत सरकार

एक समय आयेगा जब हमारे युवको के सन्मुख स्वामी केशवानन्द जी का जीवन चरित्र आदर्श रूप में उपस्थित किया जायेगा।

1958 बनारसी दास चतुर्वेदी

संसद सदस्य एवं साहित्यकार

""यह भारत के सर्वोत्तम संग्रहालयों मे से एक है। भारत ऐसे ग्रामीण संग्रहालयो पर गर्व करता है। स्वामी जी सफल हो""

आचार्य विनोबा भावे

24-12-58

"" ऐसे कितने साधु भारत मे और हैं ?

1958 बहुधाया विज सेकस टी बोर

युगोस्लाविया

स्वामी जी के निमन्त्रण पर मैं आया। शहरो मे बडे-बडे कालेज, विश्व विद्यालय, संग्रहालय आदि हैं परन्तु गांवो मे ऐसा कुछ नही।" इसलिए मैं इस स्थान को विशेष रूप से देखने का इच्छुक था कि यहां क्या कुछ है जो कुछ मैंने देखा और उसे पूर्णतया सन्तोषजनक पाया। मैं स्वामी जी को इस बात की बधाई देता हूं कि इतने अच्छे काम आपके संगरिया में है"" लेकिन जो सबसे बडा काम आपको करना है, वह इस भारत को अपने कन्धे पर रख कर आगे बढना है। स्वामी जी अपने मिशन मे आगे बढें, अज्ञान है उसे दूर करें।

प० जवाहर लेहरू

प्रधानमन्त्री

भारत सरकार

स्वामी जी को देखता हूं तो सम्पूर्ण संस्था दिखाई देने लग जाती है, स्वामी जी ओझल हो जाते हैं। जब विशाल संस्था को देखता हूं तो धीरे-धीरे संस्था दिखाई देनी बन्द हो जाती है, और स्वामी जी दिखाई पड़ने लग जाते हैं।

आचार्य तुलसी

1959

पथ हीन थी, जहां सभ्यता मूक अविकसित जीवन,
शब्द शून्य ये भाव रुद्ध, प्राणो से वंचित तन-मन।
वाग्मी तूने मूक मरुस्थल, किया फिर वाचाल,
रूप रंग से पूरित कर दिया, जीर्ण-शीर्ण कंकाल॥

सूरजमल चौधरी

प्रो० एवं अध्यक्ष

राजकीय महाविद्यालय

श्री गंगानगर

जो कुछ स्वामी जी इस रेगिस्तान मे कर सके हैं, इसे देखकर मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ।

डॉ० करणीसिंह
महाराजा बीकानेर

15.1-63

प्रजातन्त्र का यह गुण है, कि उसमे जन सेवको की वजाय राजा महाराजों या समृद्धिशाली लोगो की कद्र की जाती है, स्वामी जी मरुभूमि के लिए एक ईश्वरीय देन हैं।

दौलतराम सारण
स्वायत शासन मन्त्री राजस्थान

कर्मयोग सर्वोत्तम योग है और सर्वोत्तम कर्म योगियो मे स्वामी केशवानन्द योगाभ्यास करते हुए अपनी स्वाभाविक सरलता और व्यावहारिक मौलिकता के कारण अत्यन्त मनोहर लगते हैं। न तो उन्हें बौद्धिक आतंक जमाने के लिए अपनी पीठ पर पुस्तकें लादकर चलने की आदत है और न प्लेटफार्मो पर पाडित्य बघारने की। उनकी विद्वता का उद्गम स्थान ग्रथो के अतिरिक्त अनुभव है जिसकी गहराई का अन्दाजा लगाना कठिन है, उनकी लगन का जवाब नही ' '।

राणा जंग बहादुरसिंह
भूतपूर्व सम्पादक 'ट्रिब्यून'

हम मानव हितकारी विशुद्ध निस्वार्थ, उत्साह मूर्ति, त्याग, मूर्ति विज्ञान मूर्ति पावन, शान्ति मूर्ति, उदासीन साम्प्रदायक, गौरव मूर्ति, महाराज केशवानन्द जी का देशभक्त, राष्ट्रभक्त, जनसमुदाय भक्त रूप से भारत गौरव स्वरूप हार्दिक धन्यवाद करते, परमकृपालु परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, ऐसे महानुभावो को दीर्घ जीवन प्रदान करें।

प० रत्नदेव
अखाडा ब्रह्मबूटा अमृतसर

वैदिक सस्कृति, समाज सुधार और हिन्दी के परम प्रेमी स्वामी केशवानन्द जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हुआ उनके दीर्घायु की कामना करता हूँ।

डॉ० विश्वबन्धु शास्त्री
आचार्य, विश्ववेश्वरानन्द शोध॰
सस्थान होशियारपुर

"यदि परोपकारमय जीवन का नाम साधुता है तो स्वामी केशवानन्द सच्चे साधु हैं।"" हजारो लाखो गेरुआ वस्त्र पहने"" आलस्य और अकर्मण्यता मे जीवन बिताने वाले साधु नामधारी लोगो के लिए स्वामी केशवानन्द जी जैसे साधु ज्योति स्तम्भ के समान हैं""।

सन्तराम
सम्पादक क्रांति होशियारपुर

जो मनुष्य चरवाहे से सुयोग्य शिक्षा प्रचारक बन सकता है, वह नि सन्देह अभिनन्दनीय है।

डॉ० कैलाश नाथ काटजू
मध्य प्रदेश

"सार्वजनिक कार्यों के लिये लाखों का व्यय करने वाले स्वामी जी महाराज अपने लिए एक पाई भी आवश्यकता से अधिक व्यय होती सहन नही कर सकते।

कपिलदेव शास्त्री
मन्त्री, दयानन्द मठ रोहतक

"वास्तव मे जिन आदर्शों के लिए स्वामी जी एक ऋषि जीवन जी रहे हैं, वह भारत माँ की वर्तमान तथा भावी सन्तान के लिए अनुकरणीय है पंजाब केसरी महाराजा रणजीत सिंह के पश्चात् अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर पर कई मन नया स्वर्ण जड़ाये जाने का मङ्गलमय श्री गणेश आपही के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ जो हमारी सिख जाति के लिए अत्यन्त गर्व की बात है, इसी मे सिद्ध होता है कि हिन्दू जाति के बलिष्ठ भुजा सिख सम्प्रदाय मे भी आपके लिए कितनी श्रद्धा व प्रेम है।"

ज्ञानी हरनाम सिंह बल्लभ
गुरुद्वारा रकाबगंज नई दिल्ली

"स्वामी जी का जीवन अपने लिए नही देश के लिए है

हरिश्चन्द्र मेण
सदस्य बीकानेर राज्य कौंसिल

"यदि अब हमसे कोई पूछे कि तुम किस प्रजापति की परम्परा मे.से हो तो हम बड़े गौरव के साथ कहेंगे कि हमारा वर्तमान प्रजापति तो स्वामी केशवानन्द हैं। उन्होने हमारे हृदयो मे मस्तिष्को मे, अपनी वाणी, अपनी कर्मनिष्ठा और सक्रिय सेवा से एक मोड़ दिया है। यदि वे न होते तो हम राजस्थान के आदिवासियों से कुछ ही अधिक शिक्षित या सभ्य होते ।

धन्नाराम
सरपंच भादरा

"स्वामी केशवानन्द जी लगभग आधी शताब्दी से जन सेवा और जन जागृत का कार्य कर रहे हैं"।

सरदार हरलाल सिंह
अध्यक्ष प्रादेशिक कांग्रेस कमेटी
राजस्थान

जिन मनुष्यो मे घोर अन्धकार के समय मे भी प्रकाश पाने की उतकंठा लुप्त न हो जाय, निराश की भयकर घड़ियो में भी आशा की डोर न टूटे, ससार मे वे महापुरुष कहलाते हैं। स्वामी केशवानन्द जी भी ऐसे ही एक महापुरुष हैं"

स्व० मेजर सहीराम झोरड

स्वामी जी का यों तो सारा इलाका ही ऋणी है किन्तु हम जितने ऋणी है, इतने और लोग नही। कारण कि हमारे कन्धो का बोझ (जाट विद्यालय संगरिया) जिसके भार से हम लड़खड़ा गये थे, उसे उन्होंने हमारे कन्धो से उतार कर बड़ी दृढ़ता के साथ अकेले ही अपने कन्धो पर ढोया।

जीवणराम जी कड़वासरा
स्वामी जी को जाट स्कूल का
भार सौंपने वाले सदस्यो मे से एक

' सत्तर बहत्तर वर्ष पूर्व गृह त्याग करने वाले इस स्वामी के पास न रुपया है न पैसा, न डिग्री है न डिप्लोमा जो कुछ है वह है भारतीय संस्कृति व भाषा का परिचय, अच्छा स्वास्थ्य, गीता के कर्मयोग की उत्कृष्ट भावना तथा मानव कल्याण की अदम्य लगन ।

सरदार शेरसिंह
स्वामी के विश्वसनीय कार्यकर्ता
भू० पू० प्रधानाध्यापक जाट स्कूल,
डाइरेक्टर विद्यापीठ सम्प्रति स्वामी
केशवानन्द स्मारक ट्रस्ट के परामर्शदाता

"मैंने एक चौरासी वर्षीय बूढे मे हिमालय की दृढता देखी थी, उसके बर्फ जैसे हृदय मे आग के चमचमाते गोले देखे थे, उसकी रगो मे दौड़ता हुआ फौलाद देखा था, उसकी बेतरतीब वाणी मे समुद्र की गहराई देखी थी, उसकी चाल मे आकाश की ऊँचाई देखी थी, और आज मैंने ही नही आप सबने उनही आँखो से टपकते हुए आँसू देखे।"

श्री ब्रजनारायण कौशिक भू० पू० प्राचार्य
शिक्षा महा विद्यालय
ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया
सम्प्रति-प्राचार्य सनातन धर्म
शिक्षा महा विद्यालय श्री गगानगर

"स्वामी केशवानन्द जी ने शिक्षा, समाज संशोधन और राष्ट्र निर्माण की जो पद्धतियाँ मरुभूमि म चालू की हैं, और उन्हें इस काम में जैसी सफलता मिली है, उससे वह पूर्णत युग पुरुष हैं। आज जिस काम को राष्ट्रीय सरकार बडे वेग से पूरा करना चाहती है उसे स्वामी जी ने आज से 25 वर्ष पूर्व आरम्भ कर दिया था।

नाथूराम मिर्धा
14-6-57 कृषि यातायात, निर्माण
एव वन मन्त्री राजस्थान सरकार

स्वामी जी का तप सफल हुआ। उनके हाथों से स्थापित की हुई शिक्षण संस्थायें किसी जीवित समाज के शौर्य पूर्ण प्रयत्नों का ज्वलंत प्रमाण उपस्थित कर रही हैं ?

रामनिवास मिर्धा
स्पीकर विधान सभा
राजस्थान

19-6-1957

स्वामी जी जैसे कुछ कार्यकर्ता पहाड़ी और जंगली प्रान्तों में बैठकर सेवा तथा प्रचार कार्य करें तो, ईसाई मिशनरियों द्वारा जो हिन्दू जनसंख्या की लूट हो रही है वह बहुत कुछ बन्द हो सकती है।

जुगल किशोर बिरला

अज्ञान अन्धकार को दूर करने के लिए स्वामी जी ने अपने एक हाथ में विद्या प्रचार प्रसार की मशाल उठाई और दूसरे हाथ से शताब्दियों से घोर निद्रा में सोये मानव को जगाया""

हंसराज आर्य
सदस्य विधान सभा
स्वामी जी के विश्वसनीय
कार्यकर्ता कस्तूरबा विद्या महिला
ग्रामोत्थान विद्यापीठ के संचालक।

स्वामी जी महाराज का साधु चरित्र हम युवको के लिए पूर्णतः अनुकरणीय है""।

साहबराम भादू
स्वामी जी के विश्वस्त
भू० पू० अध्यक्ष, नगरपालिका
भू० पू० डाइरेक्टर ग्रामोत्थान विद्यापीठ
संगरिया श्री गंगानगर राजस्थान

""जितना भी व्यसनों से बच सका हूँ, वह स्वामी जी के निकट सम्पर्क में आने का ही परिणाम समझता हूँ।""

शिवचरण गोदारा
स्वामी जी के कार्यों
में तन-मन-धन से सहयोग
देने वाले दानवीर, सम्प्रति
अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति ग्रामोत्थान
विद्यापीठ संगरिया
श्री गंगानगर

मैं स्वामी को देश के चुने हुए कार्यकर्ताओ मे से एक आदमी मानता हूँ, और उनकी सेवायें आने वाली पीढियो के लिए अनुकरणीय हैं।

रामनारायन चोधरी
सूचना मन्त्री,
समाज सेवक नई दिल्ली

11-11-1957

""ग्रामोत्थान विद्यापीठ के तो स्वामी जी महाराज महामना प० मालवीय और पूज्य बापू थे। उनका सीचा हुआ छोटा सा पौधा उन्ही के विशाल वट वृक्ष की भाँति चारो तरफ फैल चुका था, परन्तु वे इसे विशालतम बनाना चाहते थे ऐसा लगता है कि उनकी सूक्ष्म देह, आज भी अपने कक्ष से बाहर निकलकर वाटिकाओ और भवनो का चक्कर लगाती हुई वहाँ आकर रुक जाती हैं, जहाँ उनकी इच्छा के अनुसार उनके जीवन मे कोई कार्य नही हो पाया था।

श्री रामनारायण व्यापी
स्वामी जी की मानसरोवर
यात्रा के साथी, सम्प्रति संस्थापक
स्वामी केशवानन्द स्मारक निधि अबोहर
एव स्वामी केशवानन्द स्मारक ट्रस्ट संगरिया

जब विद्यापीठ जीवित है तो स्वामी जी महाराज भी अमर हैं, और अमर रहेंगे।

श्री मुखत्यारसिंह तोमर
कनाडा उत्तरी अमेरिका

स्वामी जी के शब्द सुनते ही मुझे उस बूढे बाबा साहब की कहानी याद आ गई, जो मरणासन्न होने पर भी किसी जगह आम का पेड लगा रहा था, किसी के द्वारा कारण पूछे जाने पर उन्होने कहा था "हमारे बुजुर्गों ने पेड लगाये, हम उनके फल खा रहे हैं, अब हम पेड लगा रहे हैं, इन फलो को हमारी भावी सन्तानें खावेंगी।

महावीर प्रसाद गुप्त
प्रो० एव अध्यक्ष हिन्दी
विभाग स्नातकोत्तर महाविद्यालय
संगरिया श्री गगानगर राजस्थान
स्वामी जी के विशेष कृपापात्र

वे मानव के लिए जिये और उसी की सेवा करते-करते अमर लोक के राही बन गये।

अमी लाल
व्यवस्थापक विद्यार्थी
आश्रम रामगढ चुरू

हमारे मरुस्थलीय ग्रामों में ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित करने वाले स्वामी केशवानन्द जी विधाता की एक अद्भुत कृति थे"" ।

आचार्य रामचन्द्र चौधरी
विद्यापीठ में ज्ञानार्जन इसी में
सेवारत, स्वामी जी के विश्व-
सनीय कार्यकर्ता

वे अपने परिचित जनों को सदैव सावधान करते थे । मेरे मन में ऐसी साध भी उन्हीं के अनुग्रह से पैदा हुई है कि मैं भी कुमार्ग पर जाती हुई बिश्नोई जाति को बचाऊ ।

चौधरी महीराम बिश्नोई
स्वामी जी के 1924 से जीवन भर
सम्पर्क में रहे

स्वामी जी एक गरीब से गरीब घर में उत्पन्न हुए थे परन्तु अपने त्याग और तपस्या से महान् बन गये पवित्रता में व्यक्तित्व प्राप्त किया, जीवन भर रुपयों से खेलते रहे परन्तु एक भी पैसा खुद के आराम के लिए काम नहीं लिया । भाई भी यदि कुछ सहायता के लिए आया तो उसे यह कह कर विदा किया कि यहाँ साधु के पास क्या रखा है ?

लगभग 100 वर्ष उम्र प्राप्त कर ली थी स्वामी जी ने, परन्तु इतने लम्बे समय में कोई भी ऐसा काम या गल्ती नहीं की जिससे वे कलंकित होते । कोई भी ऐसा कार्य नहीं किया जिससे उनकी आँखें नीची हो, हमेशा ऊँची आँखें करके चलते रहे । स्वाभिमान को कभी आँच न आने दी तभी तो सच्चे वीर कहलाये ।

फरिश्ते से है बेहतर इन्सान बनना ।
मगर इसमें पड़ती है मेहनत जियादा ॥

× × × ×

खुदा तो मिलता है इन्सान नहीं मिलता ।
यह चीज वह है कि देखी कहीं नहीं मैंने ॥

× × × ×

लेकिन स्वामी जी ने सुधारने का कार्य किया था ।

दौलत राम बी० ए०
रोड़ा वाली

इसे दिल्ली का सौभाग्य ही समझिये कि स्वामी जी का शरीरांत यहीं हुआ ""
माँ हिन्दी रोती रही ।

श्री हरिशंकर शर्मा
प्रवक्ता बिहाणी शिक्षा
महाविद्यालय श्री गंगानगर

आप क्या गये, नूर छिप गया।
उजाले की जगह अन्धेरा घिर गया ॥
ये दीवारें तुझें अब भी बुलाती हैं।
ये यादें तेरी, बार-बार रूलाती है ॥
छा गयी है इसमे दुःख की अन्धेरी।
मुक्ति की नहीं है अब कोई दवा
तू तो जाकर सुख की नींद सो गया
रोता बिलखता हम सबको यो ही छोड़ गया।
लगता है न कभी आयेगा वह नूर,
चला गया है जो हमसे कोसो दूर
दुःख मे बदलेंगे अब सातो ही सुख
तुम न देखोगे पीछे मुड़।
न होगी अब वह खुशी की रोशनी
छा गयी क्योंकि अब अमावस की रात है
वे मीठे सच्चे बोल तेरे हमे याद आते हैं।
आज मेरे गम भरे गीत तुझे बुलाते हैं।

× × × ×

ग्रामोत्थान नमन करता है कर्मयुग चेता को,
जन-जन के स्वामी केशव, विद्यापीठ प्रणेता को
धन्य बना वह देश हमारा, माता बनी निहाल है।
जिसकी गोदी मे जन्मा, केशव जैसा लाल है।

Extract from the proceedings of 'Rajya Sabha' held on the 13th November, 1972

Obituary Reference

Mr. chairman : I have to refer to the passing away of Swami Keshwanand.

Swami Keshwanand was born at village Magloona in Sikar District and was educated at Sadhu Ashram Fazilka. Being a social worker he was associated with the spread of education and all matters connected with village upliftment. He was imprisoned several times in satyagraha movements He was presented "Abhinanadan Granth" by the chief minister of Rajasthan on March 9-1958. He was first elected to the Rajya Sabha in 1952 and was re-elected to the House in April, 1958.

We deeply mourn the passing away of Swami Keshwanand.

I would request the members to stand and observe a minutes silence as a mark of respect to the memory of the deceased.

Hon members then stood in silence for one minute.

स्वामी जी ने राष्ट्र भाषा हिन्दी की पराधीन भारत मे जो सेवायें की वह आज इतिहास का विषय बन गई हैं"""

प्रकाशवीर शास्त्री
21-9.72 केनिंग लेन नई दिल्ली

""स्वामी जी के स्वर्गवास होने की घटना सचमुच मे हमारे गरीब किसान समाज के लिए बहुत दुखदायी साबित हुई ""उन्होने आजीवन हम सासारिक प्राणियों की सेवा की थी।

23-9.72 नाथूराम मिर्धा
अध्यक्ष, कृषि आयोग
विभाग नई दिल्ली

दुर्दैव से वह ज्ञानपुँज, प्रकाशस्तम्भ सदा सर्वदा के लिए हमारे बीच से चले गये """ "*यह ग्रामोत्थान विद्यापीठ या संगरिया मण्डी अथवा राजस्थान की ही नही* अपितु राष्ट्र की अपूरणीय क्षति है ""

वेद प्रकाश शर्मा
राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय
15.9-72 उदयपुर

स्वामी केशवानन्द जी राष्ट्र भारती हिन्दी के अपराजेय सेनानी थे ""हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति साहित्य वाचस्पति स्वामी केशवानन्द जी के निधन पर गहरा दुख प्रकट करती है""

रामप्रताप त्रिपाठी
सहायक मन्त्री
26-9-72 हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

""इस प्रान्त के एक महान् हिन्दी सेवी शिक्षा प्रचारक, समाज सुधारक स्वतन्त्रता सग्राम के सेनानी, निस्वार्थ सेवी एवं उदासी सम्प्रदाय के सत के देहावसान से हुई क्षति की युगो तक पूर्ण नहीं किया जा सकेगा।

सूरजमल चौधरी
अध्यक्ष रोटरी क्लब
श्री गगानगर

''स्वामी जी का जीवन त्याग और तपस्या का एक बड़ा इतिहास है, *स्वामी जी ने अपना नाम या सम्प्रदाय चलाने के लिए कोई मठ या चेला नही* बनाया।"""""

ऐसे कर्मयोगी स्वर्ग मे ही जाते हैं यही हमारे शास्त्रो का निश्चित मत है।

चान्दी राम वर्मा
साहित्य सदन अबोहर
पजाब

महान् परोपकारी, दयाचारी, कर्मयोगी, समाज सेवी शिक्षा सन्त स्वामी केशवानन्द जी महाराज सत्प्रवृत्तियों के पुँज थे। ....

सुषमा गुप्ता
प्रधानाध्यापिका
प्रा० वि. बालिका उ मा.
संगरिया

....श्री स्वामी जी के साथ विशेष सम्पर्क का सौभाग्य मुझको प्राप्त नही हुआ। उनको वनस्थली आना हुआ तब मैंने उनके दर्शन करके अपने आपको धन्य माना था ....

हीरालाल शास्त्री
संस्थापक वन स्थली महिला
विद्यापीठ राजस्थान

शिक्षा, समाज सुधार और अन्तिम समय मे स्वामी जी ने सर्वोदय समाज रचना मे जो अभिरुची दिखाई वह देश के लिए प्रेरणादायक थी....

रामचन्द्र मक्कासर
सचिव, जिला सर्वोदय मण्डल
श्री गंगानगर

गुरु मुख जम्म सवार दरगह चल्लिया।
तिस सच्चे दरबार सच्चा पिड मल्लिया॥

अकाली जत्था धीर खालसा दल श्री गंगा नगर की मिली जुली बैठक 17-9-72 इतवार को अध्यक्ष सरदार गुरुवचन सिंह जी की अध्यक्षता मे गुरुद्वारा कलगीधार साहिब में हुई। बैठक मे सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास हुआ कि महात्मा श्री केशवानन्द जी के अकाल चले जाने पर शोक प्रस्ताव पास किये जाता है, कि स्वामी जी का यह बिछोडा कौम के लिए महा दुखदायी है ....

अध्यक्ष
अकाली जत्था श्री गंगानगर

....स्वामी जी सरलता, साधना एवं कर्मठता की प्रति मूर्ति थे वह स्वयं एक संस्था थी ....

माधोराम पालीवाल
प्राचार्य
गांधी शिक्षक महाविद्यालय
गुलाबपुरा राजस्थान

....ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया स्वामी जी का सर्वोपरि स्मारक है। बीकानेर हिन्दी-विश्व भारती मे आज साथ महाराज को सेवा मे श्रद्धांजली अर्पित की जा रही है।

15-9-72

विद्याधर शास्त्री
बीकानेर

""विद्यापीठ के संचालक स्वामी केशवानन्द जी महाराज के देहावसान से खेद हुआ।""

सेठ गोविन्द दास

. राजा गोकुल दास महल जबलपुर

विद्यापीठ स्वामी जी का हृदय है, तो उन द्वारा स्थान-स्थान पर खोली व्यायाम शालाएँ पैर, समाज सुधार के कार्य हाथ, सैंकड़ों विद्यालय और पुस्तकालय मस्तिष्क है। हजारों की संख्या में लगाये गये वृक्ष सांसें हैं, शेष रही प्राण की बात सो इस देश की मिट्टी ही इस शिक्षा सन्त के प्राण हैं।""

रामदेव

""उनके जैसे निष्ठावान समाज सेवी अब कहाँ मिल सकता है""

चन्दनमल बैद

शिक्षा मन्त्री राजस्थान

ओ हो ! यह क्या हुआ। आज एक और गाँधी का अवसान हो गया।

जब तक सूरज चाँद सितारे,
धरती तल और अम्बर है।
मानवता अपना मार्ग पायेगी,
भारत की हर पीढ़ी
तेरे विद्यापीठ में पढ़ने आयेगी॥

17-9-72 —हेतराम प्रभाकर

शोकसभा

दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन की यह शोक सभा, हिन्दी भाषा और साहित्य के कर्मनिष्ठ प्रचारक और उत्तरी पश्चिमी भारत मे राष्ट्र एवं राष्ट्र भाषा की सेवा मे, विगत 50 वर्षों में संलग्न स्वामी केशवानन्द के स्वर्गारोहण पर हार्दिक अनुताप व्यक्त करती है "" स्वामी जी ने हिन्दी साहित्य सदन अबोहर की लाखों रुपये की चल अचल सम्पत्ति हिन्दी साहित्य सम्मेलन को भेंट कर दी थी ""

स्वामी जी के शोक मे सम्मेलन की गोसका बैठकी, का कार्यक्रम स्थगित कर दिया और सभा ने दो मिनट का मौन धारण कर उनकी आत्म शान्ति की प्रार्थना की—

दिल्ली प्रादेशिक साहित्य सम्मेलन

20, कम्युनिकेशन बिल्डिंग

कनाट प्लेस नई दिल्ली—2

स्वामी केशवानन्द जी के एक पवित्र आत्मा थी ''''' अपने युग के लोह पुरुष थे '''''

शिव आर्टिस्ट सगरिया
स्वामी जी की कल्पनाओ को आकर
देने वाले प्रसिद्ध चित्रकार

हा ! पूर्णचन्द्र की तरह अशिक्षा रूपी अन्धकार को नष्ट करने वाले स्वामी केशवानन्द जी अस्त हो गये, यह हमारा दुर्भाग्य है।

भगवान इस कर्मठ महात्मा को सद्गति दे। और इनके अनुयायीयो को इनके अधूरे जनहित कार्य को पूरा करने की शक्ति दें।

रामचन्द्र शास्त्री
विद्यालकार सगरिया मण्डी

रूखे, कुरूप, मटमैले, मिट्टी के अनगढ़ ढेलो को,
हे कलाकार, तुमने सवार, घट दीप बना प्रतिमा सुन्दर,
दे दिये जगत को श्रम मार्ग, चिर तृप्ति ज्ञान हैं तपस्वीवर।
भरकर प्रदीप मे तव अपना, घट मे धर अमृत का सपना,
प्रतिमा को मन का अहम सोप, तु अनजाने ही कर बैठा
अपने नश्वर को अजर अमर। तेरे जादू का भेद खुला
जब पडा दिखाई तू ही तू हर मन्दिर दीवट पनघट पर।
हे ! महा प्राण, हे ! जादूगर, मृणमय को चिन्मय कर डाला।
श्रम सीकर से अभिमन्त्रित कर, अनुरंजित कर, अभिसचित कर।

20 सितम्बर 1957

कन्हैयालाल सेठिया, सुजानगढ़
प्रसिद्ध राजस्थानी कवि

सुफल सगरिया स्वस्थ नित, शिक्षा अमित अमन्द।
बुद्धि नीति सचित भजत, सदा केशवानन्द।
धरम धरम के ठोर है, धर्म हि परछ सुठोर।
धर्म महत नम पावले नीति न परत कुठोर।
साधु केशवानन्द को, केतिव भयो अमोघ।
आधा बाधा जाय दुरि देखत हृदय अगाध॥
मर जोवा लहि मुक्ति क्यों राखत मुकत निकासी।
रमो गुनियन को खोजिके, केशव साखत पासि।
गॉव सगरिया महि दियों, विटपो एकु सुबंस।
झुकें तहां मुनि मुनि परत, कबहूँ न झुकें अपंस॥
सहज सरोवर सगरिया, जलज केशवानन्द।
'अदम' भरत कबहीं अमर, गावत गीत सुपद॥
गौरव राजस्थान को, पंचनद को सम्मान।

सीमा पै बसि सगरिया, कीरति किरत महान ।।
विद्यान मंदिर सगरिया, बुद्धिबल केशव सन्त ।
कुमति दूरि तकि जाजि है, विफल कुफल अध अन्त ।।
भजें भारति देवि कौं, गुरुजन छात्र सुवृन्द ।
श्रम मेवा तैं पाइहो, यश-मंगल सुख कन्द ।।
केशव कुशल सुमन्त लहि साधित सेम सुचन्द
करूण अभ्र बरसत गरजि, घुमिड़त घिरत समुन्द्र ।।
मन सयत, आधार-व्रत बनो अरूण सदेश ।
ऊँचो चिन्तन धारणा, सूधों सहज सुवेश ।।
तरसि-तरसि जल-जल चहे मे त्राहि-त्राहि भगवान
कर्हार साईं सँकट हरयो, केशव सुयश महान् ।

डा० सरनाम सिंह अरुण
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्व विद्यालय जयपुर

भारतीय शिक्षा जगत मे कविन्द्र, रवीन्द्र का शांति निकेतन, स्वामी श्रद्धा नन्द का गुरुकुल कांगडी, महामना मालवीय का बनारस हिन्दू विश्व विद्यालय, लोक मान्य तिलक की दकन एजुकेशन सोसायटी, वे प्रकाश स्तम्भ हैं जो राष्ट्रवादी भावनाओं से उत्प्रेरित होकर भारतीय सस्कृति को अक्षुण्य बनाएँ रखने तथा राष्ट्रीय शिक्षा के हेतु स्थापित किए गये थे । इसी श्रृंखला मे राजस्थान, हरियाणा तथा पंजाब के मरुस्थलीय क्षेत्र मे एक सस्था है शिक्षा सन्त स्वामी केशवानन्द द्वारा रचित एव पोषित ग्रामोत्थान विद्यापीठ सगरिया, जिसने राष्ट्रीय शिक्षा के लक्ष्य को लेकर जो दीप प्रज्ज्वलित किया उसके प्रकाश से अज्ञान के अंधकार मे डूबी जनता मे नव चेतना नव जागृति तथा नव स्फूर्ति का सचार हुआ है ""

यशवन्तसिंह एडवोकेट
स्वामी केशवानन्द स्मारक
ट्रस्ट के माध्यम से स्वामी जी
की, भावनाओं को आगे बढ़ाने मे प्रयास
रत, ग्रामोत्थान विद्यापीठ के नव सचारक
सम्प्रति-सचिव ग्रामोत्थान विद्यापीठ प्रबन्ध कारिणी
एवं महासचिव स्वामी केशवानन्द स्मारक ट्रस्ट

""स्वामी केशवानन्द जी एक कर्मठ राष्ट्र भक्त थे । उनका हिन्दी को सम्मान दिलाने एव सामाजिक रूढी उन्मूलन मे बहुत बडा योगदान रहा है ।

चरणसिंह
भूतपूर्व प्रधान मन्त्री
भारत सरकार
सम्प्रति-अध्यक्ष लोकदल

24-8-1984

मरु क्षेत्र के शिक्षा सन्त श्रद्धेय स्वामी केशवानन्द राष्ट्र की उन विभूतियों मे से थे, जिन्होने स्वतन्त्रता संग्राम मे गांधी जी के पद चिन्हो पर चलकर कर्मठ सेनानी के रूप मे कार्य किया था। वे शिक्षा शास्त्री नारी कल्याण, समाज सुधारक, दलितोद्धारक के रूप मे राजस्थान, हरियाणा, पंजाब मे एक जानी मानी हस्ती थे

बलराम जाखड़
अध्यक्ष लोक सभा
25 8-84 स्वामी जी के एक विद्यार्थी

स्वामी जी स्वतन्त्रता संग्राम मे तो अग्रणी रहे ही थे, उन्होने स्वतन्त्रता के पश्चात् राष्ट्र के पुर्ननिर्माण शिक्षा प्रसार नारी कल्याण, दलितोद्धार और सामाजिक बुराइयो के उन्मूलन की दिशा मे महत्वपूर्ण कार्य किया।"

जगजीवन राम
29 8-84 केन्द्रीय मन्त्री भारत सरकार

मैं स्वामी जी के व्यक्तित्व का हमेशा प्रशसक रहा हूँ और उन्होने अपने जीवन काल मे ग्रामीण किसान जनता की शिक्षा के क्षेत्र मे सामाजिक सुधार के क्षेत्र मे जो सेवायें की हैं वह हमेशा अमर रहेगी।"

नाथूराम मिर्धा
18-8-1984 राजस्थान

स्वामी जी ने अन्य समाज सेवा के अतिरिक्त जो हिन्दी सेवा की थी उसे हिन्दी सेवी कैसे भुला सकते हैं उन्होने प्राण पण से हिन्दी के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया था, उनके द्वारा स्थापित संग्रहालय तो हैदराबाद के संग्रहालय (सालारजग) के बाद स्थान रखता है।

वियोगी हरि
19-7-84 एफ 1312 माडल टाऊन
दिल्ली

जिन तीन महापुरुषो के मेरे जीवन को सर्वाधिक प्रभावित किया वे थे, बापूजी, राजर्षि टण्डन और स्वामी केशवानन्द। इनमे पहले दो सन्त स्वभाव के साथ साथ राजनीतिज्ञ भी थे, लेकिन स्वामी केशवानन्द जी गुण, कर्म और स्वभाव तीनों से सन्त शिरोमणि थे।

गोपाल प्रसाद व्यास
बी 52 गुलमोहर पार्क
नई दिल्ली

मैंने स्कूली शिक्षा स्वामी जी के चरण कमलों में बैठकर शुरू की। अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ, कि स्वामी जी की रुचि न केवल

शिक्षा देने मे थी बल्कि अपने विद्यार्थियो के सर्वांगीण विकास मे रहती थी ""स्वामी जी द्वारा रोपित यह सस्कार ही मेरे जीवन के मार्ग दर्शक हैं।

जगदीश नेहरा
29-8-84　　　　　　　　राज्य मन्त्री शिक्षा विभाग
हरियाणा, चण्डीगढ

"' स्वामी केशवानन्द समाज सुधार, शिक्षा प्रसार, दलितोद्धारा, अछूतो द्वारा रूढि उन्मूलन, नारी कल्याण, समाजोत्थान के कार्यक्रम मे सतत् निरत रहे उन्होंने सद-आचरण का शख फूक एव ग्रामोत्थान का आन्दोलन चलाया समाज उनका चिरऋणी एव कृतज्ञ है। उन्होंने एक आदर्श तपस्वी का तपोमय निष्कलंक, जीवन जीया।

डॉ० ज्ञान प्रकाश पिलानिया
अध्यक्ष राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम

वेदना जब व्यक्ति की सकुचित सीमा का परित्याग कर विश्व वेदना मे परिणत हो जाती है, तभी सुन्दर महा काव्य का सृजन होता है। विधुर कौन्च के करुण-क्रन्दन पर निस्वार्थ करुण हृदय मुनिवर बाल्मीकि की पीडा आदि काव्य रामायण बन गयी। प्रकृति के थपेडो से आहत हृदय मरपुत्र स्वामी केशवानन्द अपनी पीडा से विचलित नही हुए मरुधरा के अभाव और अज्ञान से दुखी हुए थे। आधी तूफान, तीद, थकान, भूख प्यास सब धरती के दुख को देखकर विलीन थे तभी तो समस्त विषमताओ और बाधाओ के मध्य शिक्षा प्रसार का सुन्दर महाकाव्य बन गया।

डॉ० श्रीमती शारदा शर्मा
व्याख्याता हिन्दी विभाग
ग्रा वि कन्या विद्यालय
संगरिया

कौन कहता है, स्वामी केशवानन्द नही रहे ?
कौन कहता है वे हमें छोड कर चले गये ?
उठो मनु।
आखें खोलो तो सही,
तनिक बोलो तो सही
देखो""""

×　　　×　　　×　　　×

कही तुम्हे वही हँसता मुस्कराता
श्वेत दाढी बढ़ाये
केशरिया बाना धारी

तस्वीर तो नजर नही आ रही ?
तो फिर क्यो ढलकाये थे वो आसू ?
क्यों की थी वे चीत्कारें ?
मन का भ्रम मिटाओ
उतरो जरा वास्तविकता मे
मरती तो सिर्फ देह है
आत्मा तो अजर अमर है,

प्रो० कु० चन्द्रकान्ता वर्मा
प्रवक्ता अग्रेजी विभाग
ग्रा वि कन्या महाविद्यालय
सगरिया

' "शिक्षा सन्त स्वामी केशवानन्द राष्ट्र की एक ऐसी ही निर्मल विभूति थे, जिनमें भारतीय सस्कृति के वैदिक सरक्षक स्वराष्ट्र वाद के प्रबल प्रवक्ता महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वराज्य के उद्घोषक बालगंगाधर तिलक तथा अहिंसा के पुजारी महात्मा गाधी के विचारो का समन्वय मिलता है " --

अवधबिहारी कोहुरी
प्रो एव विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
ग्रा वि स्नातकोत्तर महाविद्यालय सगरिया

"' स्वामी जी आज नि सन्देह हमारे मध्य नही है, किन्तु वे हमारे विचारों में व्याप्त हैं हमारे हृदय में समाये हैं वे। कभी मर नहीं सकते, मृत्यु मर सकती है किन्तु उनका विशाल व्यक्तित्व उनकी वह महानता, वह आत्मविश्वास जिसके सामने पर्वत चट्टान नत थे, कैसे मर सकता है ? युगो बाद जब निष्ठा व दृढता के अग्रदूत, प्रतीक के रूप में स्मरण किया जाता रहेगा।

असीम कुमार बोस
प्रो० एव अध्यक्ष प्राणि विज्ञान
ग्रामोत्थान विद्यालय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय संगरिया श्री गगानगर

× × × ×

अभाव, विपदाओं, विपन्नता, अन्धविश्वासों और कुप्रथाओ के वातावरण में पले स्वामी जी ने एक ऐसे यथार्थ को भोगा जो सम्पन्न ससार की आँखों से अनेक दशाब्दियों तक उपेक्षित रहा, एक ऐसे आर्तनाद को सुना, जिसकी चीख बालू के टीलों में गुंजरित हो यहीं दफन हो जाती थी, एक ऐसी कातर दृष्टि देखी जिसकी ओर आँखें नहीं उठ पाती थीं इन्हीं समस्त तथ्यों ने बालक बीरमा के हृदय में विद्रोह की

ज्वालामुखी पैदा कर दिया। और उपर्युक्त आशय को उनका जीवन दर्शन बना दिया।""

डॉ० गिरीशदत्त शर्मा
प्रो० एवं अध्यक्ष, भूगोल
विभाग, एवं सम्पादक महा-
विद्यालय पत्रिका 'केशव', संगरिया
श्री गंगानगर

विद्या की रोशनी बिन अन्धकार था यहाँ
खुशदिल हमें जगा दिया निकला सूरज ज्ञान का
देखा न कोई देवता केशवानन्द महान सा
लाखों सही मुसीबतें सोचा भला जहान का

× × × ×

तेरी महिमा किस विधि गाऊँ
दीनदयाल कृपाल है स्वामी नतमस्तक हो जाऊँ
तेरी महिमा किस विध गाऊँ

—राग भैरवि।

× × × ×

सुनो-सुनो ऐ दुनियाँ वालो महा ऋषि की अमर कहानी।
कर्मवीर योगी केशव थे, देश सुधारक जीवन दानी॥

× × × ×

उनकी महिमा किस विधि गायें, किन शब्दों से नाम ध्यायें,
आओ हम सब शीश नवायें, श्रद्धा के दो पुष्प चढ़ायें।
श्रद्धांजलि अर्पित करते जाते हैं गुणगान जिसका है ये ग्रामोत्थान॥

× × × ×

झुकायें आज मस्तक हम स्वामी जी के चरणों मे
करें तनमन सभी अर्पण स्वामी जी के चरणों में

—राग भैरवी ताल केहरवा

× × × ×

है विद्यापीठ के निर्माता, केशवानन्द तेरी जय हो।
विद्या के पुजारी उपकारी जनता हितकारी तेरी जय हो।

× × × ×

धन गुरु तेरी लीला न्यारी ऐ
दर्शन पा पा जादी दुनियाँ सारी ऐ

—पंजाबी गीत

× × × ×

जिसने जनता की सेवा मे अपना जीवन वार दिया
कभी नही आराम किया और देश का बेड़ा पार किया
राही अनन्त को हम आरती उतारें। स्वामी····

—केशव आरती

× × ×

मानवता के अटल पुजारी शिक्षा के अवतार प्रभु।
दीन बन्धु, करुणा सिन्धु, नैया खेवन हार प्रभु॥

× × ×

जाट विद्यालय की अमर कहानी
सुनो-सुनो ए भारत वालो बागड की यो बात पुरानी
अनपढ़ से भरी हुई थी, उन लोगो की यह जिन्दगानी

× × ×

बागड री धरती रा बीरा कोई भाग जगायो
संगरिया मण्डी में, ग्रामोत्थान बनायो

—राजस्थानी गीत

× × ×

आओ भाइयो तुम्हें सुनायें महिमा ग्रामोत्थान की
जिसमें शक्ति लगी हुई है साधु एक महान की
वन्दे केशवम् वन्दे केशवम्

× × ×

सुनो री बहनो आज नया गुणगान
आज का दिन है भाग्यशाली और महिमा बड़ी महान्
सुनो री ··············

—तर्ज हरियाणवी एव राजस्थानी

× × —

आज सबका ही अगर ये ध्यान हो
क्यो न उन्नत फिर ये ग्रामोत्थान हो।

× × ×

साडा प्यारा ग्रामोत्थान जय यो प्यारा ग्रामोत्थान
इस दी महिमा दे मिलजुल के गा सइये गुणगान
साडा··············

—पंजाबी लोकगीत

× × ×

ये ग्रामोत्थान उत्थान हमारा सबकी आँखो का तारा

× × ×

जलसो दोखन आऊँगी समरिया विद्यापीठ में
जहाँ बड़े-बड़े विद्वान होंगे वेदो के व्याख्यान मे
मैं सुनकर नफा उठाबी समरिया विद्यापीठ मे

×   ×   ×

यह ग्रामोत्थान है मेरा··········· ····

—जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया····
—तर्ज पर परोडी

×   ×   ×

वती बात के ज्ञान दी जगाया जिसने
ऐहा सोहना ग्रामोत्थान मेरा नी वती बालके····

—पजाबी लोकगीत

×   ×   ×

गाँव-गाँव और शहर शहर से टाबर पढने आवे
छोरा-छोरी पढ़ लिखकर के जीवन सफल बनावे
म्हाने प्यारी लागे करती जनता रो कल्याण
चोखो लागे······ म्हारो प्यारो ग्रामोत्थान

×   ×   ×

आओ नी सखियो आरती करियो तीर्थ ग्रामोत्थान दी
विद्या दा इह मन्दिर सोहना मूर्त जिस विच ज्ञान दी

—पजाबी लोक गीत

उपरोक्त लोक गीतो, कविताओ के अश गीतकार एव अन्धे कवि रामशरण खुशदिल की पुस्तिका स्वामी केशवानन्द जी प्रशस्ति गीत से उद्धरित किये गये हैं।

14

स्वामी जी ने कहा था

● मैं इस संसार में केवल एक बार ही आया हूं, इसलिए यदि कोई अच्छा काम कर सकूं या किसी मनुष्य के प्रति दया दिखा सकूं तो वह मुझे अभी कर लेनी चाहिए और न आने के लिए इसे स्थगित ही करना है, क्योंकि मुझे इस रूप में दुबारा नहीं आना है।

● जन सेवक की त्याग से, गुण से, शील से, क्रियाशीलता से, कर्तव्यता तथा कार्य शक्ति की क्षमता से परीक्षा होती है। जनता कसौटी है। वह प्रथम जन सेवक को कसौटी पर कसकर देखती है। यदि वह अपने उद्देश्य में पूरा उतरा है, तब तो उसे अपनाती है नहीं तो उसे पीछे धकेल देती है, परसेवा का छोटे से छोटा घृणित काम करने में संकोच नहीं है, मेरा सत्कार नहीं है, इस प्रकार से भाव वाला व्यक्ति कभी जन सेवक नहीं बन सकता।

● जो सच्ची लगन से लोक सेवा करता है, लोग उसे सर्वस्व तक देने को तैयार हो जाते हैं और तो और उसकी आज्ञा शिरोधार्य कर अपने को फांसी के तख्ते पर चढ़ाने को तैयार हो जाते हैं।

● मनुष्य की महत्ता इसमें नहीं कि वह किसी यूनिवर्सिटी की ऊंची सनद रखता है, बल्कि मनुष्य की महत्ता इसमें है कि उसका हृदय उदारता और परोपकार की भावनाओं से ओत-प्रोत है।

● पराक्रम किसी को सताने में नहीं सताये हुओं को ऊपर उठाने में है, यदि तुम पराक्रम दिखाना ही चाहते हो तो यह सारी सृष्टि ही अभावों से पटी पड़ी है इसे अपने पराक्रम से मुक्त करो।

● अध्यापक कोई दूसरा नहीं है, तुम्हीं अपने अध्यापक हो जिसके अन्दर का अध्यापक जाग गया, वही एकलव्य बन गया।

● एक बार पानी आ आये यह टोवे पान उनमें इन्होंने बहुत एक छत्र राज किया है अब डेमोक्रेसी है।

● गुरुओं को किसी छोटी जमात में बांधकर रखना उन गुरुओं के साथ विश्वास घात करना है।

● हमें स्वराज्य तो मिल गया परन्तु सुराज्य नहीं मिला।

● मैं देश में अंग्रेजी का रखना घोर राष्ट्रीय अपमान समझता हूँ।

● यदि अज्ञान रूपी राक्षस से छुटकारा चाहते हैं तो अभी पढ़ने चल दो, पुस्तकालय खोलो, साधु सन्तों के प्रवचन सुनो।

● जड़ मूल की चिकित्सा होनी चाहिए, बाहरी चमक दमक या टीप टल्ले से कुछ नहीं होता, आजकल हमारे मुल्क को बीमारी कुछ और है इलाज कुछ और ही हो रहा है।

● अगर जिन्दा रहना चाहते हो तो परम्पराओं का निर्माण करना ही होगा, जिस देश व जाति की यदि कोई परम्परा नहीं है तो वह मरी हुई है।

● दुनिया मेरी कल्पना से बहुत बड़ी निकली इतनी बड़ी कि मैं उसे समझ भी नहीं पाया।

● समझ में नहीं आता लोगों के पास शरीर है, तो निरुत्साही क्यों हो जाते हैं, उत्साह है तो दुःख क्या है ?

● इस मन (स्वतन्त्रता संघर्ष) में हमारे साथ वे लोग हो जावें, जो यह कहते हैं कि हम बीमार नहीं होंगे, ? जल्दी घर नहीं आवेंगे।

● काम करते रहने से शरीर कभी नहीं थकता यदि मन थक जाता है तो शरीर अपने आप थक जाता है।

● बड़े से बड़ा भवन अपनी नींव की बुनियाद पर खड़ा रहता है, इसी प्रकार जाति का भवन उसका जन सेवक की बुनियाद पर खड़ा होता है, जन सेवक का लोकैषणा, वित्तैषणा, पुत्रैषणा, इन सबको छोड़कर लोगों का अपना यश अपना, अपना लोगों का धन अपना धन, और लोगों के पुत्र अपने पुत्र बनाने होंगे।

● मैंने कर्तव्य का पाठ सीखने के लिए ही तिलक का गीता रहस्य अद्योपान्त पढ़ा है। अगर कर्तव्य को सही अर्थों में जानना चाहते हो तो गीता पढ़ो।

● जन-जन के कष्ट में जो अपने को खप देता है, वही बड़ा जन सेवक है। धर्म ग्रंथ कहते हैं कि सेवा करने वालों को स्वर्ग प्राप्त होता है, किन्तु सच्चाई यह है कि सेवा से नरक को भी स्वर्ग बनाया जा सकता है।

● इस शरीर से जितने परोपकार कर लोगे, वह तो हो   यह शरीर नष्ट तो निश्चय ही होगा।

● श्रेष्ठ पुरुषों का उत्साह ही उन्हें बलवान   है बड़ा कोई बल नहीं है, उत्साहशील व्यक्ति के लिए नहीं है।

● आलसी और निकम्मे आदमियों ने

* जन सेवक बनना जनता की सेवा और अपने को सुखी बनाना है।

* मैं कोई पूजा पाठ नहीं करता, ईश्वर किस बला का नाम है, मुझे नहीं मालूम मैं सुबह उठते ही सोचता हूँ, मेरे सामने आज कौन-कौन से काम हैं, जिन के लिए मुझे आज ही जुटना पड़ेगा, । हमारा पूजा पाठ जप-तप धारणा बस एक ही है। जिस कार्य में हमने हाथ डाला है उसे सिर लगाया ।

* महापुरुषों के कार्यों के सिद्धी उनके आत्मबल से होती है किन्हीं बाह्य साधनों से नहीं।

* जो शिक्षा सदाचार की शिक्षा दे, वही सबसे अच्छी शिक्षा है, जो बालक सदाचारी है वही शिक्षित है।

* जातियों की उन्नति उनके अज्ञान पर निर्भर है।

* यदि ग्रामीण जनता को सुखी और सम्पन्न बनाना है तो सर्वप्रथम इनको शिक्षा देने की आवश्यकता है।

* यदि भूल से भी दुर्व्यसन साथ हो लिया हो तो उसे पनपने दो नहीं तो वह तुम्हें उखाड़ देगा।

* हृदय के अन्धकार का दूर होना ही विद्या अथवा शिक्षा है।

* विद्यार्थी पर सबसे बड़ा प्रभाव संगति का पड़ता है, अच्छी संगति उन्नति और बुरी संगति पतन की ओर ले जाती है।

* शिक्षा एक संस्कार है जो जिन्दगी ऊँची बनाने के लिए आवश्यक है, लेकिन जिस शिक्षा से जीवन ऊँचा न उठे उसे प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

* नियमित रूप से थोड़ा थोड़ा किया हुआ काम भी अनियमित रूप से तेज किए काम से बाजी मार जाता है।

* हमें जाति, में निराशा नहीं आने देनी चाहिए।

* लोग दान, पुण्य तप न जाने क्या क्या करते हैं, परन्तु किसी का फल तुरन्त नहीं मिलता, दान वह जो तुरन्त फल दे, कुँआ बनवाओ, मीठा पानी लो, विद्यालय खोलो बच्चे पढ़ेंगे।

* लोभ के लिए गाय पालन और बछड़ों को दूध न छोड़ने वाले गो पालकों से तो कसाई अच्छा है।

* जिस काम को हमने अपने हाथ में लिया है उसके सिवा हमारा ध्यान कहीं जाता ही नहीं।

* किसी काम को पूरा करने के लिए सच्ची लगन, पक्का सङ्कल्प और अटूट परिश्रम होना चाहिए।

* वृक्ष की शाखा और प्रशाखाओं की ओर मत जाइये, इसके मूल को देखें, इन सभी तनों और शाखाओं को पोषण भूमि में छिपी हुई जड़ से हो रहा यह है शिक्षा।

सन्दर्भ-स्रोत एवं स्वामी जी से सम्बद्ध प्रकाशन

1. स्वामी केशवानन्द — हिन्दी भाषा का महत्व
2. " — मरुभूमि सेवा कार्य
3. " — ग्रामोत्थान विद्यापीठ-संक्षिप्त झांकी
4. " — ग्रामोत्थान विद्यापीठ-पिक्चर एट ए ग्लांस
5. " — ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया-काया की कायापलट
6. " — बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण शाला ग्रा० वि० संगरिया
7. " — ग्रामशिक्षा का अग्रदूत-ग्रा० वि० संगरिया
8. " — एन इन्ट्रोडेक्सन टू जी० वी० वी० संगरिया
9. " — व्हाट ? व्हाई ? हाऊ ? जी० वी० संगरिया
10. " — अक्षर प्रचार एवं आयुर्वेद उद्धार की सरल योजना
11. " — विद्यालय का स्थाई कोष
12 " — युवकों के आदर्श-नेताजी सुभाष
13. " — युग पुरुष गांधी
14. " — सिख गुरू और उनकी वाणियाँ
15. " — सर्वव्याप पंचायत और ग्राम स्वराज्य
16 " — भारत की राष्ट्रभाषा
17. ठाकुर देसराज — सिख इतिहास
18 " — गुरु मत दर्शन
19 " — मेरी पोथी द्वितीय भाग
20. " — ग्रामोत्थान पाठशालाओं का विधान
21. " — जाट इतिहास
22. " — चौधरी हरिश्चन्द्र नैण बीकानेरीय जाग्रति के अग्रदूत
23. " — मरुभूमि का उपवन
24. ठाकुर देसराज एव बनारसीदास चतुर्वेदी — स्वामी केशवानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ
25. ठाकुर देसराज — धार्मिक कहानियाँ
26. रामनारायण मिश्र बी० ए० — मेरी पोथी प्रथम भाग

27. " — मेरी पोथी-छोटा सस्करण
28. बलभद्र ठाकुर — मानव
29. " — राधा राजन
30. रामेश्वर करुण — ईसप-नीति-निकुंज—भाग-1
31. " — " भाग-2
32. " — " भाग-3
33. " — " भाग-4
34 स्वरूप सिंह आचार्य — महात्मा शेख शादी
35 " — महात्मा मैजिनी
36. " — महात्मा मार्टिन लूथर किंग
37. " — महर्षि सुकरात
38. " — व्याकरण विनोद
39. " — धर्म ज्ञान-भाग-1
40. " — " भाग-2
41. " — " भाग-3
42. " — " भाग-4
43. प्रिंसिपल छबीलदास — राजनीति ज्ञान कोष
44. " — राजनीति कथा माला
45. " — विज्ञान के चमत्कार
46. " — क्यो ? क्या ? कैसे ?
47. चौधरी लवणसिंह बी० ए० — हिन्दी प्रकाश
48. भीमराज भंबोरू — सयुक्ताक्षर बोधिनी
49. काशीनाथ नारायण त्रिवेदी — भले रहो, चंगे रहो
50. डॉक्टर हरदयाल एम० ए० — राष्ट्र की सम्पत्ति
51. लेखराम शर्मा आयुर्वेदाचार्य — सर्वांग व्याधि विज्ञान
52 " — सरल चिकित्सा
53. " — नेहरू (न्हावा) योग प्रदीप
54. काशीराम — तम्बाकू के काले कारनामे
55. देवकराम सुमन — बाल क्रान्ति गीत
56 रामावतार विद्याभास्कर — पद्य माला
57. मियाँ नजीर — इस हाथ करो, उस हाथ मिले
58. साहित्य सदन अबोहर प्रेस — हिन्दी उर्दू शिक्षक
59. धानण राम आहूजा — हिन्दी गुरमुखी प्रवेशिका
60. " — हिन्दी अंग्रेजी शिक्षक

61. जगदीश चन्द्र चतुर्वेदी — कला के पद्म भाग-1
62. " — " भाग-2
63 श्री रामसिंह भारतीय — श्री जम्भेश्वर महाराज का चरि॰ और वाणी
64. डॉ॰ के॰ डी॰ बावेजा — कृषि महाविद्यालय ग्रा॰ वि॰ संगरिया कृषि कालेज की स्थापना
65 ग्रामोत्थान प्रेस — कर्मयोगी स्वामी केशवानन्द जी क अभिनन्दन ग्रंथ भेंट के बाद दिय गया भाषण
66 मलखानसिंह बी॰ ए॰ — जाट स्कूल संगरिया का पच्चीस वर्षीय कार्य
67. कुलभूषण — जाट विद्यालय संगरिया
68 " — जाट विद्यालय संगरिया (बीकानेर) का संक्षिप्त इतिहास, विकास एवं भावी योजना
69 " — साहित्य सदन परिचय
70 सादीराम जोशी — इन्सानियत के पहरेदार
71. प॰ विद्यानिधि व्याकरणाचार्य — भवीयम पुस्तकम्
72 मनफूलसिंह बी॰ ए॰ — समाज शिक्षा दर्पण
73 भगवान दास माहोर — यश की धरोहर
74 रामानारायण मिस्र — अस्माकम् देशम्
75. " — अस्माकम् महान् देशम्
76 मलखान सिंह बी॰ ए॰ — रजत जयंती 1942
77. दीपक प्रेस, अबोहर — जाट विद्यालय संगरिया की बहुमुखी प्रवृतियाँ
78. " — नशे से बचो
79 " — ग्राम्य शिक्षा प्रसार
80. वृजनारायण कौशिक — शिक्षा सन्त स्वामी केशवानन्द
81. दीपक प्रेस, अबोहर — एक भारतीय साधु हृदय
82. " — तीस वर्ष का सिंहावलोकन
83. " — ग्राम सुधार नाटक
84. " — राजस्थान मे त्रैवार्षिक शिक्षा
85. " — ग्रामोत्थान पाठशालाओं का विधान

स्वामी जी से सम्बन्ध प्रकाशन — समाज सुधार के साधन

86 ,, — समाज शिक्षा का अग्रदूत प्रा० वि० सगरिया

87 ,, — स्वर्ण जयन्ती महोत्सव क्यों और कैसे ?

88 ग्रामोत्थान प्रेस — स्वर्ण जयन्ती और हमारा कर्तव्य

89 ,, — सप्ताह में शिक्षा

90 साहित्य सदन अबोहर — शिक्षा, श्रम और सेवा का एक अध्याय स्वामी केशवानन्द

91 सरदार शेरसिंह सूर — स्वामी केशवानन्द प्रशस्ति गीत

92 रामशरण खुशदिल — ऐसे थे स्वामी केशवानन्द

93 गोविन्दराम शर्मा — स्मारिका (स्वामी केशवानन्द)

94 स्वामी केशवानन्द ट्रस्ट — ग्रामोत्थान पत्रिका (मासिक)

95 रामसिंह भारतीय सम्पादक — 'दीपक' (मासिक अखबार)

96 मास्टर हेतराम सम्पादक

97 स्नातकोत्तर महाविद्यालय — केशव (अंक 1981, 82, 83, 84

स्वामी जी का प्रिय भजन

जो व्यथायें प्रेरणा दें, उन व्यथाओं को दुलारो।
जूझकर कठिनाइयों से, रंग जीवन का निखारो॥
दीप बुझ-बुझकर जला है, वृक्ष कट-कट कर फला है।
मृत्यु से जीवन मिले तो, आरती उसकी उतारो॥
साहसी को बल दिया है, मृत्यु ने मारा नहीं है।
राह ही हारी सदा, राही कभी हारा नहीं है।
पाँव में चुभते हुए, कांटे कभी पनपे नहीं हैं॥
डूबती देखी भंवर ही, डूबती धारा नहीं है॥
जीत ही उनको मिली, जो हार से जमकर लड़े हैं।
हार के भय से डिगे, वे धराशाही पड़े हैं॥
हर विजय, संकल्प के पद चूमती देखी गई हैं।
वे किनारे ही बचे जो, सिन्धु को थामे हुए हैं॥

स्वामी जी का प्रिय भजन

जो व्यथायें प्रेरणा दें, उन व्यथाओं को दुलारो।
जूझकर कठिनाइयों से, रंग जीवन का निखारो॥
दीप बुझ-बुझकर जला है, वृक्ष कट-कट कर फला है।
मृत्यु से जीवन मिले तो, आरती उसकी उतारो॥
साहसी को बल दिया है, मृत्यु ने मारा नहीं है।
राह ही हारी सदा, राही कभी हारा नहीं है।
पांव में चुभते हुए, कांटे कभी पनपे नहीं हैं॥
डूबती देखी भंवर ही, डूबती धारा नहीं है॥
जीत ही उनको मिली, जो हार से जमकर लड़े हैं।
हार के भय से डिगे, वे धराशाही पड़े हैं॥
हर विजय, संकल्प के पद चूमती देखी गई हैं।
वे किनारे ही बचे जो, सिन्धु को थामे हुए हैं॥